रेल किराए की गणना का तरीका हमारा व्यापारिक रहस्य, नहीं कर सकते आम
- 12

ट्रंप की नई धमकी से भारतीय निर्यातक चिंतित
- 12

रूस का यूक्रेन के विद्युत ग्रिड पर बड़ा हमला, चार लोगों की मौत
- 13

न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे ही मैच में सीरीज को जीतना चाहेगी भारतीय टीम
- 14

आज का मौसम

17.0° अधिकतम तापमान

6.0° न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 07.06

सूर्यास्त 05.37

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

बरेली

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

माघ कृष्ण पक्ष एकादशी 05:53 उपरांत द्वादशी विक्रम संवत 2082

बुधवार, 14 जनवरी 2026, वर्ष 7, अंक 51, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

ब्रीफ न्यूज

महादेव एप : रवि उप्पल की दुबई स्थित संपत्ति समेत नई संपत्तियां कुर्क

नई दिल्ली। ईडी ने कहा कि उसने अवैध महादेव ऑनलाइन सट्टेबाजी एप मामले में फरार प्रमुख प्रवर्तकों में से एक रवि उप्पल सहित विभिन्न आरोपियों की लगभग 21 करोड़ की नई संपत्ति कुर्क की है। इस मामले में छत्तीसगढ़ के कई बड़े राजनीतिक नेताओं और नौकरशाहों की कथित संलिप्तता बताई जाती है। पीएमएलए के तहत 10 जनवरी को एक अंतरिम आदेश जारी किया गया। पिछले हफ्ते, ईडी ने इसी तरह का एक आदेश जारी कर महादेव ऑनलाइन बुक नामक एप के एक अन्य मुख्य प्रवर्तक सौरभ चंद्राकर तथा अन्य लोगों की संपत्तियों को कुर्क करने का आदेश दिया था।

देश में डिजिटल भुगतान के विस्तार की बहुत अधिक गुंजाइश : शंकर

नई दिल्ली। आरबीआई के डिप्टी गवर्नर टी रबी शंकर ने मंगलवार को कहा कि देश में डिजिटल भुगतान के विस्तार की बहुत अधिक गुंजाइश हैं। यूपीआई में अपने मौजूदा 40 करोड़ के आधार से दोगुने से अधिक होकर 100 करोड़ उपयोगकर्ताओं तक पहुंचने की क्षमता है। दुनिया के कुल खुदरा भुगतान लेनदेन का लगभग 50 प्रतिशत भारत में होता है, लेकिन इसके बावजूद प्रति व्यक्ति डिजिटल लेनदेन की संख्या के मामले में भारत को अभी कई उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की बराबरी करनी है।

लोकसेवकों पर मुकदमा... भ्रष्टाचार रोधी कानून पर बंटे जज, सुनाया खंडित आदेश

भ्रष्टाचार के मामलों की जांच शुरू करने से पहले अनुमति लेने की बाध्यता पर हुई सुप्रीम सुनवाई

नई दिल्ली, एजेंसी

सुप्रीम कोर्ट ने लोकसेवकों के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामलों की जांच शुरू करने से पहले अनुमति लेने से संबंधित, भ्रष्टाचार रोधी कानून की 2018 की धारा की संवैधानिक वैधता पर मंगलवार को खंडित निर्णय सुनाया। न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना ने कहा कि भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 17ए असंवैधानिक है और इसे रद्द किया जाना चाहिए जबकि न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन ने धारा को संवैधानिक मानते हुए ईमानदार अधिकारियों की सुरक्षा की जरूरत पर जोर दिया।

साल 2018 में जोड़ी गई भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की धारा 17ए के तहत सक्षम प्राधिकारी की अनुमति के बिना किसी लोकसेवक पर मुकदमा नहीं चलाया जा सकता। कोर्ट ने गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) 'सेंटर फॉर पब्लिक इंटरेस्ट लिटिगेशन' की जनहित याचिका (पीआईएल) पर यह निर्णय सुनाया है, जिसमें धारा 17ए की वैधता को चुनौती दी गई थी। न्यायमूर्ति नागरत्ना ने कहा कि पूर्वानुमति की आवश्यकता भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के विरुद्ध है इससे जांच में रुकावट आती है और भ्रष्ट अधिकारियों को बचने का मौका मिल जाता है। न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना ने कहा, धारा 17ए असंवैधानिक है और इसे रद्द किया जाना चाहिए। जांच शुरू करने से पहले किसी तरह की पूर्व अनुमति लेने की जरूरत नहीं है। पूर्व मंजूरी की शर्त अधिनियम के उद्देश्य के खिलाफ है। इससे जांच में रुकावट आ सकती है और ईमानदार अधिकारियों के बजाय भ्रष्ट लोकसेवकों को संरक्षण मिलता है। वहीं, न्यायमूर्ति विश्वनाथन ने कहा, धारा 17ए संवैधानिक रूप से वैध है, बशर्ते मंजूरी देने का फैसला लोकपाल या राज्य का लोकायुक्त करे।

- जस्टिस नागरत्ना बोलीं- धारा 17ए असंवैधानिक इसलिए इसे रद्द किया जाना चाहिए
- जस्टिस विश्वनाथन ने धारा को संवैधानिक मानते हुए ईमानदार अधिकारियों की सुरक्षा पर दिया जोर

प्रधान न्यायाधीश के समक्ष रखा जाएगा मामला

अब यह मामला भारत के प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत के समक्ष रखा जाएगा, ताकि एक बड़ी पीठ का गठन कर इस पर अंतिम निर्णय लिया जा सके। पीठ ने कहा, हमारे अलग-अलग मतों को देखते हुए रजिस्ट्री को निर्देश दिया जाता है कि इस मामले को प्रधान न्यायाधीश के समक्ष रखा जाए, ताकि उपयुक्त पीठ का गठन करके इससे जुड़े मुद्दों पर नए सिरे से विचार किया जा सके। एनजीओ की ओर से पेश हुए अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने दलील दी कि यह प्रावधान भ्रष्टाचार विरोधी कानून को कमजोर करता है, क्योंकि सरकार से अक्सर मंजूरी नहीं मिलती, जबकि वही इस कानून के तहत सक्षम प्राधिकारी है।

कुत्ते के काटने पर राज्यों पर भारी मुआवजा होगा तय

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने पिछले पांच वर्षों में आवारा पशुओं से संबंधित नियमों के क्रियान्वयन के लिए कोई कदम नहीं उठाए जाने पर चिंता व्यक्त की और मंगलवार को कहा कि वह कुत्ते के काटने की घटनाओं के लिए राज्यों को भारी मुआवजा देने का आदेश देगा। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ, न्यायमूर्ति संदीप मेहता और न्यायमूर्ति एनवी अंजारिया की पीठ ने कहा कि कुत्ते के काटने की घटनाओं के लिए कुत्ता प्रेमियों और उन्हें खाना खिलाने वालों को भी जिम्मेदार और जवाबदेह ठहराया जाएगा। न्यायमूर्ति नाथ ने कहा, कुत्तों के काटने से बच्चों या बुजुर्गों की मृत्यु या चोट के हर मामले के लिए हम राज्य सरकारों से भारी मुआवजा देने की मांग करेंगे क्योंकि उन्होंने पिछले पांच वर्षों में नियमों के कार्यान्वयन के संबंध में कुछ नहीं किया है। साथ ही, इन आवारा कुत्तों को खाना खिलाने वालों की भी जिम्मेदारी और जवाबदेही तय की जाएगी। अगर आपको इन जानवरों से इतना प्यार है तो आप उन्हें अपने घर क्यों नहीं ले जाते? ये कुत्ते इधर-उधर क्यों घूमते हैं, लोगों को काटते हैं और डराते हैं? न्यायमूर्ति मेहता ने न्यायमूर्ति नाथ के विचारों से सहमति जताते हुए कहा, जब कुत्ते नौ साल के बच्चे पर हमला करते हैं तो किसे जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए? वह संगठन जो उन्हें खाना खिला रहा है, उसे? आप चाहते हैं कि हम इस समस्या से आंखें मूंद लें। उच्चतम न्यालय सात नवंबर, 2025 के अपने उस आदेश में संशोधन के अनुरोध वाली कई याचिकाओं पर सुनवाई कर रहा था, जिसमें अधिकारियों को सार्वजनिक स्थानों और सड़कों से इन आवारा जानवरों को हटाने का निर्देश दिया गया था।

ईरान से व्यापार करने वालों पर ट्रंप ने थोपा 25% टैरिफ

न्यूयॉर्क/वाशिंगटन, एजेंसी

- भारत पर पड़ सकता है असर, चाबहार बंदरगाह पर है हिस्सेदारी

राष्ट्रपति ट्रंप ने घोषणा की है कि ईरान से व्यापार करने वाले किसी भी देश को अमेरिका के साथ अपने व्यापार पर 25 प्रतिशत शुल्क का भुगतान करना होगा। इस कदम का भारत, चीन और यूएई जैसे ईरान के प्रमुख व्यापारिक भागीदारों पर असर पड़ सकता है। चाबहार पोर्ट पर असर देखने को मिल सकता है। ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर पोस्ट में यह घोषणा की।

ट्रंप ने कहा है कि ईरान अब सीमाएं लांघ रहा है और इसी वजह से उन्हें और उनकी राष्ट्रीय सुरक्षा टीम को कठोर विकल्पों पर विचार करना पड़ रहा है। ट्रंप की इस घोषणा का असर भारत पर पड़ सकता है जो हाल के वर्षों में ईरान के पांच सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में से एक रहा है। अमेरिका ने पहले ही भारत पर 50 प्रतिशत शुल्क लगा दिया है, जो दुनिया के किसी भी देश पर लगाए गए सबसे अधिक शुल्क में से एक है। इसमें भारत द्वारा रूसी तेल की खरीद पर 25 प्रतिशत शुल्क भी शामिल है। तेहरान स्थित भारतीय दूतावास के अनुसार, ईरान को भारत के प्रमुख निर्यातों में चावल, चाय, चीनी, दवाइयां, कृत्रिम फाइबर, विद्युत मशीनरी और कृत्रिम आभूषण शामिल हैं जबकि ईरान से भारत के प्रमुख आयातों में सूखे मेवे, अकार्बनिक/कार्बनिक रसायन और कांच के बर्तन शामिल हैं। 2023 में भारत से ईरान को निर्यात कुल 1.19 अरब डॉलर था जबकि भारत में आयात कुल 1.02 अरब डॉलर का हुआ था। तेहरान स्थित भारतीय दूतावास ने कहा, भारत और ईरान के बीच सदियों पुराना संबंध है। समकालीन संबंध इन ऐतिहासिक और सभ्यतागत संबंधों की मजबूती पर आधारित हैं।

ग्रीनलैंड पर कब्जे का बिल पेश 51वें राज्य का दर्जा मिलेगा

वाशिंगटन। ग्रीनलैंड को अमेरिका का 51वां राज्य बनाने के लिए अमरीकी कांग्रेस में एक विधेयक अमेरिकी संसद में पेश किया है। विधेयक के बताए गए लक्ष्यों में ग्रीनलैंड के विलय और उसके बाद उसे राज्य का दर्जा देना शामिल है।

मेंथा फैक्ट्री में मिले 3 सुरक्षाकर्मियों के शव, हड़कंप

- फैक्ट्री मालिक समेत तीन लोगों पर रिपोर्ट दर्ज, केबिन में थे शव
- कोई दम घुटने तो परिजन लगा रहे हत्या करने का आरोप

संवाददाता, उझानी (बदायूं)

अमृत विचार : उझानी में दिल्ली मार्ग स्थित मेंथा फैक्ट्री के केबिन में तीन सुरक्षाकर्मियों के शव मिलने से हड़कंप मच गया। सुरक्षाकर्मी अंगीठी जलाकर सोए थे। ऐसे में स्थानीय लोगों का कहना है कि दम घुटने से उनकी मौत हुई, जबकि सूचना मिलने पर मौके पर पहुंचे परिजनों ने हत्या करने का आरोप लगाया है। मौके पर एसडीएम, सीओ और कई थानों की पुलिस मौजूद है।

शवों का पोस्टमार्टम कराया गया। फैक्ट्री मालिक समेत तीन लोगों पर रिपोर्ट दर्ज की गई है। इसी फैक्ट्री में तकरीबन आठ महीने पहले आग लगने से एक मजदूर की मौत हुई थी। साथ ही, फैक्ट्री का लगभग सौ करोड़ रुपये का नुकसान बताया गया था। अब सुरक्षा कर्मियों की मौत से सवाल खड़े हो रहे हैं।

सुरक्षाकर्मियों के शव मिलने के बाद मौके पर मौजूद भीड़। ● अमृत विचार

मंगलवार सुबह कोतवाली उझानी क्षेत्र के गांव कुड़ा नरसिंहपुर स्थित मेंथा फैक्ट्री के कर्मचारियों ने केबिन में जमीन पर सुरक्षाकर्मी मुजरिया थाना क्षेत्र के गांव बसावनपुर निवासी जोगेंद्र यादव पुत्र रामबहादुर, दातागंज क्षेत्र के गांव मुड़सेना निवासी भानु यादव पुत्र श्रीपाल और सिविल लाइन कोतवाली क्षेत्र के गांव पसेई निवासी विवेक यादव पुत्र रजिस्टर सिंह के शव जमीन पर पड़े देखे। मौके पर चीख पुकार मच गई। सूचना मिलने पर ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई। सुरक्षाकर्मियों के परिजन पहुंच गए और हंगामा करने लगे। उझानी पुलिस फैक्ट्री पहुंची। मृतकों के परिजनों ने उनकी हत्या किए जाने का आरोप लगाया। परिजनों ने कहा कि जब फैक्ट्री बैंक के पास बंधक पड़ी है। तो भीतर क्यों काम कराया जा रहा था। परिजनों ने फैक्ट्री मालिक के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग की। इस पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

ब्लिंकिट ने 10 मिनट में डिलीवरी का दावा हटाया

नई दिल्ली। इटर्नल के स्वामित्व वाली इकाई ब्लिंकिट ने डिलीवरी कर्मियों के कल्याण से जुड़ी बढ़ती चिंताओं के बीच सभी मंच से अपना '10 मिनट में' डिलीवरी का दावा हटा लिया है। स्विगी और जेप्टो जैसे अन्य 'क्विक कॉमर्स' मंच भी इस कदम का अनुसरण कर सकते हैं।

- स्विगी और जेप्टो भी कर सकते हैं अनुसरण हड़ताल और सरकार के दखल के बाद फैसला

यह बदलाव केंद्रीय श्रम मंत्रालय के हस्तक्षेप के बाद देखा जा रहा है, जो इतनी कठिन समय सीमा को पूरा करने की कोशिश करने वाले डिलीवरी कर्मियों के कल्याण को लेकर चिंतित था। श्रम मंत्रालय ने इस संबंध में क्विक कॉमर्स मंचों के साथ चर्चा की, ताकि गिग कर्मियों के लिए बेहतर सुरक्षा और कामकाजी परिस्थितियां सुनिश्चित की जा सकें। दस मिनट में डिलीवरी के वादे के कारण वर्ष 2025 की पूर्व संध्या पर गिग कर्मियों ने देशव्यापी हड़ताल की थी, जिसने कर्मचारियों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और आय की ओर ध्यान आकर्षित किया। जेप्टो, इंस्टामार्ट और बिगबास्केट के लिए 10 मिनट में डिलीवरी की ब्रांडिंग अभी भी गूगल प्ले स्टोर और आईओएस ऐप स्टोर पर दिखाई दे रही है।

एएसपी अनुज चौधरी सहित 20 कर्मियों पर एफआईआर के आदेश

कार्यालय संवाददाता,संभल

अमृत विचार : संभल में जामा मस्जिद के सर्वे के दौरान 24 नवंबर 2024 को हुई हिंसा में गोली लगने से घायल एक युवक के मामले में अदालत ने तत्कालीन सीओ अनुज चौधरी व कोतवाल सहित 15-20 पुलिसकर्मियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने के आदेश दिए हैं।

एसपी केके विश्नोई ने कहा है कि पुलिस मुकदमा दर्ज नहीं करेगी बल्कि कोर्ट में अपील करेगी। चौधरी वर्तमान में फिरोजाबाद में अपर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण हैं। नखासा थाना क्षेत्र के मोहल्ला खग्गू सराय निवासी यामीन ने 6 फरवरी 2025 को सीजेएम की कोर्ट में प्रार्थना पत्र दिया था कि उसका बेटा आलम 24 नवंबर को सुबह 8:45 बजे जामा मस्जिद के नजदीक पहुंचा तो वहां भीड़ जमा थी। पुलिस क्षेत्राधिकारी संभल अनुज चौधरी और इंस्पेक्टर अनुज तोमर व अन्य कर्मियों ने अचानक भीड़ पर गोलियां चलाना शुरू कर दीं। आलम जान बचाने के लिए भागा तो दो गोली पीठ में व एक हाथ में लगी थी। आलम का इलाज करने वाले डॉक्टर के बयान व अन्य तथ्य भी कोर्ट में रखे थे। कोर्ट ने आदेश दिया कि प्रार्थना पत्र अंतर्गत धारा 1734 बीएस से स्वीकार किया जाता है। थाना अध्यक्ष संभल को आदेशित किया कि मामला पंजीकृत कर विवेचना कराई जाए।

संभल हिंसा मामला

- हिंसा के दौरान घायल युवक के पिता के प्रार्थना पत्र पर कोर्ट ने जारी किया आदेश
- एसपी ने कहा पुलिस मुकदमा दर्ज नहीं करेगी बल्कि कोर्ट में करेगी अपील

संभल हिंसा के मामले में न्यायिक जांच पहले ही हो चुकी है। जिन पुलिसकर्मियों के खिलाफ कोर्ट ने आदेश किया है उनकी जांच पूरी हो चुकी है। इसलिए हम इस मामले में मुकदमा दर्ज नहीं करेंगे और इस आदेश के खिलाफ कोर्ट में अपील करेंगे।
-कृष्ण कुमार विश्नोई, पुलिस अधीक्षक संभल

पाकिस्तान के हर दुस्साहस का देंगे जवाब: सेना प्रमुख

नई दिल्ली, एजेंसी

सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने मंगलवार को पाकिस्तान को कड़ा संदेश देते हुए कहा कि ऑपरेशन सिंदूर अब भी जारी है और दुश्मन के किसी भी दुस्साहस से माकूल तरीके से निपटा जाएगा। सेना प्रमुख ने कहा कि चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर हालात स्थिर हैं, लेकिन इस पर लगातार नजर रखने की जरूरत है।

ऑपरेशन सिंदूर के अलग-अलग पहलुओं के बारे में विस्तार से बात करते हुए जनरल द्विवेदी ने कहा कि इससे रणनीतिक सोच को फिर से तैयार करने में मदद मिली, क्योंकि भारतीय सेना ने आतंकी ढांचे को खत्म करने और इस्लामाबाद की 'लंबे समय से चली आ रही परमाणु बयानबाजी' को धता बताने के लिए अंदर तक हमला किया।

- कहा- ऑपरेशन सिंदूर अभी जारी है, एलओसी पर हालात स्थिर

उन्होंने कहा, जैसा कि आप जानते होंगे, ऑपरेशन सिंदूर अब भी जारी है, और भविष्य में किसी भी दुस्साहस का दृढ़ता से जवाब दिया जाएगा। जनरल द्विवेदी ने कहा कि तीनों सेनाओं के तालमेल को दिखाने वाला यह अभियान सीमापार आतंकवाद के लिए भारत का सोचा-समझा और मजबूत जवाब था, जो तैयारी, सटीकता और रणनीतिक स्पष्टता दिखाता है। उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय सेना ने अपने सैनिकों को इकट्ठा कर लिया था और वह जमीनी हमलों के लिए तैयार थी। उत्तरी मोर्चे लगातार नजर रखने की जरूरत है।

समीक्षा

मुख्यमंत्री ने कहा- इंटेंट, टेक्नोलॉजी और अकाउंटेबिलिटी के समन्वय से मिले ठोस नतीजे

प्रगति नए भारत की कार्यसंस्कृति का सशक्त उदाहरण : योगी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- बोले-मोदी के प्रगति मॉडल से यूपी बना देश का इंफ्रास्ट्रक्चर ग्रोथ इंजन

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि प्रो-एक्टिव गवर्नेंस एंड टाइमली इम्प्लीमेंटेशन (प्रगति) केवल बड़ी इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं की समीक्षा का मंच नहीं, बल्कि नए भारत की नई कार्य संस्कृति का सशक्त उदाहरण है। उन्होंने कहा कि यह मॉडल उस प्रशासनिक सोच को दर्शाता है, जिसकी नींव प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रखी। जिसे वर्ष 2014 के बाद राष्ट्रीय स्तर पर मजबूती मिली और भाजपा सरकार आने के बाद देश में यूपी इंफ्रास्ट्रक्चर ग्रोथ का इंजन बना।

योगी ने मंगलवार को गोरखपुर रवाना होने से पहले पत्रकारों से खास बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि 'प्रगति' ने यह सिद्ध किया है कि जब इंटेंट, टेक्नोलॉजी और अकाउंटेबिलिटी एक साथ आती हैं, तो आउटकम स्वतः सुनिश्चित हो जाते हैं। डिजिटल गवर्नेंस और कोऑपरेटिव फेडरलिज्म को मजबूती देते हुए प्रगति एक ऐसा प्लेटफॉर्म बना है, जहां अंतर-मंत्रालयीय और अंतर-विभागीय समन्वय से जटिल समस्याओं का समयबद्ध समाधान संभव हुआ है। प्रगति मॉडल की अवधारणा वर्ष 2003 में गुजरात में 'स्वागत' (स्टेट वाइड अटेंशन ऑन ग्रीवांसेज बाई एप्लिकेशन ऑफ टेक्नोलॉजी) के रूप में शुरू हुई थी। उन्होंने कहा कि प्रगति केवल एक रिव्यू मैकेनिज्म नहीं, बल्कि गवर्नेंस रिफॉर्म है। राष्ट्रीय स्तर पर प्रगति के प्रभाव का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने बताया कि इसके माध्यम से 86 लाख करोड़ रुपये से अधिक की परियोजनाओं को गति मिली है। प्रधानमंत्री द्वारा 377 प्रमुख परियोजनाओं की प्रत्यक्ष समीक्षा की जाती है, जबकि 3162 में से 2958 मुद्दों का समाधान हो चुका है, जो शासन की विश्वसनीयता को दर्शाता है। योगी ने कहा कि प्रगति के माध्यम से इंटर-एजेंसी बाधाएं समाप्त हुई हैं। राजस्व, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, वन, नगर विकास और पंचायती राज जैसे विभाग एक ही मंच पर समाधान कर रहे हैं। इससे उत्तर प्रदेश 'बॉटलनेक स्टेट' से 'ब्रेकथ्रू स्टेट' बन चुका है।

विपक्ष पर सीधा वार

- **योगी आदित्यनाथ का तंज :** विकास पर बोलने से पहले विपक्ष आंकड़े देखे
- **'जुमला' नैरेटिव खारिज :** घोषणाएं नहीं, पूरा हुआ काम बोलेगा
- **प्रोजेक्ट बनाम प्रचार :** 330 में 128 परियोजनाएं पूरी, जवाब खुद मौजूद
- **देरी की राजनीति पर चोट :** प्रगति ने फाइलों को मैदान में उतारा
- **अनुमतियों की रफ्तार :** इंटर-एजेंसी बाधाएं खत्म, बहाने बंद
- **राजनीतिक संदेश :** जो कर दिखाया, वही भरोसे का आधार
- **असर :** विपक्ष की सरकार-विफलता की लाइन कमजोर

यूपी में गेम-चेंजर सिद्ध हुआ प्रगति मॉडल

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रगति मॉडल राज्य के लिए गेम-चेंजर सिद्ध हुआ है। एक्सप्रेस-वे नेटवर्क, देश का सबसे बड़ा रेलवे नेटवर्क, सर्वाधिक शहरों में मेट्रो, एयर कनेक्टिविटी, देश की पहली रैपिड रेल, अंतर्देशीय जलमार्ग और रोपवे जैसे प्रोजेक्ट समयबद्ध ढंग से आगे बढ़े हैं। वर्तमान में यूपी के पास 10.48 लाख करोड़ रुपये की 330 परियोजनाओं के साथ देश का सबसे बड़ा इंफ्रास्ट्रक्चर पोर्टफोलियो है। इनमें से 2.37 लाख करोड़ रुपये की 128 परियोजनाएं (39 प्रतिशत) पूरी हो चुकी हैं, जबकि 8.11 लाख करोड़ की 202 परियोजनाएं निर्धारित समय-सीमा के भीतर प्रगति पर हैं।

अमृत विचार

बरेली, बुधवार, 14 जनवरी 2026

न्यूज ब्रीफ

राजीव बने बजरंग दल के जिला सहसंयोजक

खुदागंज, अमृत विचार : बजरंग दल के जिला विद्यार्थी प्रमुख राजीव कश्यप को जिला का सहसंयोजक नियुक्त किया गया है संगठन की दो दिवसीय कार्य योजना मैं संगठन के प्रति लगन व निष्ठा को देखते हुए यह निर्णय लिया गया जिला सहसंयोजक बनाए जाने पर लोगों ने हर्ष व्यक्त किया है।

खेत में जबरन बांधा पोस्ता, मारपीट

खुटार, अमृत विचार : क्षेत्र के गांव गुरधिया निवासी मनप्रीत ने पुलिस को तहरीर दी। बताया कि उसके 8 वर्षीय पुत्र मंजीत के नाम गांव के किनारे 23 डिसमिल खेत है। खेत के किनारे रहने वाले एक व्यक्ति ने अपने दो पुत्रों के साथ मिलकर उसके खेत में जबरन कच्चा पोस्ता बांध दिया। जब उसने शिकायत की तो सभी मिलकर गाली गलौज करने लगे। मना करने पर मारपीट पर आमादा हो गए। आरोपी अपने घर की महिलाओं को आगे कर विवाद करने लगे। थाना प्रभारी श्यामवीर सिंह ने बताया कि जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

खाना बनाते समय कूकर फटा, युवती घायल

खुटार, अमृत विचार : नगर के मोहल्ला गांधीनगर निवासी बन्ने की पुत्री गुलफिजा सोमवार शाम करीब सात बजे कूकर में खाना बना रही थी। तभी अचानक कूकर फट गया और वह उसकी चपेट में आ गई। इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई। परिजन घायल गुलफिजा को लखनऊ के अस्पताल लेकर चले गए है। जहां उसका इलाज चल रहा है।

बछड़ा का कराया इलाज, गोशाला भेजा

खुटार, अमृत विचार : खुटार-पूरनपुर रोड पर सोमवार रात को अज्ञात वाहन की टक्कर से सड़क पार कर रहा बछड़ा घायल हो गया। इलाज कराने के बाद उसे सिहुरा गोशाला पहुंचा दिया गया है। गांव मोहनपुर निवासी पशु मित्र अभिषेक मिश्रा ने बताया कि सड़क हादसे में बछड़ा घायल हो गया था। लोगों ने इसकी सूचना नगर पंचायत प्रशासन को देने के बाद वाहन से बछड़े को सिहुरा गोशाला भिजवा दिया। उधर, सूचना पर पशु मित्र अभिषेक मिश्रा गोशाला पहुंचे।

विसंगतिपूर्ण समायोजन प्रक्रिया निरस्त करने की मांग

डीएम और बीएसए से शिक्षक नेताओं ने की वार्ता, मनमाने तरीके से शिक्षकों का समायोजन करने का लगाया आरोप

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष ऋषिकान्त पांडेय ने आज जिलाधिकारी से मिलकर जनपद में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा किये गए सर प्लस शिक्षकों का एकल विद्यालय में समायोजन पर व्यापक विसंगति और शासनादेश व कोर्ट से पारित निर्णय के विपरीत की गयी समायोजन कार्यवाही को निरस्त करने की मांग की। जिलाधिकारी से वार्ता के बाद जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी से भी मिलकर समायोजन में की गयी विसंगति पर बिंदुवार वार्ता की, वार्ता में दोनों अधिकारियों ने आश्वस्त किया कि जिन आदेश पर विसंगति हुयी है उस पर संशोधन किया जाएगा, कोर्ट के आदेश और शासन से निर्गत आदेश के क्रम में हीं समायोजन की कार्यवाही की जायेगी

जिलाध्यक्ष ऋषिकान्त पाण्डेय ने डीएम को बताया कि जिन विद्यालयों में एकल शिक्षक के रूप में प्रधानाध्यापक नियुक्त थे, उन्हें 150 से कम छात्र नामांकन के आधार पर दूसरे विद्यालय में समायोजन कर दिया गया। इससे वह विद्यालय भी बंद हो गया, जबकि शासन द्वारा स्पष्ट किया गया था कि जिन विद्यालय में 2 से अधिक शिक्षक हो तभी समायोजन किया जाये। वहीं हाई कोर्ट द्वारा भी एक आदेश के तहत 150 से कम छात्र नामांकन वाले प्रधानाध्यापक को दूसरे विद्यालय में समायोजित करने पर रोक लगायी गयी थी, जोकि कोर्ट ऑर्डर अभी भी प्रभावी है। परन्तु बीएसए ने ऐसे प्रधानाध्यापक को दूसरे विद्यालय में समायोजित कर कोर्ट की अवमानना की गयी है और शासनादेश का उल्लंघन भी हुआ है। इसके साथ ही कर्मचारी सेवा नियमावली में स्पष्ट उल्लेख है कि जिन कार्मिकों की सेवा अवधि 6 माह तक शेष हो उन्हें स्थानांतरण आदि कार्यवाही से पृथक रखा जायेगा, परन्तु बीएसए द्वारा ऐसे कई शिक्षकों को समायोजन कार्यवाही में सम्मिलित कर लिया गया। जिनकी सेवानिवृत्ति 31 मार्च 2026 कों होनी है इस बार समायोजन कार्यवाही में दिव्यांग, महिला और रोगी शिक्षकों कों नियमानुसार काउंसलिंग से वंचित रखा गया जबकि नियमानुसार सर प्लस शिक्षकों की सूची और जनपद में बंद व एकल विद्यालयों की सूची सार्वजनिक करके महिला व दिव्यांग शिक्षकों से काउंसलिंग कराके विद्यालय चुनने का अवसर देना चाहिए था परन्तु ऐसा नहीं किया गया इससे महिला शिक्षकों और दिव्यांग शिक्षकों कों 60 से 80 किमी दूर भेज दिया गया, वही गंभीर रोग से पीड़ित जिनकी दोनों किडनी खराब होने से ट्रांसप्लांट किया गया है उस शिक्षक कों भी उसकी शारीरिक स्थिति नजर अंदाज करके 65 किमी दूर भेज दिया गया। इसलिए इस समायोजन कार्यवाही में व्यापक विसंगति किये जाने के कारण इसका निरस्त किया जाना ही एकमात्र विकल्प है।

डीएम से भेंटवार्ता करते शिक्षक संघ के पदाधिकारी। ● अमृत विचार

विसंगतियों को निरस्त करने की मांग

विसंगति पूर्ण समायोजन कार्यवाही को निरस्त करके आवश्यकता अनुसार शासन व कोर्ट के आदेश अंतर्गत सर प्लस शिक्षकों व एकल व बंद विद्यालयों की सूची सार्वजनिक करते हुए महिला व दिव्यांग शिक्षकों की विद्यालय चयन करने को काउंसलिंग कराई जाए और 150 से कम वाले और 2 शिक्षक से कम वाले प्रधानाध्यापक को समायोजन से पृथक रखा जाये। जिलाधिकारी से मिलने वालों में रत्नाकर दीक्षित, अरविन्द वर्मा, नवनीत तिवारी, राजेश कुमार और वेद वर्मा आदि थे।

अनियमितता को लेकर डीएम को सौंपा ज्ञापन

शाहजहांपुर, अमृत विचार : यूनाइटेड टीचर्स एसोसिएशन (यूटा) के जिलाध्यक्ष विनीत कुमार गंगवार और जिला महामंत्री हरिशंकर के नेतृत्व दर्जनों शिक्षक कलेक्ट्रेट पहुंचे और जिलाधिकारी को ज्ञापन देते हुए शिक्षक समायोजन में हुई अनियमितताओं के सम्बन्ध में वार्ता करते हुए बिंदुवार अवगत कराया। शिष्टमंडल ने डीएम को बताया कि अंत: जनपदीय स्थानांतरण/समायोजन शासनादेश का पालन नहीं किया गया है। जनपद के बहुत से विद्यालयों में 150 से कम छात्र संख्या होने के बाद भी प्रधानाध्यापकों का समायोजन जानबूझकर नहीं किया गया है। दिव्यांग, गंभीर रोगी, महिला और वरिष्ठ शिक्षकों को दूरस्थ ब्लॉकों में 40 से 50 किलोमीटर दूर स्थानांतरित कर दिया गया है। जिलाधिकारी ने समायोजन में आ रहीं शिक्षक समस्याओं के निस्तारण का आश्वासन दिया। ज्ञापन देने वालों में मनोज शर्मा,मसरूफ अली, पृथ्वी राज, अवनीश कुमार सिंह, शिव सिंह, राघवेंद्र कुशवाहा, मंत्री,दीपक पाल, विधु शेखर, नितिन वर्मा, राजवीर गौतम, सोन पाल, अखिलेश कुमार, वारिस अली, ओम प्रकाश वर्मा, अमित कुमार रजत, अंचल कनौजिया, संदीप सिंह, तोता राम आदि शिक्षक थे।

लक्ष्मीपुर बांगर में तालाब पर कब्जे का आरोप

खुदागंज, अमृत विचार: नगर के लक्ष्मीपुर बांगर स्थित तालाब पर भूमाफियाओं द्वारा कब्जा किए जाने का आरोप लगाते हुए शिकायत जिला अधिकारी से की गई है। बताया गया है कि पिछले एक माह से तालाब पर रातोंरात मिट्टी डालकर पटान किया जा रहा है, लेकिन अब तक कार्रवाई नहीं हो सकी है।

मामले में नगर पंचायत के एक अधिकारी पर भी कुछ लोगों को लाभ पहुंचाने का भी आरोप लगाया गया है। शिकायत के बाद जिला अधिकारी ने मामले में सख्ती दिखाते हुए कड़ी कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। लोगों ने कहा है कि यदि तालाब में मिट्टी पटान नहीं रोका गया तो पानी का निकास बंद हो जाएगा और बरसात के समय बड़ी समस्या खड़ी हो सकती है। अधिशासी अधिकारी नूरजहां ने बताया कि इस मामले में एसडीएम द्वारा थाना अध्यक्ष को तालाब में मिट्टी पटान रोकने के लिए पत्र जारी कर दिया गया है और किसी भी हाल में मिट्टी नहीं पड़ने दी जाएगी। यदि ऐसा हुआ तो कार्रवाई होगी।

परामर्श केंद्र पर दंपतियों के बीच हुआ समझौता

संवाददाता, शाहजहांपुर

● काउंसलरों की समझाने पर साथ रहने को तैयार हुए दंपती

अमृत विचार: पुलिस लाइन में महिला परामर्श केंद्र पर 21 पत्रावली की सुनवाई की गयी, जिसमें दो दंपतियों का समझौता हुआ और विदा किया गया। थाना खुदागंज क्षेत्र में एक दम्पति जिनकी शादी लगभग 06 वर्ष पूर्व हुई थी । पति-पत्नी के मध्य पारिवारिक बातों को लेकर विवाद था। महिला ने बताया कि वह बच्चों के साथ तीन माह से मायके में रह रही है। उसका पति शराब पीकर मारपीट करता था और खर्चा नहीं देता था। दोनो पक्षों को परिवार परामर्श केंद्र बुलाया गया और दोनों पक्षों की आपस में वार्ता करायी गयी। दोनों पक्ष एक साथ रहने को तैयार हो गए। दोनों पक्षों में समझौता हो गया। थाना कांट क्षेत्र में एक दम्पति जिनकी शादी लगभग 08 वर्ष पूर्व हुई थी। पति -पत्नी के मध्य पारिवारिक बातों को लेकर विवाद था। महिला 01 माह से अपने मायके में रह रही है। दोनों पति-पत्नी में घरेलू बातों को लेकर आपस में विवाद हो गया था और वह नाराज होकर अपने मायके चली गयी थी। दोनों पक्षों को परामर्श केंद्र पर बुलाया गया। दोनों पक्ष एक साथ रहने को तैयार हो गए। इस मौके पर प्रभारी महिला उप निरीक्षक मधु यादव, महिला,मुख्य आरक्षी चन्द्रकान्ता, सिपाही बबीता देवी, पिंकी, साकेत आदि मौजूद रहें।

बाघ-बाघिन और तेंदुआ के डर से किसानों ने खेतों पर जाना छोड़ा

संवाददाता, खुटार

● वन विभाग की टीम ने बढ़ईपुर और पहाड़पुर में कांबिंग की

अमृत विचार: खुटार इलाके में बाघ, बाघिन और तेंदुआ ने अपनी चहलकदमी से दहशत का माहौल कर रखा है। इससे ग्रामीणों में खेतों में काम करने से कतरा रहे है। तो कही हिम्मत जुटाकर जैसे-तैसे काम कर शाम होने से पहले ही घर लौट आते है। ग्रामीणों को अभी भी भय सता रहा है। वन विभाग की टीम कांबिंग कर लोगों को सतर्क रहने की अपील कर रही है।

टीम ने बाघ, बाघिन व तेंदुआ को पकड़ने में या फिर जंगल में खदेड़ने की जरूरत नहीं समझी गई। केवल सूचना पर पगचिन्हों को ट्रेस करना और लोगों से खेत पर समूह बनाकर जाने की बात वनकर्मी कर रहे है। हालांकि, मंगलवार को वन विभाग की टीम ने बरगदिया, बढ़ईपुर, पहाड़पुर आदि गांवों में पहुंच कर कांबिंग की है। उधर, खुटार के गांव बरगदिया निवासी सर्वेश कुमार के घर के पास 11 जनवरी को बाघ पहुंच गया था। बाद में सुरेंद्र शुक्ला के खेत में बाघ देखा गया था। टीम ने दो दिन कांबिंग की। तो किसानों, श्रमिकों ने गन्ना छिलाई का काम शुरू किया था। मंगलवार को फिर वन विभाग की टीम जांच करने पहुंची। लेकिन बाघ की लोकेशन ट्रेस नहीं हुई। ग्रामीणों में खेत जाने पर भयभीत है और बाघ के हमला करने का खतरा बरकरार है। इधर, खुटार के गांव हिमंचलपुर, रसवां कलां, रुजहा कलां, सिल्हुआ, महेशापुर, गेंहुआ, अठकोना, बरगदिया, पहाड़पुर, चांदपुर, चतुरपुर, प्रतापपुर, सरेली आदि गांवो में चहलकदमी देखी जा चुकी है। बावजूद इसके जंगली जानवरों को पकड़ने में या जंगल की तरफ खदेड़ने में कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि जंगली जानवर अब जंगल से निकल कर खेतों व आबादी में आने जाने लगे है। इससे जान का खतरा बना रहता है। ग्रामीणों ने वन अधिकारियों से जंगली जानवरों को पकड़वाने की मांग की है। लोगों ने बताया कि डर के कारण उनकी फसलें बर्बाद हो रही हैं, लेकिन विभाग ध्यान नहीं दे रहा है।

डाकपाल ने लिपिक पर लगाया शोषण का आरोप

संवाददाता, कलान

● डाक देर से मिलने पर कर्मचारी को किया जा रहा परेशान

अमृत विचार: ग्राम लक्ष्मनपुर निवासी उमेश चंद्र द्विवेदी ने सोमवार शाम थाने में प्रार्थना पत्र देकर बताया कि वह उक्त गांव में सहायक शाखा डाकपाल के पद पर कार्यरत था, लेकिन अब उसे वारकला की डाक बांटने और लाने ले जाने के लिए तैनात किया गया है। आरोप है कि उसे डाक विलंब से मिलती है, जिसके कारण वह गांव में डाक बांटकर शाम चार से पांच बजे तक वापस लौट पाता है। इसी बात को लेकर कलान डाकघर के लिपिक उसे बेवजह परेशान करते हैं और कहते हैं कि यदि उनके बताए अनुसार काम नहीं किया तो उसे हरिजन एक्ट में फंसा देंगे।

पीड़ित ने प्रार्थना पत्र में यह भी बताया कि डाकघर बेहटा जंगल का एक कर्मचारी पूरे दिन कलान डाकघर में बना रहता है, जो दलित है और लिपिक का दोस्त बताया जा रहा है। उमेश चंद्र द्विवेदी का आरोप है कि वह डायबिटीज और हृदय रोग से पीड़ित है, इसके बावजूद उस पर लगातार दबाव बनाया जा रहा है। प्रार्थना पत्र में यह भी उल्लेख किया गया है कि कलान डाकघर में आधार अपडेट और नए आधार बनाए जाते हैं तथा मोबाइल नंबर लगाए जाते हैं, जिनमें कुछ कर्मचारी दलाली कर अधिक पैसे ले रहे हैं। इसके अलावा अन्य गांवों के डाक कर्मचारी भी कलान डाकघर में बने रहते हैं।

तीन शिकायतों में से दो का मौके पर किया निस्तारण

जन सुनवाई दिवस में समस्याएं सुनते नगर आयुक्त डॉ. विपिन कुमार मिश्र।

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : नगर आयुक्त डॉ. बिपिन कुमार मिश्र की अध्यक्षता में मंगलवार को नगर निगम कार्यालय में जन सुनवाई की गई। जिसमें नगर क्षेत्र के लोगों ने साफ-सफाई, शुद्ध पेयजल की आपूर्ति, प्रकाश बिन्दु, नाली निर्माण एवं कर विभाग से सम्बन्धित अपनी समस्याएं एवं शिकायतें रखीं। जन-सुनवाई दिवस में 3 शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें मौके पर ही 2 का निस्तारण किया गया। शेष समस्याओं के निस्तारण के लिए त्वरित कार्यवाही किये जाने के लिए सम्बंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। जन सुनवाई में अपर नगर आयुक्त एसके सिंह, अपर नगर आयुक्त अजय कुमार त्रिपाठी, सहायक नगर आयुक्त राजकुमार गुप्ता, नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज कुमार मिश्रा, महाप्रबंधक जल विजय नारायण मौर्य, लेखाधिकारी नरेंद्र प्रताप सिंह व अन्य अधिकारी मौजूद थे।

भूमि विकास बैंक के पूर्व अध्यक्ष के निधन पर शोक

खुटार, अमृत विचार: मोहनपुर निवासी भूमि विकास बैंक के पूर्व अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद त्रिवेदी का लंबी बीमारी के चलते सोमवार देर रात को निधन हो गया। मंगलवार को उनके बेटे पूर्व ब्लाक प्रमुख मनोज त्रिवेदी, अधिवक्ता सुधीर त्रिवेदी, व्यापारी मुकेश त्रिवेदी उनके पार्थिव शरीर को ढाईघाट (फर्रुखाबाद) ले गए। जहां अंत्येष्टि की गई। उनके निधन पर उपेंद्र पाल सिंह, सुधीर द्विवेदी, विजय शंकर अवस्थी, ब्लॉक प्रमुख नमित दीक्षित, देव पटेल, नितिन मिश्रा, आनंद पटेल, प्रवीण मिश्रा, आशीष सिंह उर्फ डब्बू, लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता, बाबूराम पासी, अभय दीक्षित, रामू वाजपेयी, अधीर शुक्ला, अनुपम शुक्ला, डॉ. प्रदीप शुक्ला, राजेंद्र शुक्ला, पिंकू पांडेय आदि रहे।

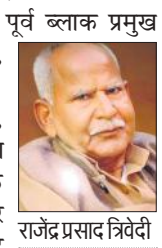

राजेंद्र प्रसाद त्रिवेदी

एसपी ने दो पुलिस कर्मियों को दिया प्रशस्ति पत्र

कर्मचारियों को प्रशिस्त पत्र देते एसपी। ● अमृत विचार

संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: जीआईसी तिराहे पर 17 दिसंबर को ट्रैफिक विभाग के ड्यूटी पर मुख्य आरक्षी योगेंद्र सिंह एवं जयवेंद्र सिंह को सड़क पर एक एंड्राइड मोबाइल फोन मिला था, जिसकी बैट्री 18 प्रतिशत थी। दोनों कर्मियों ने चार्जिंग पर लगाकर मोबाइल को सक्रिय किया गया। मोबाइल स्वामी का फोन आया और सिपाहियों ने उसे परिचय दिया। कर्मचारियों ने उसे जीआईसी तिराहे पर बुलाया और विधिवत पहचान सुनिश्चित की गयी। स्वामी को मोबाइल सुपुर्द कर दिया। एसपी राजेश द्विवेदी ने अपने कार्यालय में दोनों कर्मचारियों को प्रशिस्त पत्र दिया और आचरण की सराहना की गयी। एसपी ने कहा कि पुलिस जनसामान्य की सेवा, सुरक्षा एवं विश्वास के लिए सदैव प्रतिबद्ध है।

10.77 करोड़ की कर चोरी करने वाले पकड़े

● जीएसटी बोगस फर्म बनाकर करते थे कर चोरी, कार, फर्जी दस्तावेज बरामद

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: एसओजी, सर्विलांस सेल टीम व रोजा थाना की संयुक्त टीम जीएसटी की बोगस फर्म बनाकर 10 करोड़ 77 लाख रुपये कर चोरी करने वाले गिरोह के फरार दो वांछित अभियुक्तों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस आरोपियों के कब्जे से फर्जी कागजात, महिन्द्रा कार, 620 रुपये आदि बरामद किया है। पुलिस ने दोनों आरोपियों का चालान कर दिया।

राज्य कर सहायक आयुक्त भावना चंद्रा ने 28 मई 25 को रोजा थाना में रिपोर्ट दर्ज करायी थी कि फर्जी जीएसटी फर्म बनाकर जीएसटी चोरी कर राजस्व क्षति पहुंचाना। पुलिस मामले की विवेचना कर रही है। एसपी ने आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए एसओजी, सर्विलांस टीम और रोजा टीम को लगाया था। पुलिस टीम को मंगलवार की दोपहर सूचना मिली कि बोगस जीएसटी फर्म बनाने वाले गिरोह के कुछ सदस्य महिन्द्रा कार से दिल्ली की ओर जाने वाले है तथा वकील से मिलने वाले है। पुलिस ने घेराबंदी करके कार को कार को रोक लिया और कार में दो लोग सवार थे। पुलिस ने कार में सवार आरोपी संजीव गुप्ता निवासी नगर टिपरा थाना मोदीनगर जिला गाजियाबाद और वरुण शर्मा निवासी पुरब थाना गौरीगंज जिला अमेठी है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से बोगस जीएसटी फर्म की फर्जी कागजात, एक कार, एक फोन, 620 रुपये बरामद किए है। पुलिस ने आरोपियों का चालान कर दिया। टीम में प्रभारी निरीक्षक राजीव कुमार, गैंगस्टर सेल प्रभारी वीरेंद्र सिंह, एसओजी प्रभारी धर्मेंद्र कुमार, उप निरीक्षक मनोज कुमार, जगत सिंह, राकेश कुमार टीम में शामिल थे।

आरोपी गौरव फर्जी जीएसटी फर्म बनाता था

पुछताछ के दौरान अभियुक्त संजीव गुप्ता ने बताया कि उसकी मुलाकात वर्ष 2022 में गौरव यादव से हुई थी। आरोपी ने गौरव यादव के कहने पर वरुण शर्मा, प्रिंस शर्मा, आकाश के यस बैग प्रीतमपुर दिल्ली में करेंट खाता खोले थे, जो ओवर लिमिट के कारण बंद हो गए थे। गौरव यादव के यहां सिद्धार्थ पाण्डेय से मुलाकात हुई थी। सिद्धार्थ पाण्डेय, गौरव यादव अपने साथियों से मिलकर फर्जी बोगस जीएसटी फर्म बनाते है। दोनों ने आरोपी संजीव गुप्ता को बताया था कि उसके पास फर्जी जीएसटी फर्म है। संजीव से कहा कि बैंक में ग्राहक आते है और फर्जी फर्म लेकर जिस ग्राहक को आवश्यक्ता हो उसे दे सकते है। आरोपी संजीव ने दोनों से 90 फर्जी बोगस फर्म ली थी, जिसके बदले 23-23 हजार रुपये नगद देता था। वह फर्जी फर्म को ग्राहकों को बेच देता था। अभियुक्त वरुण शर्मा ने बताया कि वह गौरव यादव के यहां काम करता था। गौरव यादव करेंट खाता खुलवाता था और फर्जी जीएसटी फर्म बनाता है।

आधार की कॉपी मांगने से परेशान उपभोक्ता

अन्नपूर्ण केंद्र पर मौजूद उपभोक्ता। ● अमृत विचार

संवाददाता, जैतीपुर

● सचिव के निर्देश पर शुरू हुआ खेल, लोगों में रोष

अमृत विचार: कस्बे के अन्नपूर्णा केंद्र पर मंगलवार को अचानक राशन कार्ड धारकों से आधार कार्ड की फोटो कॉपी मांगी जानें लगी। पंचायत सचिव के मौखिक आदेश पर कोटेदार द्वारा यह प्रक्रिया अपनाई जा रही है, जिससे उपभोक्ताओं को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। कुछ कार्ड धारक इस आदेश का विरोध भी कर रहे हैं।

पिछले तीन-चार दिनों से राशन वितरण चल रहा है। अचानक सचिव द्वारा मौखिक आदेश जारी किया गया, जिसके बाद आधार कॉपी जमा करना अनिवार्य कर दिया गया। इस अचानक बदलाव से कार्ड धारकों को काफी असुविधा हुई और कुछ लोगों ने आधार कॉपी देने का विरोध भी किया। लोगों ने बताया सचिव ने यहां तक कह दिया जो आधार कार्ड की कॉपी न दे उसे राशन मत दो। इस संबंध में जब पंचायत सचिव शुभम कुमार से बात की गई,तो उन्होंने कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दिया। पहले उन्होंने समूह बनने का हवाला दिया,फिर कहा कि यह जिलाधिकारी का आदेश है। वहीं सहायक विकास अधिकारी पंचायत पवन कुमार ने बताया कि उन्होंने आज ही कार्यभार संभाला है। उन्हें इस बात की जानकारी नहीं है कि आधार कार्ड की कॉपी क्यों ली जा रही है।

सैयद सिकंदर शाह मस्तान का उर्स मनाया

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : हजरत सैयद सिकंदर शाह मस्तान रहमतुल्लाह अलैह का एक दिवसीय सालाना उर्स यहां लाल इमली चौराहा स्थित दरगाह पर कुल शरीफ के साथ संपन्न हो गया। सोमवार देर शाम खादिम सैयद मसूद अली की देखरेख में कुल शरीफ का आगाज़ तिलावत ए कुरआन से हुआ। मुफ्ती राहिल रज़ा मरकजी ने कहा कि अल्लाह के हुक्म और रसूल पाक की सुन्नतों के मुताबिक ज़िंदगी गुजारने वाले ही दुनिया व आख़िरत में कामयाब होते हैं।

किश्वर अली दानाई व हाफिज खादिम ने नात व मनकबत पेश की। हाफ़िज़ों ने पवित्र कुरआन की आयतें पढ़ीं। मुफ्ती राहिल रज़ा ने मुल्क की खुशहाली और सलामती के लिए दुआ मांगी।इस दौरान पूर्व पालिकाध्यक्ष तनवीर खां ने अकीदतमंदों के साथ

चादरपोशी करते पूर्व पालिकाध्यक्ष तनवीर खां व अन्य। ● अमृत विचार

● मुल्क की खुशहाली व सलामती के लिए दुआ मांगी

मज़ार पर गुलपोशी व चादरपोशी की। इस अवसर पर सैयद मसूद अली, वामिक मजीद, नसीम खां, रिजवान, सिद्दीक खां,, मलक मसूद, बब्बू खां, मोहम्मद अकरम, तनवीर हसन, ज़ाकिर, महबूब, अतीक, परवेज अंसारी, अकील खां, इम्तियाज वली, अनवर सईद, मोहम्मद रमीज, आमिर खां, अमन खां, शाहनवाज आदि समेत तमाम लोग उपस्थित थे। देर रात महफ़िल ए मीलाद हुई, जिसमें मुफ्ती राहिल रज़ा मरकजी, कारी मोहम्मद अमीन वास्ती ने तकरीर की। रेहान रज़ा, मौलाना फुरकान, हाफिज ज़ुल्फिकार, सूफी फूल मियां लियाकती ने नातिया कलाम पेश किया। अंत में आयोजक सैयद मसूद अली ने सभी का शुक्रिया अदा किया।

बाघिन की नहीं मिली लोकेशन ग्रामीणों को किया सचेत

संवाददाता, खुटार

● भय के कारण किसानों ने खेतों की ओर जाना किया बंद

अमृत विचार: गांव रसवां कलां के मजरा हिमंचलपुर में नलकूप संख्या 17 के पास लगातार बाघिन शावकों के साथ देखे जाने के बाद मंगलवार को फिर से वन विभाग की टीम जांच करने पहुंची। जहां वनकर्मियों ने खेतों पर काम कर रहे किसानों से पूछताछ की। साथ ही सतर्क रहने की अपील की। वन रक्षक संतोष गौड़ के मुताबिक, बाघिन की कोई लोकेशन ट्रेस नहीं हुई है। 11 जनवरी की शाम सात बजे नगर के मोहल्ला रायटोला, देवीस्थान के रहने वाले किसान खेत पर आवारा पशुओं से रखवाली करने के लिए गए थे।तभी किसान भज्जू सक्सेना के खेत से बाघ निकलता दिखाई दिया और रामदास के खेत में चला गया था। 12 जनवरी को भी बाघिन भज्जू सक्सेना के खेत में देखी गई थी। सूचना पर वन विभाग टीम पहुंची थी और जांच की थी। मंगलवार दोपहर करीब तीन बजे वनरक्षक संतोष गौड़ टीम के साथ जंगल किनारे भज्जू, रामदास के खेतों की तरफ पहुंचे। जहां खेतों में काम कर रहे किसानों से पूछताछ की। किसानों से जानकारी लेने के बाद बाघिन की लोकेशन नहीं मिली। वन रक्षक संतोष गौड़ ने बताया कि किसानों से बातचीत की गई है। जबकि जंगली जानवर की कोई लोकेशन नहीं मिली है। लगातार क्षेत्र में निगरानी की जा रही है। साथ ही किसानों को जागरूक किया जा रहा है।

न्यूज ब्रीफ

19 को आयोजित होगा सम्पूर्ण समाधान

शाहजहांपुर, अमृत विचार : डीएम धर्मेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि जनपद में 17 जनवरी को सहायक अध्यापक, प्रशिक्षित स्नातक श्रेणी पुरुष एवं महिला शाखा प्रारंभिक परीक्षा का आयोजन होगा। जिस कारण अधिकांश अधिकारी उक्त परीक्षा में व्यस्त रहने के कारण 17 जनवरी शनिवार को आयोजित होने वाला सम्पूर्ण समाधान दिवस 19 जनवरी सोमवार को होगा।

ट्रेन में नगदी, मोबाइल समेत पर्स चोरी

शाहजहांपुर, अमृत विचार : राप्ती गंगा एक्सप्रेस में एक महिला का एसी कोच में पर्स चोरी हो गया। पर्स नगदी, मोबाइल आदि सामान था। देहरादून जिले के तपोवन एन्क्लेव निवासी केशव ने जीआरपी थाना में रिपोर्ट दर्ज करायी है कि वह अपने पति जयंती प्रसाद के साथ एक माह पूर्व रेलवे स्टेशन गोंडा से देहरादून जाने के लिए राप्ती गंगा एक्सप्रेस के एसी कोच में सफर कर रही थी। ट्रेन सुबह शाहजहांपुर रेलवे स्टेशन पर पहुंची तो उसने देखा कि बर्थ पर रखा पर्स चोरी हो गया है। उसने बर्थ के नीचे देखा और पर्स नहीं मिली। उसके पर्स में मोबाइल, 30 हजार रुपये नगद, घर की चाबियां, आधार कार्ड आदि सामान था। जीआरपी थाना प्रभारी ने बताया कि पर्स चोरी की रिपोर्ट दर्ज कर ली गयी है।

पाक्सो एक्ट का आरोपी गिरफ्तार

शाहजहांपुर, अमृत विचार : कलान पुलिस ने पास्को एक्ट के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया और चालान कर दिया। थाना के उप निरीक्षक रामकुमार शर्मा ने बताया कि 29 दिसंबर को आरोपी रंजीत निवासी नगला थाना कलान एक किशोरी को अगवा करके ले गया था। किशोरी के परिवार वालों ने आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था। पुलिस ने किशोरी को बरामद करके डाक्टरी परीक्षण कराया था। पुलिस ने फरार आरोपी रंजीत को रुकनपुर गांव के पास गिरफ्तार कर चालान कर दिया।

घर में घुसकर पीटा मोबाइल तोड़ा

शाहजहांपुर, अमृत विचार : रामचंद्र मिशन थाना क्षेत्र के गांव चौढ़ेरा निवासी सियाराम ने थाना पर दी गई तहरीर में बताया कि सोमवार को शाम पांच लोग मुंह में ढाटा बांधकर उसके मकान में घुस आए। आरोपियों ने गाली देते हुए मारपीट शुरु कर दी। आरोपियों ने घर में रखी अलमारी तोड़ दी और मोबाइल तोड़ दिया। पुलिस ने गांव के अमन, मनोज, राहुल, आकाश और कांट के सूरज के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

दो दोस्तों को ट्रैक्टर-ट्राली ने मारी टक्कर, मौत

कलान क्षेत्र में हादसे से दोनों परिवारों में मचा कोहराम, कोहरे में बाइक के पास खड़े थे दोनों युवक, तीसरा बाल-बाल बचा

मृतक अनिल।

मृतक नितिन।

● एक दोस्त बाल-बाल बचा, दो की मौके पर गई जान

संवाददाता, कलान

अमृत विचार : थाना क्षेत्र के फटका चौराहा से आगे तेज गति से आ रही ट्रैक्टर-ट्राली ने बाइक के पास सड़क किनारे खड़े दो युवकों को टक्कर मार दी। हादसे में दोनों युवकों की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं कुछ दूरी पर खड़ा तीसरा युवक बाल-बाल बच गया। हादसे के बाद चालक ट्रैक्टर-ट्राली लेकर भाग गया। जानकारी होने पर मृतकों के परिजन और पुलिस मौके पर पहुंच गई।

थाना क्षेत्र के गांव बेहटा जंगल के मजरा कलक्टरगंज निवासी अंकित वर्मा पुत्र मनीराम वर्मा ने बताया कि उसका खेत पिंडारा उत्तर में है। मंगलवार सुबह 6.30 बजे वह अपने भाई नितिन वर्मा (18) और गांव के ही अनिल माथुर (19) पुत्र यादराम माथुर के साथ खेत पर खड़ी गेहूं की फसल देखने के लिए गया था। कोहरा अधिक होने के कारण दृष्यता कम होने वजह से तीनों ने बाइक को फटका चौराहा से कुछ आगे रोक दिया और सड़क किनारे खड़े हो गए। अंकित ने बताया कि नितिन और अनिल बाइक के पास खड़े होकर बातचीत करने लगे। वह कुछ दूरी पर खड़ा था। इसी बीच तेज गति से आ रहे ट्रैक्टर-ट्राली ने नितिन, अनिल और बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में नितिन व अनिल दोनों की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि वह बाल बाल बच गया। हादसे के बाद चालक ट्रैक्टर-ट्राली लेकर भाग गया। परिजनों का रो रोकर बुराहाल है।

पिडारा उत्तर के पास हादसे के बाद घटनास्थल पर जुटी ग्रामीणों की भीड़। ● अमृत विचार

परिवार के काम में हाथ बंटाते थे दोनों

नितिन नौगमा मुबारिकपुर में मोटरसाइकिल रिपेयरिंग की दुकान पर काम करता था। वह चार भाई बहनों में शामिल था, जिनमें सबसे बड़ा अंकित और बहन शांति की शादी हो चुकी है। नितिन अविवाहित था और सबसे छोटा भाई निलेश दस वर्ष का है। उसकी मां मीना देवी का रो रो कर बुरा हाल है। दूसरे मृतक अनिल आठ भाई बहनों में से एक था, जिनमें रविंद्र, कन्हैयालाल, सत्यवीर, पान, सीमा, अंगूरी और जैंसी शामिल हैं। अनिल की मां भूरी देवी भी गहरे सदमे में है। घटना की जानकारी मिलते ही गांव और आसपास के लोग बड़ी संख्या में मौके पर पहुंच गए। इस दौरान बेहटा जंगल के प्रधान पति श्याम बिहारी वर्मा, मोहनपुर कलुआ पर के प्रधान पंकज यादव पुत्र पिंटू यादव, जहानाबाद खमरिया के प्रधान देशराज कश्यप और जिला पंचायत सदस्य राम कुमार राठौर सहित कई लोग घटनास्थल पर पहुंचे।

विलाप करते मृतक के परिजन। ● अमृत विचार

रोते बिलखते घटना स्थल पर पहुंचे परिजन

घटना की सूचना मिलने पर अनिल और नितिन के परिजन दौड़कर घटना स्थल पर पहुंचे। जब उन्होंने दोनों के शव मौके पर पड़े देखे तो पछाड़ खाकर गिर पड़े। दोनों के परिजनों का रो रोकर बुराहाल है। अंकित ने बताया कि चालक को रोकने का वह प्रयास करता रहा, लेकिन नहीं रुका। घटना की सूचना मिलने पर थाना प्रभारी शिवदीन वर्मा मौके पर पहुंचे और दोनों के शव को पोस्टमार्टम भेजा।

पुलिस चौकी के पास डेयरी में चोरी का प्रयास

खुटार, अमृत विचार: खुटार के गांव चांदपुर पुलिस चौकी से महज 20 मीटर दूर पर मेन रोड पर गांव के ही एक व्यक्ति ने डेयरी की दुकान कर रखी है। रविवार रात करीब ग्यारह बजे एक बाइक सवार युवक दुकान के सामने रुका और बाइक खड़ी करके दुकान के ताले तोड़ कर चोरी करने का प्रयास किया। दुकान स्वामी ने युवक को सीसीटीवी कैमरे में चोरी करने की योजना बनाते देख लिया और मौके पर पहुंच गए। दुकान स्वामी ने युवक को पकड़ लिया और पूछताछ की। तभी युवक कोई सही जवाब नहीं दे सका व हड़बड़ा गया। युवक ने बताया कि बाइक में पेट्रोल खत्म हो गया था। इसलिए दुकान के सामने खड़ी गाड़ी से पेट्रोल निकालने का प्रयास कर रहे थे। दुकान स्वामी ने युवक को बिना कार्रवाई छोड़ दिया। दुकान स्वामी ने अखबार में नाम नहीं प्रकाशित करने की बात कहकर सारी बात बताई। साथ ही पुलिस को तहरीर नहीं दी है। लेकिन घटना सीसीटीवी कैमरे में पूरी तरह कैद हो गई।

महिला व लेखपालों के बीच विवाद

संवाददाता, पुवायां

अमृत विचार: तहसील परिसर में मंगलवार दोपहर उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब निवास प्रमाण पत्र की जानकारी लेने पहुंची एक महिला और लेखपालों के बीच कहासुनी के बाद मामला मारपीट तक पहुंच गया। घटना के बाद तहसील परिसर में काफी देर तक हंगामे की स्थिति बनी रही।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, दोपहर के समय लेखपाल कक्ष से अचानक शोर-शराबे की आवाजें आने लगीं। देखते ही देखते कुछ लोग एक महिला को पकड़कर नीचे ले गए। महिला ने आरोप लगाया कि निवास प्रमाण पत्र से संबंधित जानकारी लेने के दौरान लेखपालों ने उसके साथ मारपीट की। आरोप है कि एक लेखपाल ने उसके पास मौजूद 11 हजार रुपये और मोबाइल फोन भी छीन लिया। उसने कुछ दिन पहले निवास प्रमाण पत्र के लिए आवेदन किया था, जिसे महिला लेखपाल द्वारा खारिज कर दिया गया था। इसके बाद तहसीलदार से बात होने पर उसे संबंधित लेखपाल से संपर्क करने को कहा गया, उसी क्रम में वह तहसील पहुंची थी। वहीं दूसरी ओर लेखपाल संघ के अध्यक्ष ने महिला के आरोपों को सिरे से खारिज किया है। उनका कहना है कि उक्त महिला ने पहले महिला लेखपाल के साथ अभद्रता करते हुए जोरदार थप्पड़ मारा, जिससे वह कुर्सी से गिर गई। इसके बाद वहां मौजूद लोगों ने विरोध जताया। लेखपालों द्वारा महिला के साथ पिटाई किए जाने के आरोप निराधार बताए गए हैं। घटना के बाद दोनों पक्ष कोतवाली पहुंचे, जहां काफी देर तक हंगामा चलता रहा। अंततः दोनों की ओर से एक-दूसरे के खिलाफ शिकायती पत्र देकर कार्रवाई की मांग की गई। पुलिस का कहना है कि दोनों पक्षों की शिकायत के आधार पर मामले की जांच की जा रही है, जांच के बाद कार्रवाई की जाएगी।

कोतवाली में उपस्थित लोग। ● अमृत विचार

● एक दूसरे पर लगाए गंभीर आरोप, मामला मारपीट तक पहुंचा

ससुराल पक्ष पर जेवर चोरी करने का आरोप

खुटार, अमृत विचार: क्षेत्र के गांव कुसुमा में रहने वाले अशोक कुमार ने मंगलवार को थाने पर दी गई तहरीर में बताया कि उन्होंने अपनी बेटी वंदना उर्फ कलावती की शादी साल 2022 में खुटार के गांव रुजहा कला में रहने वाले परशुराम के बेटे अवनीश वर्मा के साथ की थी। शादी के 2 साल बाद 2024 में दामाद अवनीश की सड़क हादसे में मृत्यु हो गई। जिसके बाद उनकी बेटी 4-5 माह तक अपनी ससुराल में रही। इसी दौरान ससुराल वालों ने उसकी बेटी के जेवर चोरी कर लिए। इसके बाद ससुराल वाले उसकी बेटी को मायके कुसुमा छोड़ आए थे। तब से लेकर आज तक को उसकी बेटी वंदना मायके में है।

पुलिस क्लब ने इंडियन क्लब को हराया

मैन ऑफ द मैच सैफ को पुरस्कार देते टूर्नामेंट आयोजक अभय सिंह गुर्जर। ● अमृत विचार

संवाददाता, शाहजहांपुर

● 142 रनों से दर्ज की जीत, सैफ रहे मैन ऑफ द मैच

अमृत विचार : जीएफ कॉलेज मैदान में चल रहे सूरज कांति मेमोरियल क्रिकेट लीग में पुलिस क्लब ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 28 ओवरों में 9 विकेट खोकर 262 रन बनाए। सैफ ने 85 रन तथा विशाल मलिक ने 61 रन बनाए। इंडियन क्लब की टीम 120 रन बनाकर आउट हो गई। मैन ऑफ द मैच सैफ रहे। मैच के अंपायर अभय सिंह गुर्जर तथा अनुज यादव रहे। स्कोरिंग लक्ष्य तथा अभिषेक कनौजिया ने की। कॉमेंटेटर की भूमिका में पंकज छापू रहे। मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार टूर्नामेंट आयोजक अभय सिंह गुर्जर ने दिया।

संदिग्ध हालात में पेड़ के नीचे मिला युवक का शव

संवाददाता, सेहरामऊ दक्षिणी/ शाहजहांपुर

● सोमवार की रात घर से निकला था, शरीर में चोट के निशान नहीं

अमृत विचार: सुजातपुर गांव में एक युवक का शव पेड़ के नीचे संदिग्ध परिस्थितियों में मिला है। सोमवार की रात नौ बजे घर से निकला था। गांव वालों ने उसका शव सुबह देखा। उसके शरीर में चोट के निशान नहीं है।

सेहरामऊ दक्षिणी थाना क्षेत्र के गांव सुजातपुर निवासी 40 वर्षीय गयादीन देवरिया जिले में ठेकेदार के पास मजदूरी करते थे। उनकी तीन माह पूर्व मां की मौत हो गयी थी। वह अपनी मां की अस्थियां को गंगा प्रवाहित करने के लिए तीन दिन पहले देवरिया से गांव आया था। वह सोमवार की रात करीब साढ़े आठ बजे बादशाह चौराहे पर जाने के लिए घर से निकला था। वह रात में घर पर वापस नहीं आया था। परिवार वालों ने उसकी गांव में तलाश की और पता नहीं चला था। मंगलवार की सुबह शौच करने के लिए गांव वाले निकले। गांव वालों ने देखा कि बादशाहनगर संपर्क मार्ग पर एक पेड़ के नीचे गयादीन का शव पड़ा देखा। गांव वालों ने उसके परिवार वालों को सूचना दी। मृतक के चाचा आशाराम ने थाना पर सूचना दी। थाना प्रभारी उमेश कुमार फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे और परिवार वालों से जानकारी की। परिजनों ने बताया कि उसके शरीर में चोट के निशान नहीं थे और शराब पीता था। मौत का कारण जानने के लिए परिजनों ने पोस्टमार्टम कराए जाने की मांग की। मृतक अपने पीछे चार विवाहित बहनें और दो भाई छोड़ गया है। मौत की खबर से परिवार में रोना पीटना मच गया। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट से मौत का कारण स्पष्ट होगा और मामले की जांच कर रही है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

रास्ते में घेरकर युवक पर किया दबंगों ने हमला

संवाददाता, खुटार

● पीड़ित ने थाने पर तहरीर देकर की कार्रवाई की मांग

अमृत विचार: पुरानी रंजिश में कुछ लोगों ने एक युवक को रास्ते में घेर लिया और उसकी लाठी डंडों से जमकर पिटाई कर दी। घटना के बाद पीड़ित थाने पहुंचा और मामले की तहरीर पुलिस को दी। लेकिन पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज नहीं की।

क्षेत्र के गांव महेशापुर में रहने वाले दीपक कुमार ने थाने पर दी गई तहरीर में बताया कि गांव महेशापुर में रहने वाले कुछ लोगों से उनका विवाद चल रहा है। जिस वजह से वह लोग उसे खुन्नस मानते हैं। दीपक ने बताया कि मंगलवार को वह पड़ोस के गांव गेहुआ में लगने वाली बाजार में सब्जी लेने गया था। तभी उक्त महेशापुर गांव निवासी उक्त दबंगों ने उसे रास्ते में रोक लिया और गाली गलौज करते हुए उसके साथ मारपीट शुरू कर दी। पीड़ित दीपक कुमार ने बताया कि इस दौरान दबंगों ने इसकी लत घूसो और डंडों से जमकर पिटाई कर दी। जिससे उसे काफी चोटे आई। घटना के बाद पीड़ित ने मामले की सूचना डायल 1112 पुलिस को दी। जिस पर पुलिस मौके पर पहुंची। लेकिन तब तक दबंग भाग निकले। पीड़ित थाने पहुंचा और मामले की तहरीर दी। पुलिस ने अभी तक रिपोर्ट दर्ज नहीं की है।

सटोरिया पर्ची समेत गिरफ्तार

शाहजहांपुर : चौक कोतवाली के उप निरीक्षक प्रदीप कुमार ने राजघाट तिराहे के निकट एक सटोरिये को गिरफ्तार कर लिया। पकड़ा गया सटोरिया परवेज निवासी बंगस चौक कोतवाली है। पुलिस ने उसके कब्जे से सट्टे की पर्ची और कागज व पैन बरामद किया है। पुलिस ने सटोरिये का चालान कर दिया।

नवीन प्रजातियों को महत्व देने पर जोर

शाहजहांपुर, अमृत विचार : जिला उद्यान अधिकारी पुनीत कुमार पाठक ने बताया कि प्रदेश में कृषकों में उत्पादन के लिए विभिन्न प्रजातियों के आलू बीज की मांग भारत सरकार (सीपीआरआई) से की जाती है।

उद्यान विभाग द्वारा संचालित राजकीय प्रक्षेत्रों पर संवर्धन कराकर आगामी सत्र में कृषको के मध्य नकद मूल्य पर वितरण हेतु जनपदों को आवंटित किया जाता है। उन्होंने किसानों से आलू बीज की मांग कार्यालय जिला उद्यान अधिकारी, के कमरा नं 109, भूतल, विकास भवन पर अथवा प्रभारी आलू बीज अनिल कुमार, उद्यान निरीक्षक के मोबाइल नं. 7355703122 पर कार्य दिवस में अवगत कराने पर जोर दिया।

खेलने निकले पांच साल के बच्चे का गड्ढे में उतराता मिला शव

संवाददाता, सिंधौली/शाहजहांपुर

● घर से खेलने के निकला था परिवार में मचा कोहराम

अमृत विचार: महुआ पाठक गांव में पांच साल का बालक घर से खेलने के लिए निकला था। वह घर नहीं लौटा तो परिवार वालों ने उसकी तलाश की। गांव के निकट बालक का शव गड्ढे में उतराता मिला। पुलिस मौके पर पहुंची और बालक के शव तालाब से बाहर निकालवाया।

मृतक मंजीत।

थाना सिंधौली क्षेत्र के गांव महुआ पाठक निवासी विजय कुमार का पांच वर्षीय पुत्र मंजीत सोमवार की दोपहर दो बजे घर से खेलने के लिए निकला था। वह शाम पांच बजे तक घर वापस नहीं आया तो परिवार वालों ने उसकी तलाश की। परिवार वाले तलाश करते हुए घर से थोड़ी दूर पर पानी के गड्ढे के पास गए। परिवार वालों ने देखा कि मंजीत का शव गड्ढे में पानी में उतराता मिला। मृतक बालक के पिता विजय कुमार गड्ढे के पास पहुंच गए और देखा कि उसके बेटे का शव था। उन्होंने थाना पर सूचना दी। सूचना पर प्रभारी निरीक्षक मौके पर पहुंचे और शव को बाहर निकलवाया। परिवार वालों ने बताया कि घर से खेलने के लिए निकला था। परिवार वालों की तरफ से कोई आरोप नहीं है। मृतक मंजीत तीन भाई-बहनों में दूसरे नंबर का था। मृतक के पिता की दुकान है। उसकी बड़ी बहन की शादी हो गयी है। मृतक की मां का नाम वंदना है। मौत की खबर से परिवार में रोना पीटना मच गया। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट से मौत का कारण स्पष्ट होगा।

अमृत विचार

बरेली, बुधवार, 14 जनवरी 2026

शाहजहांपुर

लोहड़ी महोत्सव में दिखा पंजाबी महासभा का उत्साह

कार्यक्रमों में दिखाई दी पंजाबी संस्कृति की झलक, जमकर झूमे लोग

हर्षोल्लास के साथ मनाया लोहड़ी का पर्व

लोहड़ी महोत्सव में शामिल अतिथि। ● अमृत विचार

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के दौरान झूमती महिलाएं। ● अमृत विचार

शाहजहांपुर, अमृत विचार : लीड कान्वेंट स्कूल में लोहड़ी का पर्व पूरी श्रद्धा विश्वास और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मंगलवार को लोहड़ी के पावन पर्व पर स्कूल की प्रधानाचार्य तराना जमाल के निर्देश पर सभी शिक्षिकाएं अपने-अपने घरों से पारंपरिक पंजाबी लुक में स्कूल पहुंची। स्कूल के प्रबंधक मोहम्मद जमाल और प्रधानाचार्य तराना जमाल ने शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ परंपरागत ढंग से लोहड़ी का पर्व अग्नि के चारों ओर फेरे लगाते हुए रेवती, मूंगफली, फूल फूले आदि अग्नि में प्रज्वलित करते हुए जहां लोहड़ी का पर्व मनाया। वहीं, सक्रांति के पर्व को मद्देनजर रखते हुए उड़द की खिचड़ी का आनंद लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में शिक्षिका श्रीति सिंह, चांदनी अनवर अंजलि अग्निहोत्री, नाजिया, राहत, सबा, रूपा सिंह, अपर्णा, रितु, रीमा सक्सेना, आस्था मिश्रा, शबेनूर, लोचन, शाइस्ता, चांदनी, शोएबा, इकरा, समीना, नाजरीन, वरीशा, नीतू सक्सेना, फरह खान, तरन्नुम, अजमी, संतोष सक्सेना, शकील अहमद, दीपक, रितिक आदि का सहयोग रहा।

लीड कान्वेंट में लोहड़ी का पर्व मनातीं शिक्षिकाएं। ● अमृत विचार

लोहड़ी महोत्सव

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : पंजाबी महासभा की ओर से भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी प्रेक्षागृह में मंगलवार को लोहड़ी महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में महासभा के सदस्य परिवारों के साथ शामिल हुए। आयोजन में पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ लोहड़ी पर्व मनाया गया और सांस्कृतिक गतिविधियों के जरिए पंजाबी संस्कृति की झलक दिखाई दी। शुरुआत ईश वंदना से हुई, जिसे महासभा के महामंत्री सुनील गुप्ता ने सदस्यों के साथ कराया। इसके बाद बच्चों ने रंगारंग प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम में गायक मोहम्मद अजीज ने लोहड़ी से जुड़े गीत प्रस्तुत किए, जिससे माहौल उत्साहपूर्ण बना रहा।

आयोजन में पीलीभीत-शाहजहांपुर क्षेत्र के एमएलसी सुधीर गुप्ता, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष वीरेंद्र पाल यादव, सहकारी बैंक के अध्यक्ष डीपीएस राठौर, सामाजिक कार्यकर्ता चन्द्रशेखर खन्ना उर्फ धीरू और सांसद मिथिलेश कुमार के पुत्र अंकुर मौजूद रहे।

पंजाबी महासभा की ओर से सभी अतिथियों का शाल ओढ़ाकर व स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में हरीश बजाज, चन्द्र प्रकाश गुलाटी, सुनील गुप्ता, रोमी आनंद, पवन ग्रोवर, राजकुमार धवन, प्रेम नारंग, गिरीश चोपड़ा, संजय चोपड़ा, किशन लाल छाबड़ा, विनय चड्ढा, नंदकिशोर खंडूजा, सुरेंद्र सेठी और मनमोहन अरोड़ा सहित अन्य सदस्यों का सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन हरीश बजाज और सुनील गुप्ता ने संयुक्त रूप से किया। अंत में आयोजकों ने सभी का आभार जताया।

अतिथियों और सदस्यों ने प्रज्ज्वलित की अग्नि

लोहड़ी पर्व के तहत सभी अतिथियों और सदस्यों ने मिलकर अग्नि प्रज्वलित की। रामनगर के पंडित ने मंत्रोच्चार के साथ अग्नि जलाई। इसमें मूंगफली, रेवड़ी और फूले अर्पित किए गए। इसके बाद लोगों ने पारंपरिक गीतों पर नृत्य किया। बच्चों के लिए झूलों की व्यवस्था की गई थी, जिसका उन्होंने खूब आनंद लिया।

समाज के वरिष्ठ जन को सम्मानित करते आयोजक। ● अमृत विचार

हाउजी खेल का लिया आनंद

कार्यक्रम के दौरान सदस्यों ने हाउजी खेल का आनंद लिया। इसके बाद लकी ड्रा का आयोजन हुआ, जिसमें बंपर प्रथम पुरस्कार वाशिंग मशीन कृष्णा नगर निवासी प्रेम अरोड़ा को मिला। अन्य पुरस्कार जिनके विजेता कार्यक्रम में मौजूद नहीं थे, उनके कूपन गुलाटी बेकरी, सरदार पटेल हिंदू इंटर कॉलेज के पास, कोषाध्यक्ष चन्द्र प्रकाश गुलाटी की देखरेख में रखे गए हैं। सदस्यों से कूपन दिखाकर पुरस्कार प्राप्त करने का अनुरोध किया गया है।

श्री कृष्ण मंदिर में हर्षोल्लास से मनाया लोहड़ी उत्सव

शाहजहांपुर, अमृत विचार : कृष्णा नगर स्थित श्री कृष्ण मंदिर में लोहड़ी का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में पुरुषों और महिलाओं ने नृत्य और गीतों के माध्यम से एक दूसरे को लोहड़ी की शुभकामनाएं दीं। उत्सव के दौरान मंदिर परिसर में पंजाबी समाज के लोगों की बड़ी संख्या में मौजूदगी रही। कार्यक्रम में कार्यवाहक प्रधान हरीश बजाज, युवा प्रधान संजीव सचदेवा, जसवंत जय सिंह, नवीन सचदेवा, लोकेश चावला, मोहन लाल अरोरा, विनोद सचदेवा, ज्योति स्वरूप सचदेवा, प्रेम नारंग, दीपा अरोरा, सुषमा सचदेवा, ममता सचदेवा, अंजू बजाज और पूनम अवस्थी सहित सैकड़ों पंजाबी समाज के लोग उपस्थित रहे और कार्यक्रम में सक्रिय सहभागिता की।

न्यूज ब्रीफ

ताला तोडकर चोरों ने की चोरी, रिपोर्ट दर्ज

शाहजहांपुर, अमृत विचार : चौक कोतवाली के मोहल्ला अजीजगंज निवासी अनिल कुमार सिंह ने रिपोर्ट दर्ज करायी है कि 10 जनवरी को वह अपनी पत्नी के साथ तिलहर के हरनोखा गांव में गया था। वह रात में साढ़े दस बजे घर वापस आया तो मकान के मुख्य दरवाजे का ताला टूटा हुआ था। उन्होंने देखा कि एक कमरे में सामान बिखरा पड़ा था। उन्होंने बताया कि चोर ढाई हजार रुपये, सोने के कुण्डल, सोने के झाले, चांदी की पायल, दो सोने की अंगूठी आदि सामान ले गए है। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि चोरों की सुरागरसी की जा रही है। पुलिस ने बताया कि चोरों का पता लगाने के लिए कुछ लोगो से पूछताछ की गई है। जल्द ही चोरी का खुलासा होगा।

जागृति समूह ने मजदूरों को बांटी चाय बिस्कुट

शाहजहांपुर, अमृत विचार : निशात रोड पर मंगलवार सुबह आठ बजे कड़ाके की सर्दी को देखते हुए जागृति समूह की महिलाओं की ओर से दैनिक श्रमिकों और राहगीरों को चाय और बिस्कुट वितरित किए गए। इसके साथ ही लोहड़ी पर्व के अवसर पर रेवड़ी और मूंगफली के पैकेट भी बांटे गए। कार्यक्रम में जागृति समूह की एडमिन उषा मिश्रा और निधि बहल के साथ नीति रस्तोगी, रचना चिनारिया, रिद्धि बहल और रेनू अग्रवाल की विशेष सहभागिता रही। निधि बहल ने कहा कि इस तरह के आयोजन करते रहना चाहिए। इसके अलावा समूह की सदस्य भविता मिडा, प्रज्ञा पाठक, विनन्ती देवा, सीमा सिंह, संतोष यादव और अनुपम मिश्रा ने सहयोग किया।

34 रन से जीता राइजिंग स्टार

शाहजहांपुर, अमृत विचार : मयूर स्पोर्टिंग के आयोजकत्व में कैंटोनमेंट मैदान पर चल रहे कारगिल शहीद क्रिकेट ट्रॉफी में आज एचआर क्लब एवीएन राइजिंग स्टार वोडाफोन के बीच खेला गया। जिसमें मैच का टास जीत कर राइजिंग स्टार ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 133 रन बनाए। दूसरी पारी में लक्ष्य का पीछा करते हुए एचआर क्लब की टीम 99 रन ही बना सकी। मैन ऑफ द मैच रेहान को चुना गया। मैच के अंपायर रिजवान एवं कबीर थे। स्कोरर सुधीर एवं मयूर खन्ना थे। मयूर खन्ना ने बताया कि बुधवार को शाहजहांपुर क्रिकेट लीग का फाइनल मैच क्राउन क्लब एवं रॉयल स्टार परितेश के बीच खेला जाएगा।

ध्रुव भक्त की कथा सुन भाव विह्वल हुए श्रोतागण

तिलहर, अमृत विचार : नगर के मोहल्ला दातागंज मठिया मंदिर पर चल रही श्रीमद भागवत कथा के दूसरे दिन महाराज ध्रुव का पावन आख्यान सुनकर श्रोतागण भाव विभोर हो उठे। कथा व्यास पंडित शिव ओम मिश्रा ने बताया कि पिता की गोद के लिए सौतेली मां से तिरस्कृत किए गए बालक ध्रुव को देवर्षि नारद की प्रेरणा से इतना ऊंचा स्थान मिला कि वह आज भी आकाश में ध्रुव तारे के रूप में संसार के प्राणियों को दिव्य दर्शन करा रहे हैं। आयोजक मंडल के सदस्यों सहयोग रहा।

मारपीट के दोषियों को पांच-पांच वर्ष की सजा

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश न्यायालय संख्या-10 ने पिता व भाईयों को लाठी डण्डों से पीटने व दुकान का बीस हजार रूपए का फर्नीचर तहस नहस करने के मामले में चार अभियुक्तों को पांच-पांच वर्ष की कैद और दस-दस हजार रूपए अर्थदंड की सजा सुनाई है।

अभियोजन पक्ष के अनुसार के रवि गुप्ता के पिता लालाराम पुत्र शिवनरायन निवासी गंगसरा, थाना पुवायां की गांव में ही मिठाई की दुकान है। 13 मार्च 2010 को रवि के पिता, भाई अमन व सोनू समय लगभग प्रातः साढ़े नौ बजे अपनी दुकान पर बैठे थे। तभी अचानक ग्राम उमरिया कल्यानपुर थाना पुवायां निवासी राजीव व प्रदीप व सुनील पुत्र रामशंकर व रामशंकर पुत्र जगन्नाथ एवं लक्ष्मी व बूटी पुत्र राम भरोसे व सोनू शुक्ला एक दर्जन लोगों के साथ नाजायज हथियारों व लाठियों व सरिया से लैस होकर ट्रैक्टर ट्राली से दुकान पर आ धमके और सभी ने एक राय होकर उसके पिता व भाईयों को पीटना शुरू कर दिया। दुकान का सारा फर्नीचर व शीशा तोड़कर तहस नहस कर डाला। जिससे लगभग बीस हजार रूपये का नुकसान हुआ। अभियुक्त नाजायज हथियारों से फायर करते हुए जान से मारने की धमकी देते हुए भाग गए। पुवायां पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर विवेचना के बाद अभियुक्तों के खिलाफ आरोप पत्र न्यायालय में दाखिल किया।

अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश न्यायालय संख्या-10 पंकज कुमार श्रीवास्तव ने पटल पर रखे गए साक्ष्यों और सरकारी वकील के तर्कों से सहमत होकर अभियुक्त रामशंकर, राजीव, लक्ष्मी एवं बूटी को दोषी करार देते हुए पांच-पांच वर्ष के कारावास और दस-दस हजार रूपये के अर्थदण्ड से दण्डित किया।

एबीवीपी ने किया वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन

शाहजहांपुर, अमृत विचार : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की महानगर इकाई ने स्वामी विवेकानंद जयंती (राष्ट्रीय युवा दिवस) के अवसर पर वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मुख्य अतिथि अधिवक्ता अंशुमन मैसी ने कहा कि स्वामी विवेकानंद का जीवन आज के युवाओं के लिए प्रेरणा है। एबीवीपी का यह प्रयास सराहनीय है। जिला संगठन मंत्री संदीप सागर ने विचार व्यक्त किए। प्रतियोगिता के अंत में बनके गांव 1 विजेता टीम को पुरस्कार वितरण कर उनका उत्साहवर्धन किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि एसएचओ बृजेश सिंह, विभाग संगठन मंत्री राहुल गंगवार, महानगर मंत्री आयुष श्रीवास्तव जिला एसडीएफ संयोजक वैभव सक्सैना, आकाश मैसी, अक्षय सक्सेना, करण सिंह, आशुतोष मिश्रा, हर्षित ठाकुर, योगेश, अभिनेंद्र त्रिपाठी, आयुष शुक्ला मौजूद रहे।

ज्ञानेन्द्र के गजल संग्रह का हुआ लोकार्पण

लोकार्पण करते गजलकार डा. कृष्ण कुमार 'नाज़'। ● अमृत विचार

संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित विश्व पुस्तक मेले के पहले दिन ही श्वेतवर्णा प्रकाशन के स्टाल पर स्थानीय कवि ज्ञानेन्द्र मोहन ज्ञान के सद्यः प्रकाशित ग़ज़ल-संग्रह 'ज़ीस्त के रंग' का लोकार्पण अग्रिम पंक्ति के ग़ज़लकार डा. कृष्ण कुमार 'नाज़' ने किया।

इस अवसर पर श्वेतवर्णा प्रकाशन के संपादक राहुल शिवाय, युवा कवि पीयूष शर्मा व विकास सोनी 'ऋतुराज' भी मौजूद रहे। डा. कृष्ण कुमार 'नाज़' ने ज्ञानेंद्र के काव्य की प्रशंसा करते हुए उनके आठवें गजल संग्रह 'ज़ीस्त के रंग' के प्रकाशन पर बधाई दी। बता दें कि इससे पहले ज्ञानेंद्र मोहन ज्ञान के नवगीत संग्रह ''तुमसे मिलकर, बालगीत संग्रह 'राजाजी की शैतानी' ग़ज़ल संग्रह और कब तक गीत संग्रह 'ढाई आखर बांचो तो, ग़ज़ल संग्रह 'आखिर कैसे हल निकलेगा, देहरी पर चिराग़' कहो हे तथागत' प्रकाशित हो चुके हैं।

नगर पालिका की 13 दुकानों का खुली बोली से आवंटन

तिलहर, अमृत विचार: नगर पालिका की 13 दुकानों का आवंटन खुली बोली के माध्यम से किया गया। गहमा गहमी को देखते हुए मौके पर भारी पुलिस बल तैनात रहा। मंगलवार शाम नायब तहसीलदार पूनम मधुकर और पालिका अध्यक्ष हाजरा बेगम के निर्देशन में ईओ सत्येंद्र प्रकाश ने नीलामी बोली प्रक्रिया संपन्न कराई। अधिकतम बोली लगाने वाले आवेदकों को दुकानें आवंटित की गईं। ईओ ने बताया कि 13 दुकानों में दो अनुसूचित, एक पिछड़ा और 10 अनारक्षित वर्ग के लिए थीं। कुल 17 लोगों ने आवेदन किया था। सभी दुकानों की सरकारी बोली छह लाख रुपये तय की गई थी, जिस पर उससे अधिक की बोली लगाई गई। इस दौरान राजस्व निरीक्षक सुशांत कुमार, जेई पीयूष मिश्रा, राजीव कुमार, अय्यूब हुसैन, कमलदीप, अरविंद कुमार, इस्लाम अली, ठेकेदार सुनील शर्मा और साजिद खान मौजूद रहे।

सीएचसी के मुख्य द्वार से हटाया गया अतिक्रमण

तिलहर, अमृत विचार : नगर पालिका की टीम ने ईओ सत्येंद्र प्रकाश के निर्देशन में सीएचसी के मुख्य द्वार से अतिक्रमण को हटवाया। अस्पताल के तीनों गेटों पर अतिक्रमण और ई रिक्शा से जाम की शिकायतें लगातार मिल रही थीं। सामाजिक संगठनों की नाराजगी के बाद सीएचसी प्रभारी डॉ. ओमेंद्र राठौर ने एसडीएम और नगर पालिका को पत्र भेजकर तुरंत अतिक्रमण हटाने की मांग की थी। इसके बाद मंगलवार दोपहर ईओ सत्येंद्र प्रकाश और राजस्व निरीक्षक सुशांत कुमार पालिका टीम के साथ मौके पर पहुंचे और अस्पताल के गेट पर लगे अतिक्रमण को हटवाया। ईओ ने कहा कि दोबारा अतिक्रमण करने पर सभी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया जाएगा। इस दौरान जेई पीयूष मिश्रा, सफाई निरीक्षक राजीव कुमार और प्रधान लिपिक मो. अयूब तथा अन्य कई लोग मौजूद रहे। लोगों ने बताया कि सीएचसी के मुख्य द्वार पर अतिक्रमण के चलते रोगी वाहन अंदर आने में दिक्कत होती थी। अब इससे लोगों को लाभ मिलेगा।

रेलवे और नगर निगम ने रिपोर्ट कोर्ट भेजी

संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: मालगोदाम रोड पर रेलवे की जमीन अतिक्रमण हटाने के मामले में एक दुकानदार हाई कोर्ट से स्टे लेकर आया था। कोर्ट ने रेल प्रशासन और नगर निगम से अपनी-अपनी जमीन की आंख्या रिपोर्ट मांगी थी। दोनों विभागों ने अपनी-अपनी रिपोर्ट बनाकर कोर्ट को भेज दी है। बता दे कि रेल प्रशासन ने मालगोदाम रोड पर द्वितीय प्रवेश द्वार के सामने सड़क को चौड़ा करने के उद्देश्य से जेसीबी से एक सप्ताह पूर्व गिरा दिया था। दो खोखों वालों ने कहा था कि नगर निगम में किराया जमा करते है, लेकिन रेल प्रशासन ने उनकी एक नहीं सुनी थी और दोनों खोखों को गिरा दिया था। इस दौरान एक दुकानदार हाई कोर्ट से स्टे लेकर आया था। कोर्ट ने आदेश दिया था कि रेल प्रशासन और नगर निगम ने अपनी-अपनी जमीन की आख्या प्रस्तुत करें। इस दौरान रेल प्रशासन ने उसकी दुकान को नहीं छुआ था। दोनों विभाग ने अपनी रिपोर्ट बनाकर कोर्ट को भेज दी है। दोनों विभाग के अधिकारियों ने कहा कि कोर्ट का निर्णय मान्य होगा।

सरकारी जमीन पर कब्जे का आरोप एसडीएम को ग्रामीणों ने दिया ज्ञापन

तिलहर, अमृत विचार: गढ़िया रंगीन के जरगवां गांव के ग्रामीणों ने कुछ लोगों पर सरकारी जमीन पर घूरा डालकर कब्जा करने और सरकारी पेड़ों को काटने का आरोप लगाते हुए एसडीएम को ज्ञापन सौंपा। मंगलवार को बसपा नेता अशोक यादव परिवर्तन के नेतृत्व में ग्रामीण तहसील पहुंचे। अशोक यादव ने बताया कि गांव में खाद के गड्ढों की जमीन है, जिस पर वर्षों से ग्रामीण घूरा डालते आ रहे हैं, लेकिन कुछ लोगों ने इस जमीन पर अवैध कब्जा कर लिया है और खलियान की जमीन पर खड़े हरे पेड़ों को भी काट दिया है। नायब तहसीलदार पूनम मधुकर को दिए ज्ञापन में पूरे मामले की जांच कर आरोपियों पर कार्रवाई की मांग की गई। इस दौरान महेश पाल, राजबहादुर, प्रेम पाल, सुधीर, राजेंद्र कुमार, विकास, नन्हेंलाल, ओमेंद्र पाल, रिंकू और वेद प्रकाश मौजूद रहे।

शांति भंग में दो लोगों का किया चालान

शाहजहांपुर, अमृत विचार: मोहल्ला ताहवरगंज में पुराने मुकदमे में समझौता करने से इंकार करने पर बुजुर्ग बलवीर को लोहे की राड से पीटकर अधमरा किए जाने के मामले में हत्या के प्रयास की धाराओं में दर्ज रिपोर्ट के दो आरोपियों का पुलिस ने महज शांति भंग में चालान किया है। थाना रामचंद्र मिशन क्षेत्र के मोहल्ला ताहवरगंज निवासी सचिन गुप्ता ने दर्ज कराई रिपोर्ट में बताया कि उनके पिता बलवीर गुप्ता का कौशल गुप्ता से विवाद चल रहा है। इस आशय से सेहरामऊ दक्षिणी थाने में मुकदमा दर्ज है। रविवार को दोपहर 12 बजे बलवीर बाल कटवाने जा रहे थे। तभी कौशल अपने दो साथियों के साथ वहां आ गया और मुकदमा वापस लेने का दबाव बनाने लगा। मना करने पर सभी ने एक राय होकर उन्हें लोहे की रॉड से जमकर पीटा। मारपीट में वे गंभीर रूप से घायल हो गए। मामले में कौशल गुप्ता, मुन्ना पाल गुप्ता, रामरतन गुप्ता के खिलाफ हत्या के प्रयास की धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की गई थी। मंगलवार को पुलिस ने दो आरोपी कौशल गुप्ता व रामरतन गुप्ता को गिरफ्तार कर लिया गया है। दोनों का दर्ज धाराओं में चालान करने के बजाय शांति भंग में चालान किया गया है।

डेंटल एसोसिएशन के अध्यक्ष चुने गए डॉ. रजत

जानकारी देते नव मनोनीत जिलाध्यक्ष डा. रजत अग्रवाल व अन्य। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

● झोलाछाप से बचने को जारी किया जाता है प्रमाण पत्र, फर्जी डॉक्टरों से इलाज न कराने की नसीहत

अमृत विचार : इंडियन डेंटल एसोसिएशन के हुए चुनाव में डा. रजत अग्रवाल को जिलाध्यक्ष, डा. अंकित अग्रवाल सचिव और डा. हर्ष विजय सिंह को कोषाध्यक्ष चुना गया।

मनोनीत अध्यक्ष रजत अग्रवाल ने कहा कि एसोसिएशन मरीजों के हित में साल भर तक जगह जगह निःशुल्क दंत परीक्षण शिविर लगाकर उनका मुफ्त इलाज करेगी। कोशिश होगी कि रोगियों का इलाज सस्ते दाम पर करें। वैसे भी दंत चिकित्सक इलाज में रियायत बरतते हैं। सचिव अंकित ने कहा कि एसोसिएशन की ओर से गंभीर से गंभीर बीमारी का इलाज अब जनपद में होने लगा है। ऑपरेशन से लेकर फिक्स बत्तीसी तक यहां लगाई जाने लगी है। पहले रोगियों को बाहर जाना पड़ता था। कोषाध्यक्ष हर्ष विजय सिंह ने कहा कि जिले में 45 चिकित्सक दंत रोगियों की सेवा में तत्पर हैं। झोलाछाप से बचाव के लिए एसोसिएशन की ओर से प्रमाणपत्र जारी किया जाता है। हर डॉक्टर के क्लीनिक पर प्रमाण पत्र लगा मिलेगा। जो नहीं लगाएगा, समझ लें वह फर्जी यानी झोलाछाप है। ऐसे डॉक्टर से बचना ही बेहतर है।

न्यूज ब्रीफ

15 जनवरी को अवकाश, 28 नवम्बर को खुलेंगे न्यायालय

बदायूं, अमृत विचार : जनपद न्यायाधीश ने बताया कि उच्च न्यायालय, इलाहाबाद आदेशानुसार 15 जनवरी 2026 (गुरुवार) को मकर संक्रांति के पर्व जिला न्यायालयों में अवकाश घोषित किया गया है। मकर संक्रांति पर अवकाश होने की वजह से एक चतुर्थ शनिवार को कार्य दिवस घोषित कार्य किया जाएगा। इस घोषित अवकाश के एवज में 28 नवम्बर 2026 चतुर्थ शनिवार को समस्त न्यायालय न्यायिक कार्य सम्पादित किये जाने हेतु खुले रहेंगे। इसके अलावा 14 जनवरी का अवकाश डीएम ने रद्द कर दिया है। 15 फरवरी को अवकाश घोषित किया है।

दिव्यांगों को दुकान के लिए 30 हजार रुपए की मिलेगी सहायता

बदायूं, अमृत विचार : जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी प्रणव कुमार पाठक ने बताया कि दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग में दुकान निर्माण/संचालन योजना चल रही है। योजना के तहत जनपद के ऐसे दिव्यांगजन जिनकी दिव्यांगता 40 प्रतिशत अथवा इससे अधिक है, तथा स्वरोजगार करने के इच्छुक हैं व जिन्हे पूर्व में इस योजना का लाभ नहीं मिला है, ऐसे दिव्यांगजन को 10,000 रूपये दुकान संचालन के लिए व 20,000 रूपये दुकान निर्माण किये जाने के लिए दिए जाते हैं। इसके लिए उन्हें ऑनलाइन आवेदन करना होगा।

युवाओं ने मनौना धाम तक शुरू की पदयात्रा

नूरपुर पिनौनी, अमृत विचार : भारत को ''हिंदू राष्ट्र'' घोषित करने और गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किए जाने की मांग को लेकर युवा ने मनोना धाम के लिए पदयात्रा शुरू की है। पदयात्रा शुरू होने से पूर्व लोगों ने उनका फूल माला पहनाकर स्वागत किया। पदयात्रा में कालू ठाकुर, मन्नू ठाकुर और देवेश कुमार सहित अन्य युवा शामिल हैं।

पुलिस ने महिलाओं को किया जागरूक

कुंवरगांव, अमृत विचार : मिशन शक्ति फेज-5 अभियान के तहत मंगलवार को थाना पुलिस ने पंडित जवाहरलाल नेहरू कॉलेज सहित कस्बे में जागरूकता अभियान चलाया। महिला पुलिस द्वारा छात्राओं और महिलाओं को सुरक्षा के प्रति जागरूक किया।

आसफपुर का ग्राम विकास अधिकारी निलंबित

ग्राम विकास अधिकारी कई माह से चल रहा अनुपस्थित

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- समीक्षा बैठक में भी ग्राम विकास अधिकारी हो रहा था अनुपस्थित,
- सीडीओ ने डीडीओ को दिए कार्रवाई के आदेश
- उच्चाधिकारी के निर्देश का नहीं कर रहा था पालन

अमृत विचार: ब्लॉक आसफपुर में कार्यरत ग्राम विकास अधिकारी विगत कई माह से अनुपस्थित है। उनके जरिये उच्चधिकारियों के आदेशों का पालन नहीं किया जा रहा है। इस पर नाराजगी व्यक्त करते हुए सीडीओ ने उन्हें निलंबित कर दिया है। इसके आदेश डीडीओ को दिए गए हैं।

मंगलवार को मुख्य विकास अधिकारी केशव कुमार ने कलेक्ट्रेट स्थित सभागार में 50 लाख रुपए या उससे अधिक परियोजनाओं को लेकर समीक्षा की। समीक्षा के दौरान पता चला कि आसफपुर ब्लॉम में कार्यरत ग्राम विकास अधिकारी जिला स्तर की बैठकों में गत माहों में बिना बताए अनुपस्थित हैं।इस पर सीडीओ ने नाराजगी जाहिर करते हुए डीडीओ को निलंबित कर जांच करने के आदेश दिए हैं। इस दौरान सीडीओ ने अधिकारियों से कहा कि वह संबंधित निर्माण कार्यों का निरीक्षण करें। कार्यदायी संस्थाओं से समन्वय स्थापित करते हुए निर्माण कार्यों को समय से पूरा कराएं। उन्होंने सभी कार्य पूरा कराने के लिए निर्देशित किया।

उन्होंने बताया किया कि 24 जनवरी को मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत कार्यक्रम का आयोजन होना है। अधिक से अधिक आवदेन कराए जायं। बीएसए को आदेश दिए कि वह विद्यालयों में बच्चों उपस्थिति सुनिश्चित करें। मध्यान्ह भोजन की समय-समय पर जांच की जाए। जिला कार्यक्रम अधिकारी को पोषाहार का वितरण एप पर फैसियल रिकॉग्निशन सिस्टम (एफआरएस) के माध्यम से कराए जाने को कहा गया। प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना में लाभार्थियों का चिन्हांकन जल्द से जल्द पूर्ण करने को कहा गया।

निर्माणाधीन 3 आंगनबाड़ी केंद्रों का निर्माण कार्य भी जल्द पूर्ण करने के निर्देश दिए। मुख्य पशुधन अधिकारी को सहभागिता योजना में पशु पालकों को दिए गए निराश्रित गोवंशों का सत्यापन पूर्ण करने के आदेश दिए बए। इस अवसर पर मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ समदर्शी सरोज, मुख्य चिकित्सा अधीक्षक जिला पुरुष चिकित्सालय डॉ अमित वार्ष्णेय सहित अन्य विभागीय अधिकारी मौजूद रहे।

दमनकारी नीतियों के खिलाफ लगाई जाएंगी जन अदालतें

बदायूं, अमृत विचार : आशा कार्यकर्ताओं की हड़ताल मंगलवार को 30 वें दिन भी जारी रही। हड़ताल स्थल पर आशा कार्यकर्ताओं ने राज्य और केंद्र सरकार को खुली चुनौती देते हुए कहा कि अब न्याय के लिए जन अदालत लगायी जाएगी जिसमें लोगों की राय के साथ सरकार को घेरा जाएगा।

आशा कार्यकर्ता पिछले एक महीने से अपनी विभिन्न मांगों को लेकर कलेक्ट्रेट पर हड़ताल पर बैठी हैं। लेकिन जिला प्रशासन उनकी समस्याओं को सुनने को तैयार नहीं है। राज्य सरकार को भी पत्र भेजा जा चुका है। केंद्र सरकार को भी अवगत करा दिया गया है मगर दोनों सरकारें कान में तेल डाल कर बैठी हैं आशा कार्यकर्ता कड़ाके की ठंड में खुले आसमान के नीचे अपने हक और अधिकार के लिए लड़ाई लड़ रही हैं। अब आशा कार्यकर्ता जन अदालतें लगाकर अपनी समस्या रखेंगीं। जिला अध्यक्ष जौली वैश्य ने कहा कि प्रदेश सरकार कितनी असंवेदनशील हैं इसका अंदाजा लगाया जा सकता है।

अंडरपास की सड़कों का निर्माण शुरू

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- ओवरब्रिज के निकट चार महीने से बन रहा है अंडरपास
- दोनों ओर की सड़कें बनने के बाद लाइन के नीचे होगी खुदाई

अंडरपास की निर्माणाधीन सड़क ● अमृत विचार

अमृत विचार : रेलवे स्टेशन और ओवरब्रिज के बीच में चार महीने से बन रहे रेलवे के अंडरपास की एक ओर की सड़क तैयार होने के बाद अब दूसरी ओर की सड़क का निर्माण शुरू कर दिया गया है। अगले एक महीने में अंडरपास की सड़क तैयार हो जाएगी। इसके बाद रेल लाइन के नीचे खुदाई की जाएगी। मार्च तक अंडरपास बन कर तैयार करने की तैयारी है।

पिछले चार महीने से रेलवे स्टेशन और ओवरब्रिज के बीच रेलवे प्रशासन बड़ा अंडरपास बना रहा है। इसके बनने से रेलवे फाटक पर वाहनों का लगने वाला जाम खत्म हो जाएगा। इस समय जब ट्रेन के आने का समय होता है तो रेलवे फाटक बंद कर दिया जाता है। ट्रेन के गुजरने के बाद फाटक खोला जाता है जिसके बाद वाहन निकल पाते हैं। हालांकि रेलवे क्रासिंग के ऊपर ओवरब्रिज कई साल पहले बनाया जा चुका है। बड़े और भारी वाहन पुल से गुजरते हैं जबकि शहरी वाहन रेलवे फाटक को पार कर आते जाते हैं। इस समस्या से निजात पाने को रेलवे प्रशासन ने यहां पर अंडरपास बनाने का निर्णय लिया। उसके बाद पिछले चार महीने से अंडरपास का निर्माण किया जा रहा है। अंडरपास बनाने वाली कंपनी ने पहले प्लेटफार्म दो की ओर फाउंडेशन तैयार कर अंडरपास की सड़क तैयार की। उसके बाद प्लेटफार्म एक की ओर जेसीबी से खुदाई करने के बाद सड़क का निर्माण शुरू कर दिया है।

अंडरपास बनाने वाली कंपनी के जिम्मेदारों का कहना है कि अगले एक महीने में सड़क तैयार कर दी जाएगी। उसके बाद रेल लाइन के नीचे खुदाई की जाएगी। नीचे की खुदाई करने से पहले रेलवे को पूरी तैयारी करनी होगी उसके बाद ही खुदाई शुरू की जाएगी।

कंपनी का कहना है कि मार्च तक अंडरपास का निर्माण पूरा करना है इसलिए रात दिन काम किया जा रहा है। जो सड़क सात दिन से तैयार की जा रही है उसको रात में तैयार किया गया है। दिन में सड़क की दोनों साइडों को बनाया जाता है जिससे सड़क निर्माण कार्य जल्द पूरा किया जा सके।

भय के साए में जी रहे दुकानदार

ओवरब्रिज के नीचे रेलवे लाइन के निकट जिस जगह पर अंडरपास का निकास किया जाएगा वहां पर अभी अब दुकानदारों को भय है कि रेलवे प्रशासन कहीं दुकानों को ध्वस्त न कर दे। इस भय को लेकर कुछ दुकानदार अपनी दुकानें बंद कर घर बैठ गए हैं जबकि दर्जन भर से अधिक दुकानदार भय के साए में बैठे हैं। इस मामले पर रेलवे प्रशासन ने चुप्पी साध रखी है।

साहबगंज मंदिर पर भंडारा में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

भंडारे का प्रसाद लेने को जुटे लोग ● अमृत विचार

संवाददाता, बिल्सी

अमृत विचार: नगर के साहबगंज चौराहे पर स्थित शिव मंदिर में मंगलवार को माघ माह के उपलक्ष्य में श्रद्धालुओं द्वारा एक विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। भंडारे में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने पहुंचकर बाबा का प्रसाद ग्रहण किया और पुण्य लाभ अर्जित किया। भंडारा शुरू करने से पूर्व पहले भोलेनाथ के मंदिर में भक्तों ने भोग लगाया और उसके बाद कन्याओं को सहभोज कराया। उसके बाद प्रसाद का वितरण शुरू किया गया। इस अवसर पर मंदिर परिसर भक्ति रस में सराबोर रहा। इसको सफल बनाने में नरेंद्र कुमार सिंह, विनय सिंह, सोनू सिंह, अजय माहेश्वरी, कुलदीप गुप्ता, वंश गोस्वामी, कुलदीप ठाकुर आदि का विशेष सहयोग रहा।

छत्तीस घंटे से बंद है बिसौली चीनी मिल, गन्ना हुआ खत्म

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- किसानों ने बनाई दूरी, नहीं पहुंचा रहा गन्ना
- यदु शुगर मिल नो केन के चलते तीन दिन से है बंद

बिसौली की यदु शुगर मिल ● अमृत विचार

अमृत विचार : पिछले साल का गन्ना मूल्य भुगतान समय से पूरा नहीं करने के कारण किसानों ने यदु शुगर मिल से दूरी बना ली है जिससे पिछले तीन दिन से चीनी मिल नो केन के चलते बंद है। मिल परिसर में मात्र 10 से 11 हजार क्विंटल गन्ना ही पड़ा है जो मिल चलाने को पर्याप्त नहीं है। गन्ना संकट से जूझ रही चीनी मिल गांव गांव अपने गन्ना किसानों से संपर्क कर रही है।

जनपद की सबसे बड़ी चीनी मिल यदु शुगर मिल है। जबकि शेखूपुर की सहकारी चीनी मिल की गन्ना पेराई क्षमता मात्र 13 हजार क्विंटल है। हालांकि सबसे पुरानी चीनी मिल है लेकिन मिल का प्रबंधन ठीक होने के कारण गन्ना किसानों को परेशानी नहीं हो रही है। जबकि बिसौली चीनी मिल प्रबंधन द्वारा गन्ना किसानों की समस्याओं को नजरअंदाज करना अब भारी पड़ रहा है। चीनी मिल ने 2024 और 2025 गन्ना पेराई सत्र का पूरा भुगतान अभी तक नहीं किया है। इससे गन्ना किसानों को परेशानी हो रही है।

समय पर भुगतान नहीं करने पर शासन से लेकर जिला प्रशासन तक ने मिल प्रबंधन के खिलाफ कार्यवाही करने की हिदायत दी है। इस हिदायत के बाद भी गन्ना किसानों को उनका पैसा नहीं मिल रहा है। इसके बाद अब गन्ना किसानों ने मिल से दूरी बनानी शुरू कर दी है। पिछले तीन दिन से नो केन के चलते मिल बंद है। मिल परिसर में गन्ना बहुत कम है जिससे मिल का पहिया नहीं घूम पा रहा है। बिसौली चीनी मिल इस गन्ना पेराई सत्र के दौरान गन्ना संकट से जूझ रही है।

मिल परिसर में इस समय मात्र 10 से 11 हजार क्विंटल गन्ना ही पड़ा है। गन्ने की कमी को लेकर मिल प्रबंधन परेशान है, इसलिए मिल के के कर्मचारियों ने अब गांव-गांव घूमना शुरू कर दिया है। अपने क्षेत्र के गन्ना किसानों से संपर्क कर रहे हैं और मिल पर जल्द गन्ना पहुंचाने की अपील कर रहे हैं।

नौ क्रय केंद्र कम होने से आया गन्ना संकट

यदु शुगर मिल के गुलड़िया क्षेत्र के नौ गन्ना क्रय केंद्र गन्ना विभाग ने शासन के निर्देश पर दूसरी चीनी मिल को आवंटित कर दिए जिससे यदु शुगर मिल पर गन्ना की कमी हो रही है। गुलड़िया क्षेत्र के बड़े किसान ही बिसौली चीनी मिल को 50 प्रतिशत गन्ने की सप्लाई करते थे जिससे मिल मार्च तक चलती थी। लेकिन इस बार मिल द्वारा समय से गन्ना किसानों का भुगतान न करने के कारण नौ क्रय केंद्र दूसरी चीनी मिलों को दे दिए गए हैं। अब गन्ना किसान खुद ही बिसौली चीनी मिल से दूरी बना रहे हैं।

> बिसौली चीनी मिल पिछले 36 घंटे से नो केन के चलते बंद है। गन्ना किसानों ने मिल से दूरी बना ली है। मिल द्वारा पिछले साल का पूरा भुगतान समय से नहीं किया गया जिससे किसानों को परेशानी हो रही है इसलिए गन्ना किसानों नं अब अपना गन्ना बिसौली चीनी मिल को देना बंद कर दिया है। मिल के पास मात्र कुछ हजार क्विंटल गन्ना है जो अपर्याप्त है, इसलिए बिसौली मिल गन्ना संकट से जूझ रही है।
>
> **अशर्फी लाल**-जिला गन्ना अधिकारी

सीजन की सबसे ठंडी गुजरी रात

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- सुबह के समय छाया कोहरा, पछुआ हवाओं ने बढ़ाई गलन
- चटख धूप के बाद भी बरकरार है गलन, ऊपर नहीं उठ पा रहा पारा

अमृत विचार: जिले में मौसम साफ होने के बाद भी ठंड कहर ढहा रही है। शीतलहर ने ऐसा कोहराम मचा रखा है कि तापमान ऊपर ही नहीं उठ पा रहा है। शीतलहर की वजह से सोमवार मंगलवार की रात सबसे ठंडी गुजरी। न्यूनतम तापमान तीन डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। लोगों की कंपकंपी बंधी रही। सुबह के समय घना कोहरा होने की वजह से यातायात भी प्रभावित रहा। रोड पर वाहन रेंगते हुए नजर आए। आठ बजे के बाद कोहरा हटने के साथ ही धूप खिल उठी। पूरे दिन चटख धूप निकलने के बावजूद पछुआ हवा के चलने से गलन बरकरार रही। अधिकतम में 21 डिग्री तो न्यूनतम तापमान 5 डिग्री दर्ज किया गया।

साल की शुरुआत से सर्दी अपने चरम पर है। दस दिन कोहरा और शीतलहर लोगों को परेशान करता रहा। अब शीतलहर से हाल बेहाल चुका है। बीते सोमवार को दिन भर चटक धूप खिली। शाम को गलन अधिक बढ़ गई। रात के समय तापमान नीचे चला गया। रात के समय न्यूनतम तापमान 3 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। जिसकी वजह से बाजार जल्द ही बंद हो गया। सड़कों पर सन्नाटा छा गया। सुबह के समय स्थित अलग ही दिखाई दी। सुबह वातावरण में घना कोहरा छाया हुआ था। रोड पर वाहन रेंगते हुए चल रहे थे। दृश्यता भी कम रही। 50 मीटर तक दिखाई नहीं दे रहा था। सुबह आठ बजे के बाद कोहरा हटने के बाद सूरज की किरणें दिखाई दी। इसके बाद दिन भर चटक धूप खिल उठी। लेकिन शीतलहर परेशान करती रही। धूप खिलने पर घरों में दुबके बैठे बुजुर्गों और बच्चों के लिए दिन राहत भरा रहा। धूप के बावजूद घरों और कमरों में नमी और गलन बनी रही, जिससे पूरी तरह से ठंड से राहत नहीं मिल सकी। शाम होते ही गलन बढ़ गई। मौसम के जानकारों की मानें तो पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से मौसम में बदलाव हो रहा है। इसके चलते आने वाले दिनों में कोहरे की तीव्रता में कमी आने और ठंड से कुछ हद तक राहत मिलने की संभावना जताई जा रही है। दिन में मौसम साफ होने के बाद भी न्यूनतम तापमान 5 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 21 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

कस्बे में हुई बीएसपी की बैठक

उसहैत, अमृत विचार: कस्बे में बीएसपी के नगर अध्यक्ष जितेंद्र कुमार गौतम के आवास पर महत्वपूर्ण बैठक हुई। जिसमें बसपा सुप्रीमो का जन्मदिन मनाए जाने पर चर्चा हुई। बीएसपी नेता आतिफ खां जख्मी और विधानसभा दातागंज अध्यक्ष अभिषेक भारती ने कार्यकर्ताओं को बताया कि 15 जनवरी को पूर्व मुख्यमंत्री व बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती के जन्मदिन मनाया जाएगा।

इस दिन बरेली में जनकल्याणकारी सम्मेलन कार्यक्रम होगा। पदाधिकारियों ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपील की। इस मौके पर सतीश कुमार, नन्हें लाल, रामरतन, अखिलेश कुमार, प्रताप सिंह, भूरे सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

उझानी की घटना के बाद जारी की गई चेतावनी

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- कमरा बंद कर न जलाएं रूम हीटर, खिड़की रखें खुली
- खतरे से खाली नहीं है कमरा बंद कर रूम हीटर जलाना

रूम हीटर न जलाने का सुझाव देते डा. एसएम कमल। ● अमृत विचार

अमृत विचार : उझानी की मैंथा फैक्ट्री में रात को रूम हीटर जला कर सो रहे तीनो सुरक्षा गार्डों की दम घुटने से मौत के बाद चिकित्सकों ने हिदायत दी है कि लोग रात को कमरा बंद कर रूम हीटर न जलाएं। कमरे के गेट और खिड़कियां खुली रखें जिससे गैस बाहर निकल सके। यदि कमरा बंद होगा तो रूम हीटर जानलेवा साबित हो सकता हैं।

उझानी की मैंथा फैक्ट्री के तीन सुरक्षा गार्ड सोमवार की रात को कमरे को बंद कर उसके रूम हीटर जला कर सो रहे थे। जिससे दम घुटने से उनकी मौत हो गयी। इस मौत को लेकर चिकित्सकों ने एडवाइजरी जारी करते हुए कहा कि रात को कमरा बंद कर रूम हीटर जलाना खतरे से खाली नहीं है। वरिष्ठ फिजिशियन डा. एसएम कमल ने कहा कि कई बार इस तरह की दर्दनाक घटनाएं हो चुकी है फिर भी लोग अपने आराम को लेकर लापरवाही करते हैं। बताया कि यदि कमरे में हीटर जल रहा है तो गेट और खिड़की खुली रखें जिससे गैस बाहर निकलती रहे। यदि कमरा पूरी तरह बंद होगा तो रूम हीटर जानलेवा साबित हो सकता है।

उन्होने बताया कि रूम हीटर जलने के बाद यदि कमरा बंद है तो कमरे में कार्बन मोनोऑक्साइड बनता है जो श्वास लेने में दिक्कत करता है। यदि खिड़की खुली है तो वह बाहर निकल जाएगा और यदि खिड़की बंद है तो कार्बन मोनोऑक्साइड से दम घुट जाती है जिससे आदमी की मौत हो जाती है। बताया कि इससे बहुत ही जल्द मौत होती है।

व्यक्ति को नींद में पता ही नहीं चलता है उसकी दम घुटने से मौत हो जाती है। इस तरह की अनेकों घटनाएं सामने आ चुकी हैं। उझानी में हुआ हादसा भी इसी तरह के संकेत दे रहा है।

बताया कि रूम हीटर के जलते समय बाहर की हवा कमरे में आनी चाहिए।कमरे को एयरटाइट न रखें, रात को गेट खोल कर बाहर आएं और कुछ देर बाहर ही रहें। इस तरह की सावधानियां करनी चाहिए।

अधिकांश चिकित्सकों का कहना है कि सर्दी के मौसम में रात को रूम हीटर जलाना गलत है। ऐसे संसाधनों से दिक्कत होती है। इसलिए सर्द मौसम गर्म कपड़ों से गुजारें व दूसरों को भी यह सलाह दें। लोग आरामदायक नींद के चक्कर में सबकुछ खो बैठते हैं इससे बचा जाना चाहिए।

उपलब्धि जिले के बॉ स्कूलों में शुरू होने वाला है आईसीटी और एआई लैब का संचालन

अब तकनीकी आधारित शिक्षा में दक्ष हो सकेंगी बॉ स्कूलों की छात्राएं

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

सालारपुर ब्लॉक स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय ● अमृत विचार

- छात्राओं को एआई आधारित कोडिंग, डिजिटल टूल्स, सॉफ्टवेयर आदि का मिलेगा व्यावहारिक ज्ञान

अमृत विचार: जनपद में संचालित कस्तूरबा गांधी आवासीय में अध्ययनरत छात्राएं अब तकनीकी शिक्षा का ज्ञान अर्जित करेंगे। वह कोडिंग, डिजिटल टूल्स और एआई आधारित सॉफ्टवेयर के माध्यम से व्यवहारिक शिक्षण कार्य करती हुई दिखाई देगी। जिले के 16 बॉ स्कूलों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) लैब का संचालन किया जाएगा। यह लैब लगभग बनकर तैयार हो चुकी हैं। इनमें उपकरण फिट कराए जा रहे हैं। वायरिंग आदि का काम भी चल रहा है।

जिले में 18 कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय संचालित हैं। इनमें से 16 स्कूल उच्चीकृत हो चुके हैं। बिल्डिंग बनकर तैयार हो चुकी है। इन स्कूलों में छात्राओं के ठहरने के लिए छात्रावास और शिक्षण कार्य के लिए कक्ष बन चुके हैं। इनके अलावा इन स्कूलों में आधुनिक लैब भी तैयार की जा रही हैं। आधुनिक लैब का काम अंतिम चरण में पहुंच चुका है। इन स्कूलों में तैयार की जा रही लैब में लगने वाले उपकरण पहुंच चुके हैं। सभी स्कूलों में कंप्यूटर सिस्टम, इंटरैक्टिव फ्लैट पैनल, इनवर्टर व बैटरी, एचडी कैमरा, पीए सिस्टम (माइक, रिसीवर व स्पीकर), मल्टीफंक्शन प्रिंटर, वाईफाई राउटर, 128 जीबी पेन ड्राइव, 55 इंच स्मार्ट टीवी सहित स्मार्ट क्लास और आईसीटी-एआई लैब से संबंधित सभी सामग्री उपलब्ध करा दी गई है। लैब का संचालन नए शैक्षिक सत्र से शुरू हो जाएगा। लैब के शुरू होने से स्कूल की छात्राओं को सीधे तौर पर लाभ मिलेगा।

> आधुनिक लैब का काम अंतिम चरण में है। जल्द ही उपकरणों का इंस्टालेशन कराया जाएगा। इंस्टॉलेशन के बाद स्मार्ट क्लास और आईसीटी-एआई लैब के माध्यम से कक्षाओं का संचालन शुरू कर दिया जाएगा। आईसीटी और एआई से जुड़ा प्रशिक्षण छात्राओं को तकनीकी रूप से दक्ष बनाएगा।
>
> **वीरेंद्र कुमार सिंह**, बीएसए

छात्राओं को मिलेगा व्यवहारिक प्रशिक्षण

बॉ स्कूलों में तैयार हो रही आधुनिक लैब के माध्यम से छात्राओं को कोडिंग, डिजिटल टूल्स, एआई आधारित सॉफ्टवेयर, समस्या समाधान और रचनात्मक सोच से जुड़ा व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। इससे पढ़ाई केवल पुस्तकों तक सीमित न रहकर तकनीक आधारित अनुभवात्मक शिक्षा में बदल जाएगी। छात्राओं की समझ के साथ-साथ आत्मविश्वास और नवाचार क्षमता में भी वृद्धि होगी।

छात्राओं को मिलेंगे रोजगार के बेहतर अवसर

डीसी समेकित ज्योत्सना ने बताया कि बॉ स्कूलों में आधुनिक लैब लगभग तैयार हैं। कुछ काम शेष है। उसे जल्द पूरा कर लिया जाएगा। इन लैब के माध्यम से छत्राएं आईसीटी और एआई जैसी आधुनिक तकनीकों से परिचित होंगी। छात्राओं को उच्च शिक्षा और भविष्य के रोजगार के बेहतर अवसर प्रदान होंगे। साथ ही, तकनीकी दक्षता के साथ छात्राएं नवाचार आधारित प्रोजेक्ट, डिजिटल प्रतियोगिताओं और रचनात्मक गतिविधियों में भी अपनी पहचान बना सकेंगी। लैब के माध्यम से कंप्यूटर, इंटरनेट और अन्य डिजिटल उपकरणों का सुरक्षित और प्रभावी इस्तेमाल भी छात्राएं सीखेंगी।

जाम लगाने की कोशिश में तीन गिरफ्तार

बिल्सी, अमृत विचार : कोतवाली बिल्सी पुलिस ने गुधनी-खौंसारा के पास सोमवार की रात कछला-शाहबाद हाईवे पर जाम लगाने की कोशिश कर रहे तीन लोगों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने तीनों के खिलाफ शांतिभंग की कार्रवाई करते हुए चालान किया और उन्हें न्यायालय के समक्ष पेश किया गया। कोतवाल मनोज कुमार सिंह ने बताया कि क्षेत्र के गांव गुधनी-खौंसारा के पास बेहटा गुसाई मोड़ के निकट सरकारी तालाब पर किए गए निर्माण कार्य और कथित कब्जे को हटाने की मांग को लेकर कुछ लोग सड़क जाम करने का प्रयास कर रहे थे। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई और स्थिति को नियंत्रित करते हुए जाम नहीं लगने दिया। पुलिस ने मौके से गांव के शंकर लाल, गोविंद और रामबहादुर को गिरफ्तार कर लिया। तीनों के खिलाफ शांतिभंग में चालान किया गया है।

दिव्यांग की परचून की दुकान में लगी आग

ओरछी, अमृत विचार : थाना फैजगंज बेहटा क्षेत्र के गांव मानपुर में मंगलवार तड़के एक दिव्यांग की परचून की दुकान में आग लग गई। दुकान में रखा लाखों रुपये का सामान जलकर राख हो गया। जिससे दिव्यांग के सामने परिवार के पालन पोषण का संकट हो गया। गांव मानपुर निवासी ब्रह्मचारी पुत्र प्रेम सिंह दिव्यांग हैं। वह परचून की दुकान चलाकर परिवार का पालन पोषण करते हैं। सोमवार रात वह दुकान बंद करके घर चले गए थे। अगले दिन सुबह दुकान से धुआं निकलता नजर आया। शटर खोला तो सामान में आग लगी थी। वह चिल्लाए तो ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई।

पंचम पुण्यतिथि

स्व० गिरिराज सिंह यादव (वरिष्ठ अधिवक्ता)

स्व. गिरीराज सिंह यादव (वरिष्ठ अधिवक्ता)

आपका विशाल व्यक्तित्व, सादगी, उदारता, सत्यनिष्ठा, व्यवहार हम सभी के लिए प्रेरणा का अनन्य स्रोत बना रहेगा। आपकी पंचम पुण्यतिथि पर हम सभी आपको अश्रुपूर्ण नेत्रों से श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धवनत:- श्रीमती शकुंतला देवी (अध्यक्ष, श्री राजयोग आश्रम संतोषी माता मंदिर), नीरज यादव (सचिव - श्री राजयोग आश्रम) - संतोष यादव (पूर्व पार्षद) (पुत्र-पुत्रवधू), भानू यादव- देवेन्द्र सिंह यादव (पुत्री- दामाद), अंशुमन यादव (TV9 भारतवर्ष) - मीना यादव (पुत्र-पुत्रवधू), क्षितिज यादव एडवोकेट (नि. सचिव महानगर समाजवादी पार्टी) -शिल्पी यादव (पुत्र-पुत्रवधू), शौर्य यादव, भावेश (पौत्र), इशिका, आध्या, यशस्वी, अनुष्का (पौत्री)।

प्रतिष्ठानः जय हनुमान बिल्डिंग मैटेरियल स्टोर नीरज की टाल श्री गिरिराज जी वार्जिंग स्टेशन, मणिनाथ

अमृत विचार

बरेली, बुधवार, 14 जनवरी 2026

अम्बा हैल्थ क्लीनिक

डॉ.आर.एस.सिंह
B.A.M.S.
(आयुर्वेदाचार्य)
स्त्री-पुरुष रोग विशेषज्ञ
30 वर्षों से चिकित्सा का अनुभव प्राप्त
ISO.9001:2015 Certify Tredmark Clinic

★ पतले-दुबले
★ गाल पिचके
★ कमजोर स्त्री-पुरुष
★ मोटापा व वजन बढ़ाने के लिए
परामर्श लें।

चिकित्सा जानकारी
भूख न लगना, अपच, कब्ज, गैस बनना, खाने के बाद शौचालय जाना, बच्चों का शारीरिक विकास न होना, पुलिस व फोर्स आदि नौकरी में नाप तौल में कमी होना, बच्चों का बिस्तर गीला करना, मोटे पेट व थुल-थुले व्यक्ति का वजन कम करना, कील-मुंहासे, झाइयां, सफेद दागों व सावलापन हटाना, सुन्दर दिखाना, बालों का समय से पहले झड़ना, टूटना, सफेद होना एवं गंजापन होना, खूनी व वादी बवासीर आदि सभी बिमारियों का परामर्श लें।

किसी भी प्रकार का नशा जैसे
शराब, अफीम, गुटखा, सुल्फा, गांजा बीड़ी, सिगरेट आदि नसा छुड़ाने की रोगी को बिना लाये बिना बताये जानकारी प्राप्त करें।

स्त्री-पुरुष गुप्त समस्याएं
- स्वपन दोष, शीघ्रपतन, मर्दाना कमजोरी होना
- हस्तमैथुन, धात जाने से कमी होना
- इन्द्री का ढीलापन-छोटापन व पतलापन होना
- वीर्य में शुक्राणु का कम होना
- ल्यूकोरिया, बांझपन, बच्चेदानी में रसोली होना
- यौन अंगो का ढीलापन या इच्छा कम होना
- मासिक धर्म अनियमित होना या उम्र से पहले बन्द होना

वैवाहिक जीवन को सफल बनायें अविकसित सीना को सुडौल आकर्षक बनायें
Sexually Transmitted Bacterial Disease
सुजाक, गिनोरिया, एड्स, यौन अंगो पर खुजली या छाले पड़ने पर तुरन्त डाक्टर से सम्पर्क करें
गलत फिल्में देखने व फोन पर बातें करने से या पेशाब में चिपचिपा पदार्थ निकलने पर तुरन्त सम्पर्क करें
डॉ. साहब
आपके विश्वास पर सभी बिमारियों को ठीक करने की कोशिश कर सकते हैं दावा या गारंटी नहीं दे सकते
मिलें सुबह 11 से सायं 5 बजे तक
दिनांक :-
11 जनवरी 2026, रविवार
25 जनवरी 2026, रविवार
निकट बरेली कॉलेज, होटल मोती महल काली बाड़ी चौराहा, बरेली
9837069463
7599211076

पेट्रोल पंपों पर विफल साबित हो रहा नो हेलमेट नो फ्यूल का नियम

धड़ल्ले से दिया जा रहा बगैर हेलमेट वाले दोपहिया वाहन चालकों को पेट्रोल

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार: जिले में नो हेलमेट-नो फ्यूल (हेलमेट नहीं, तो पेट्रोल नहीं) अभियान पेट्रोल पंप संचालकों की मनमानी के कारण विफल साबित हो रहा है। जिला मुख्यालय से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित पेट्रोल पंपों पर बिना हेलमेट के दोपहिया वाहन चालकों को धड़ल्ले से ईंधन दिया जा रहा है। यह हाल तब है जब हाल में ही शासन के आदेश पर डीएम, एसएसपी ने अधिकारियों को नियम को कड़ाई से पालन करने के आदेश दिए हैं। इसके बाद भी स्थिति में सुधार होता नहीं दिख रहा।

सड़क हादसों को देखते हुए हाल के दिनों में परिवहन आयुक्त किंजल सिंह ने पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों को नो हेलमेट-नो फ्यूल नियम का सख्ती से पालन कराने के आदेश दिए थे। परिवहन आयुक्त से मिले आदेश पर डीएम अवनीश कुमार राय और एसएसपी डॉ ब्रजेश कुमार सिंह ने अधिकारियों को बिना हेलमेट वालों को किसी भी पेट्रोल पंप पर पेट्रोल न दिया जाए। इस नियम का जिले में कड़ाई से लागू किया जाए। डीएम के आदेश पर संबंधित अधिकारियों के द्वारा पैट्रोल पंपों पर पहुंचकर पंप संचालकों को बिना हेलमेट वालों को पेट्रोल न दिए जाने की अपील की, साथ ही जागरूकता पोस्टर लगवाने के लिए कहा। बावजूद इसके, स्थिति में सुधार नहीं दिख रहा है। जागरूकता कार्यक्रमों के बाद भी पेट्रोल पंप संचालक अधिक बिक्री के लालच में नियमों की अनदेखी कर रहे हैं। मंगलवार को उसावां रोड स्थित रिलायंस, भारत और इंडियन पेट्रोल पंप के साथ ही शहर के अंदर संचालित पैट्रोल पंपों पर पंप के कर्मचारी बिना हेलमेट वाले दो पहिया वाहनों में पेट्रोल डालते हुए दिखाई दिए। यह स्थित शहर ही नहीं देहात क्षेत्र में संचालित पेट्रोल पंपों पर नजर आ रही है। शहर के बीचों बीच संचालित एक पेट्रोल पर कर्मचारी से नो हेलमेट-नो फ्यूल के बारे में जानकारी की तो उनका कहना था कि पंप स्वामी से ऐसे कोई आदेश नहीं मिले हैं। और न ही किसी प्रकार की जानकारी है। यही बात नवादा चौराहे पर स्थित पेट्रोल पंप पर दिखाई दी। यहां भी कर्मचारियों का कहना था कि पंप स्वामी के द्वारा आदेश मिलने पर वह बिना हेलमेट वाले वाहनों में पेट्रोल नहीं डालेंगे। पंप संचालकों के द्वारा की जा रही मनमानी के साथ साथ परिवहन विभाग के अधिकारियों के साथ साथ यातायात पुलिस भी जागरुक नहीं दिख रही। ऐसे में नो हेलमेट-नो फ्यूल का नियम जिले में धराशायी हो गया है।

बिना हेलमेट दोपहिया वाहन में पेट्रोल भरता कर्मचारी। ● अमृत विचार

- डीएम व एसएसपी बिना हेलमेट पेट्रोल वाले नियम को सख्ती से लागू करने के दे चुके हैं आदेश

पंप संचालकों के साथ बैठक कर उन्हें नो हेलमेट-नो फ्यूल के नियम से अवगत कराया जा चुका है। जागररूकता पोस्टर भी लगाने को कहा है। इसके बाद भी नियम का पालन नहीं हो रहा है। इस आदेश को जल्द ही सख्ती से लागू कराया जाएगा। -आर एल राजपूत, यातायात पुलिस प्रभारी

भगवान बुद्ध के पंचशील सिद्धांत नैतिकता की नींव

संवाददाता, बिल्सी, अमृत विचार: तहसील क्षेत्र के गांव बांस बरौलिया में सम्राट अशोक महान जनकल्याण समिति की ओर से आयोजित आठ दिवसीय बुद्ध कथा किया जा रहा है जिसका पूर्व जिला पंचायत सदस्य ममता शाक्य ने फीता काटकर आरंभ कराया।

इस दौरान पूर्व जिला पंचायत सदस्य ने कहा कि भगवान बुद्ध के पंचशील सिद्धांत बौद्ध नैतिकता की नींव हैं, जिनका पालन कर संयमित और सदाचारी जीवन जिया जा सकता है। उन्होंने कहा कि भगवान बुद्ध का अष्टांगिक मार्ग, मध्यम मार्ग और पंचशील सिद्धांत हमें वर्तमान में जीने, क्रोध का त्याग करने और करुणा के साथ जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देते हैं। मौर्य, शाक्य, कुशवाहा, सैनी समाज के जिलाध्यक्ष रामेश्वर शाक्य ने कहा कि मनुष्य का मन ही उसके जीवन की दिशा तय करता है। भगवान बुद्ध ने कहा है कि हम जो सोचते हैं, वही बन जाते हैं। उन्होंने शिक्षा पर विशेष जोर देते हुए कहा कि सभी को अपने बच्चों की शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए। इस मौके पर गजेंद्र सिंह तोमर, मुकेश चंद्र मौर्य, महीपाल मौर्य, अमर सिंह, श्रीपाल, किशुनलाल, भगवान सिंह शाक्य आदि मौजूद रहे।

पिंडौल में निकली भव्य कलश यात्रा, जयकारे लगे

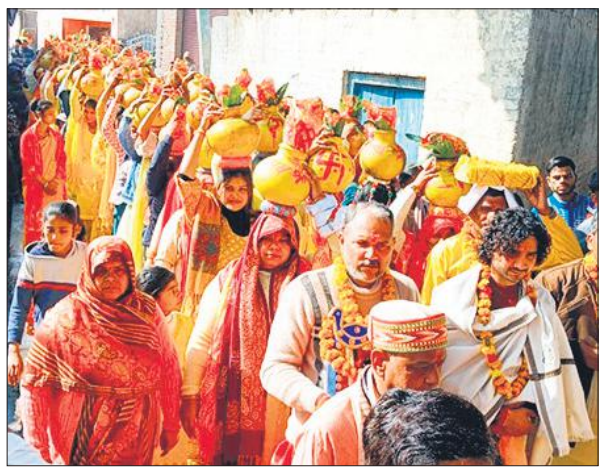

शोभायात्रा में शामिल श्रद्धालु। ● अमृत विचार

संवाददाता, बिल्सी

अमृत विचार: तहसील क्षेत्र के गांव पिंडौल में स्थित प्राचीन शिव मंदिर परिसर में मंगलवार को श्रीराम कथा का आरंभ हुआ। इससे पूर्व पीले वस्त्र धारण किए महिलाओं ने पूरे गांव में भव्य कलश यात्रा निकाली। सिर पर कलश धारण कर मंगल गीत गाते हुए निकली महिलाओं का ग्रामीणों ने जगह-जगह पुष्पवर्षा कर भव्य स्वागत किया।

कलश यात्रा गांव के प्रमुख मार्गों से होती हुई कथा स्थल पर पहुंची, जहां विधि-विधान के साथ कलश स्थापित किए गए। इसके बाद कथा वाचक गौरव देव शर्मा ने राम कथा का श्रवण किया। कथा वाचक ने भगवान श्रीराम के आदर्श चरित्र, मर्यादा और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। कथा श्रवण के दौरान श्रद्धालु भावविभोर नजर आए।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में ग्रामीण, महिला श्रद्धालु एवं आयोजन समिति के सदस्य मौजूद रहे। पूरे गांव में धार्मिक माहौल बना रहा और जय श्रीराम के उद्घोष से वातावरण भक्तिमय हो गया। आयोजन को लेकर ग्रामीणों में खासा उत्साह देखा गया।

छात्राओं ने हेलमेट पहनने को किया जागरूक

दो पहिया वाहन चालक को हेलमेट पहनने को जागरूक करती छात्राएं। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार: गिन्दो देवी महिला महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत छात्राओं ने सड़क सुरक्षा संबंधी जागरुकता अभियान चलाया। छात्राओं ने बिना हेलमेट दोपहिया वाहन चला रहे वाहन चालकों को रोककर उन्हें हेलमेट पहनने को जागरूक किया।

जागरुकता कार्यक्रम कॉलेज की प्राचार्य प्रोफेसर सरला चक्रवर्ती के संरक्षण में चलाया गया। एनएसएस स्वयंसेविकाओं ने बिना हेलमेट दोपहिया वाहन चला रहे वाहन चालकों को रोककर उन्हें हेलमेट पहनने के महत्व के बारे में जागरूक किया। उन्होंने बताया कि हेलमेट पहनना न केवल कानूनी अनिवार्यता है, बल्कि यह जीवन की सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है। अभियान के दौरान छात्राओं ने वाहन चालकों से अपील की कि वे अपने व अपने परिवार की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सदैव हेलमेट का प्रयोग करें।

सिरसौली से जिरौली तक बनाई जाए पक्की सड़क

- भाकियू ने पंचायत कर सरकारों को कोसा, संघर्ष करने को दिलाई शपथ

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : पन्द्रह सौ मीटर सड़क निर्माण कराने की मांग को लेकर अब भाकियू ने सिरसौली गांव में मोर्चा खोल दिया है। आजादी के बाद से गांव के लोगों को सड़क नहीं मिली है। कच्चे रास्ते से सैकड़ों लोग आते जाते हैं जिसके बाद अब दर्जनों गांवों के लोगों ने जिला प्रशासन के खिलाफ आंदोलन शुरू कर दिया है। नायब तहसीलदार ने मौके पर पहुंच कर कच्ची सड़क देखी और ग्रामीणों का ज्ञापन लेने के बाद जल्द काम कराने का आश्वासन दिया।

ब्लॉक उझानी के गांव सिरसौली से लेकर जिरोली तक पन्द्रह सौ मीटर का कच्चा रास्ता है। इस रास्ते पर बारिश में जलभराव हो जाता है जिससे ग्रामीणों को आने जाने में भारी परेशानी होती है। इस बार भारतीय किसान यूनियन टिकैत के मंडल प्रवक्ता राजेश कुमार सक्सेना ने आंदोलन शुरू कर दिया। कई गांवों के लोगों ने सिरसौली गांव में प्रदर्शन किया। ग्रामीणों के प्रदर्शन की सुचना पर मौके पर पहुंचे नायब तहसीलदार ने ग्रामीणों को शांत किया। भाकियू ने नायब तहसीलदार को ज्ञापन सौंपा। किसान पंचायत को संबोधित करते हुए राजेश सक्सेना ने कहा कि देश को आजादी मिले 74 साल हो चुके हैं, मगर इस गांव को पक्की सड़क नहीं मिली है। ग्रामीण आज भी कच्चे दल दल रास्ते से गुजरने को मजबूर हैं। लेकिन अब ग्रामीण सड़क पर उतर चुके हैं। सड़क निर्माण करा कर ही दम लेंगे। मंडल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष चौ. सौदान सिंह ने कहा कि में 80 वर्ष का बूढ़ा हूं, फिर भी इस नेक काम के लिए भूख हड़ताल पर बैठने को तैयार हूं। कहा कि सिरसौली से जिरौली तक 1500 मीटर मार्ग का निर्माण कराके ही दम लूंगा। उन्होंने जनसमूह को शपथ दिलाई कि जब तक सड़क निर्माण नहीं होगा तब तक चैन से नहीं बैठेंगे। धरना प्रदर्शन में सिरसोली गांव के रमेश सिंह फौजी, पूरन लाल कुशवाहा, विश्राम सिंह कुशवाहा, सत्यवान मौर्य, विजय कुमार शाक्य, रामनरेश राजपूत, भगवान स्वरूप शर्मा, बाबू सैफी, चेतराम राजपूत, भूरेलाल राजपूत, मुनीश शर्मा, सौरभ दुबे, मनीष कुमार शर्मा, राम धुन पाली, हीरालाल मौर्य, मेवाराम प्रजापति, अनोखेलाल कश्यप, सहित सैकड़ों ग्रामीण मौजूद रहे।

नायब तहसीलदार को ज्ञापन देते भाकियू नेता राजेश। ● अमृत विचार

शिक्षक रामवीर तिवारी की पत्नी का निधन, शोक

बिल्सी, अमृत विचार: नगर के मोहल्ला संख्या एक टीचर्स कॉलोनी निवासी व ग्राम समाज इंटर कॉलेज बैरमई बुजुर्ग के रिटायर शिक्षक रामवीर तिवारी की पत्नी प्रतिभा तिवारी का मंगलवार सुबह लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार कछला घाट पर किया गया। उनके निधन पर भाजपा नेत्री ममता शाक्य, पूर्व चेयरमैन अनुज वार्ष्णेय, ओमप्रकाश सागर, सभासद अजीत सिंह गुर्जर, अवधेश यादव, ऋषिकांत उपाध्याय, पीयूष शाक्य, शेखर सक्सेना, निखिल सक्सेना, आलोक सक्सेना, अशोक मिश्रा, बादाम सिंह, दीपक चौहान, अमित वाष्णेय, इकरार अहमद व देवेंद्र कुमार ने शोक व्यक्त किया।

स्थापना दिवस पर हुई काव्य गोष्ठी

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : हिन्दी साहित्य सेवा समिति का स्थापना दिवस गायत्री शक्तिपीठ पर धूमधाम से मनाया गया। स्थापना दिवस पर पदाधिकारियों ने ट्री मैन प्रशांत जैन के सानिध्य में पौधारोपण किया। उसके बाद एक वृहद काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्था अध्यक्ष विष्णु असावा ने सभी साहित्यकारों को सम्मानित किया। गोष्ठी का शुभारंभ अचिन मासूम की सरस्वती वंदना के साथ हुआ-गोष्ठी में शैलेंद्र मिश्र देव ने पढ़ा-गरीबों का मसीहा जब कभी घर से निकलता है,

अमीरी कैसी होती है पता उस वक्त चलता है। विवेक यादव अज्ञानी ने पढ़ा- सत्य,सनातन और संस्कृति का परिभाषी होने परजहर से भरी इस दुनिया में भी मृदुभाषी होने पर, बहुत गर्व होता है हमको

काव्य पाठ करते अमन मयंक शर्मा।

हिंदी भाषी होने पर। अचिन मासूम ने पढ़ा-प्रभु से जो मिला हमको सुखद उपहार है हिन्दी, है कुनवा शब्द का सीधा सरल परिवार है हिन्दी।

ललतेश ललित ने पढ़ा-यह खेतों की हरियाली है, यह खुशियां बढ़ाने वाली है, अमित वर्मा अम्बर ने पढ़ा-

हृदय के सब दुखों का क्षरण हो गया,भाव से भावना का वरण हो गया-मन में जब जब जगी स्वर्ण मृग की ललक,जग में तब तब ही सीता हरण हो गया।

समिति अध्यक्ष विष्णु असावा ने पढ़ा-हिन्दी में ही जन्मे हैं हिन्दी में ही प्राण मेरे-तन-मन-धन सब हिन्दी में समाया है। प्रभाकर सक्सेना ने कहा -आज घरों में कलयुग तेरे, देखे अजब नजारे है ।माँ-बाप को ही अब घर में ,दो रोटी के लाले हैं । ओजस्वी जौहरी ने पढ़ा-नित दिवाकर की तरह चलता रहा मैं उम्र भर-और खुद के ताप से जलता रहा मैं उम्र भर।कार्यक्रम का संचालन अमित वर्मा अंबर ने किया। कार्यक्रम में संदीप मिश्रा, सोनू महेश्वरी, प्रेम दक्ष, प्रशांत जैन, सौरभ मिश्रा, ऋषभ शर्मा, विपिन शर्मा, अमन मयंक शर्मा, सुमित मिश्रा, प्रमोद गुप्ता, कृष्णा गुप्ता आदि उपस्थितबरहे। कार्यक्रम के अंत में संस्था अध्यक्ष विष्णु असावा ने सभी का आभार व्यक्त किया ।

वजीरगंज रोड पर ई-रिक्शा से दबा मिला युवक का शव

बिल्सी, अमृत विचार : कोतवाली बिल्सी क्षेत्र के गांव घंघौसी के पास वजीरगंज रोड पर मंगलवार सुबह उस समय हड़कंप मच गया, जब सड़क किनारे एक ई-रिक्शा के नीचे करीब युवक का शव दबा मिला। सूचना मिलते ही कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी। कोतवाल मनोज कुमार सिंह ने बताया कि मंगलवार सुबह सूचना प्राप्त हुई थी कि वजीरगंज मार्ग पर स्थित घंघौसी गांव के पास एक ई-रिक्शा के नीचे एक व्यक्ति दबा हुआ है। पुलिस टीम तत्काल मौके पर पहुंची और युवक को ई-रिक्शा के नीचे से निकालकर बिल्सी सरकारी अस्पताल भिजवाया गया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। फिलहाल मृत युवक की शिनाख्त नहीं हो सकी है।

छुट्टा गोवंश के हमले में महिला की मौत, दो घायल

- थाना उसहैत क्षेत्र में मंगलवार को हुई हुई घटनाएं

संवाददाता, उसहैत

अमृत विचार : छुट्टा गोवंश के आतंक पूरा जिला परेशान है। गांवों से लेकर शहर में गोवंश का आतंक है। मंगलवार को उसहैत थाना क्षेत्र के गांव कटरा सहादतगंज के मजरा इटौआ में छुट्टा गोवंश ने सींगों से उठाकर दो महिलाओ को पटक दिया जिससे एक महिला की मौत हो गई जबकि दूसरी गंभीर रूप से घायल हो गई। वहीं एक बालक मामूली रूप से चोटिल हो गया। घायल महिला को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया। गोवंश से परेशान ग्रामीणों ने प्रदर्शन किया।मंगलवार दोपहर गांव इटौआ निवासी सुनीता शर्मा पत्नी रामनिवास दवा लेने के लिए पास में कटरा स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र जा रही थीं। घर से निकलने पर गोवंश ने उन पर हमला कर दिया। सींगों से उठाकर कई बार जमीन पर पटका। मौके पर उनकी मौत हो गई। वहीं कटरा सहादतगंज निवासी मंचीता राठौर पत्नी ओमवीर की जमीन इटौआ में है। वह अपनी जमीन पर उपले पाथ रही थीं। इसी दौरान गोवंश ने उनपर भी हमला कर दिया। मौके पर चीख पुकार मच गई। आवाज सुनकर ग्रामीण दौड़कर पहुंचे। तब तक मंचीता राठौर गंभीर रूप से घायल हो गई थीं। वहीं गोवंश ने कटरा निवासी राजवीर के 10 साल के बेटे कनिष्क पर भी हमला करके चोटिल कर दिया। उसे निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया।

जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ ने शिक्षकों की समस्याओं पर की चर्चा

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : उत्तर प्रदेशीय जूनियर हाईस्कूल शिक्षक संघ की जिला कार्यकारिणी की बैठक कैंप कार्यालय पर हुई। जहां शिक्षकों की समस्याएं पर चर्चा की गई। साथ ही नववर्ष पर सदस्यों को उपहार से सम्मानित किया गया।

बैठक में जिलाध्यक्ष प्रेमानंद शर्मा ने कहा कि समायोजन में पीड़ित शिक्षक और उनकी समस्याओं से बीएसए को अवगत कराया जाएगा। साथ ही चयन वेतनमान, प्रभारी प्रधानाध्यापक समायोजन प्रक्रिया को पारदर्शी तरीके से पूरा कराने को कहा जाएगा। महामंत्री फरहत हुसैन ने संगठन की मजबूती पर बल दिया। साथ ही उच्चाधिकारियों को शिक्षकों की समस्याओं से अवगत कराए जाने पर जोर दिया गया। इस अवसर पर प्रेमानंद शर्मा, फरहत हुसैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजन यादव, भुवनेश गोविल,सोमदत्त शर्मा, मोहम्मद अयूब, अतीक उर रहमान आदि मौजूद रहे।

नव वर्ष के उपलक्ष्य में कार्यकारिणी सदस्यों को उपहार भेंट करते पदाधिकारी।

मोहल्लों में शुरू जलापूर्ति, लोगों को मिली राहत

- पिछले एक सप्ताह से कई मोहल्लों में बाधित थी पानी की सप्लाई
- नगर पालिका चेयरमैन ने अपनी उपस्थिति में बाधित सप्लाई को कराया शुरू, लोगों को मिली राहत
- पानी की सप्लाई बाधित होने पर तीन वार्ड के सभासदों ने ओवरहेड टैंक पर चढ़कर जताया था विरोध

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार: शहर के दातागंज तिराहे के समीप अंबेडकर छात्रावास के पीछे ओवरहेड टैंक से दी जाने वाली पानी की सप्लाई कई दिनों से बाधित चल रही थी जिसे नगर पालिका चेयरमैन ने अपनी उपस्थित में सही कराते हुए चालू कराया। साथ ही आपूर्ति बाधित होने का दोषी मानते हुए जलकल विभाग के सहायक अभियंता जल नितिन सक्सेना का जवाब-तलब किया है। इसके अलावा चेयरमैन ने नलकूप को बिजली सप्लाई देहात फीडर से हटा कर शहरी फीडर से जोड़ने के लिए प्रमुख सचिव ऊर्जा को पत्र भेजा है।

शहर के आंबेडकर छात्रावास के पीछे स्थित नगर पालिका के ओवरहेड टैंक की सफाई व मरम्मत का कार्य जल निगम द्वारा कराया जा रहा है। मरम्मत कार्य के चलते छह दिन से संबंधित क्षेत्र में पानी की आपूर्ति ओवरहेड टैंक के माध्यम की बजाय नलकूप से सीधे की जा रही थी। सीधे पानी की आपूर्ति होने से आमजन को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। लगातार कई दिनों तक पेयजल आपूर्ति बाधित होने से लोगो को दिक्कत हो रही थी। पानी की आपूर्ति बाधित होने पर तीन वार्ड के सभासदों ने ओवरहेड टैंक पर चढ़कर विरोध जताया। सभासदों के विरोध जताने के बाद मंगलवार को नगर पालिका चेयरमैन फात्मा रजा मंगलवार को आंबेडकर छात्रावास के पीछे स्थित नगर पालिका के ओवरहेड टैंक पर पहुंचीं और अधिकारियों से वार्ता क। साथ ही अपनी मौजूदगी में जलापूर्ति को पुनः शुरू कराया। जैसे ही पानी सप्लाई बहाल हुई, स्थानीय लोगों ने राहत की सांस ली। इस दौरान

पालिका चेयरमैन ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि ओवरहेड टैंक की सफाई व मरम्मत का कार्य शीघ्र और गुणवत्तापूर्ण ढंग से पूरा किया जाए, ताकि भविष्य में इस तरह की स्थिति दोबारा उत्पन्न न हो। उन्होंने कहा कि शहरवासियों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराना नगर पालिका की प्राथमिक जिम्मेदारी है और इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

पानी की सप्लाई शुरू कराती पालिका चेयरमैन फात्मा रजा। ● अमृत विचार

न्यूज ब्रीफ

जिला बार एसोसिएशन के चुनाव में 20 पदों पर 34 प्रत्याशी

बदायूं, अमृत विचार : जिला बार एसोसिएशन का चुनाव 21 जनवरी को होगा। इसके 20 पदों पर 34 प्रत्याशियों ने नामांकन पत्र दाखिल किए हैं। अध्यक्ष पद पर चार और महामंत्री पद पर प्रत्याशी मैदान में हैं। चुनाव में अध्यक्ष पद के लिए दिनेश चंद्र, देव पाल सिंह, देवेंद्र कुमार, गेंदन लाल बघेल और वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर अनिल कुमार जौहरी, दिनेश कुमार, कनिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर मरगूब अहमद खान, महामंत्री पद पर कृष्ण गोपाल पाठक, संदीप कुमार, सूरजपाल सिंह, संयुक्त् सचिव प्रशासन पद के लिए नीलम रानी, विनोद बाबू सक्सेना, जसवीर सिंह, अमित कुमार सोलंकी, याकूब अली खान, भानु प्रताप सिंह ने नामांकन पत्र दाखिल किया है। संयुक्त सचिव प्रकाशन के लिए अनिल कुमार यादव, आशू मियां और संयुक्त सचिव पुस्तकाल के लिए मुकेश कुमार वैश्य, नीलू मिश्रा, मनोज कुमार और कोषाध्यक्ष अवधेश कुमार, कौशल मिश्रा के अलावा कनिष्ठ कार्यकारिणी के छह पदों के लिए सुमन कश्यप, नीरज सक्सेना, आनंद सिंह, किरण रानी, राष्ट्र गौरव, पवन कुमार गौतम, फरमान अली, सतीश पाल, कुमारेश कुलश्रेष्ठ और वरिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य पदों के लिए आदित्य कुमार सिंह, सुरेंद्र पाल शर्मा ने अपने नामांकन पत्र दाखिल किया। निर्वाचन अधिकारी एसपी सिंह ने बताया कि मकर संक्रांति का अवकाश घोषित होने के बाद भी बार एसोसिएशन की चुनाव प्रक्रिया जारी रहेगी।

भाकियू के विरोध प्रदर्शन के बाद दर्ज हुई रिपोर्ट

रिपोर्ट दर्ज करने की मांग पर अड़े रहे भाकियू कार्यकर्ता, काफी देर तक नहीं उठने दिए तीनों शव

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

मौके पर पहुंचकर हंगामा करते लोग। ● अमृत विचार

धरना पर बैठे भाकियू पदाधिकारियों को समझाते पुलिसकर्मी। ● अमृत विचार

अमृत विचार : तकरीबन आठ महीने पहले आग लगने के बाद मेंथा फैक्ट्री भारत मिंट केमिकल लिमिटेड को ताला डाल दिया गया था। इसके बाद भी बताया जा रहा है कि फैक्ट्री में काम चल रहा था। सुरक्षा के लिए सुरक्षाकर्मियों को तैनात भी किया गया। मंगलवार सुबह शव मिले तो लोगों को फैक्ट्री में काम चलने की जानकारी हुई। पहले तो प्रशासन मामले को दबाने का प्रयास करता रहा लेकिन चिकित्सक के तीनों मजदूरों की मौत की पुष्टि के बाद पुलिस प्रशासन लोगों को समझाने में जुट गया।

सुरक्षाकर्मियों की मौत की सूचना पर ग्रामीण, मृतकों के परिजनों के अलावा भारतीय किसान यूनियन भानु गुट के जिलाध्यक्ष अतुल तोमर के नेतृत्व में पदाधिकारी मौके पर पहुंचे और हंगामा शुरू कर दिया। वह धरना पर बैठ गए। फैक्ट्री मालिक के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करने, मुआवजा और फैक्ट्री सीज करने की मांग की। परिजनों का आरोप था कि फैक्ट्री मालिक, उनके बेटे और मैनेजर और कुछ अज्ञात लोगों ने सुनियोजित तरीके से हत्या करके शवों को केबिन में रखा था। परिजनों के अनुसार मौके से घसीटने के भी निशान थे। कई थानों की पुलिस ने जांच की और फॉरेंसिक टीम ने साक्ष्य जुटाए। परिजन और भाकियू ने रिपोर्ट दर्ज होने तक शवों को नहीं उठने दिया। मृतक जोगेंद्र के पिता रामबहादुर की तहरीर पर फैक्ट्री मालिक मनोज गोयल, नितेश गोयल उर्फ गोपाल और मैनेजर राकेश के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई। लगभग चार घंटों के हंगामे के बाद शवों को उठने दिया गया। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजे। वहीं भाकियू के पदाधिकारियों और परिजनों ने कहा कि पुलिस मुकदमा तक सीमित न रहे। आरोपियों को गिरफ्तार करके पूछताछ भी करे। इस फैक्ट्री में पहले भी आग लग चुकी है। अब इसे हमेशा के लिए बंद किए जाने की जरूरत है। अगर फैक्ट्री खोली गई तो भाकियू धरना प्रदर्शन करेगी।

उझानी मेंथा फैक्ट्री की यह घटना बहुत ही ज्यादा दुख है। शोकाकुल परिवार के साथ पूरी संवेदना है। उनकी सच की लड़ाई में हमेशा साथ हैं। प्रशासन को घटना की निष्पक्ष जांच करानी चाहिए। जो भी दोषी हो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई हो। पूरा सच सामने आएगा। परिवार की लड़ाई के लिए हमेशा तैयार हैं।

– आबिद रजा, पूर्व मंत्री

कुड़ा नरसिंहपुर की मेंथा फैक्ट्री की घटना बहुत दुखद और शर्मनाक है। फैक्ट्री बंद होने के आदेश के बाद भी काम कैसे कराया जा सकता है। यह लापरवाही नहीं, बल्कि प्रशासनिक मिलीभगत और भाजपा सरकार की ढीली निगरानी का परिणाम है। प्रदेश में सुरक्षा और कानून व्यवस्था के बड़े दावे करने वाली भाजपा सरकार बताए कि अवैध रूप से चल रही फैक्ट्री पर कार्रवाई क्यों नहीं हुई। मजदूरों की जान की जिम्मेदारी कौन लेगा। परिजनों को पर्याप्त मुआवजा दिलाया जाए। लापरवाह लोगों पर कार्रवाई हो।

– आदित्य यादव, सांसद

इस फैक्ट्री में पहले भी आग लग चुकी है जिसमें एक व्यक्ति की मौत दिखाई गई थी जबकि मरने वालों की संख्या ज्यादा थी। फैक्ट्री को बैंक ने बंधक कर लिया था। नीलामी की तैयारी चल रही थी लेकिन रसूखदारों के संरक्षण में रखे ड्रम और उसपर पड़ी तारीख इस बात की गवाह है कि वहां पर अवैध रूप से काम चल रहा था। यह असंवेदनशीलता का परिणाम है। शासन और प्रशासन में बैठे लोगों की जवाबदेही बनती है कि घटना में ठोस कार्रवाई क्यों नहीं हुई। सपा पीड़ित परिवारों के हमेशा साथ है।

– धर्मेंद्र यादव, आजमगढ़ सांसद व मुख्य सचेतक सपा।

ब्लूमिंगडेल स्कूल परिसर में हर्षोल्लास से मनाई लोहड़ी

लोहडी में आग लगाते स्कूल निदेशक। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

● छात्र-छात्राओं ने पेश किये सांस्कृतिक कार्यक्रम

अमृत विचार: ब्लूमिंगडेल स्कूल परिसर में लोहड़ी का त्योहार हर्षोल्लास से मनाया गया। इस दौरान शिक्षक-शिक्षिकाओं और विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम का शुभारम्भ स्कूल प्रबंधन द्वारा लोहड़ी जलाकर व मूंगफली, रेवड़ी आदि अर्पित कर किया गया। तत्पश्चात रंगमंच पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में सामूहिक नृत्य, एकांकी, गीत व विचार कार्यक्रम आयोजित हुए। इस दौरान स्कूल अध्यक्ष पम्मी मेंहदीरत्ता ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन से एकता, सद्भाव एवं एक-दूसरे के धर्म के प्रति ज्ञान वर्धन व सामाजिकता की भावना का विकास होता है। यह सभी के लिए अत्यंत ही आवश्यक हैं। प्रधानाचार्य संजीव सिंह राठौर ने पर्व को मनाने के कारणों से अवगत कराया। इस मौके पर स्कूल निदेशक ज्योति मेंहदीरत्ता, मैनेजिंग हेड ईशान मेंहदीरत्ता, श्वेता मेंहदीरत्ता, उपप्रधानाचार्य परशुराम मिश्रा, एकेडमिक हेड सौरभ गांगुली, कॉर्डिनेटर अंजला सोनी, मृणाल सक्सेना, सुषमा वर्मा आदि उपस्थित रहे।

मकर संक्रांति को गजक-रेवड़ी की खरीदारी शुरू

● गुरुवार को मनाया जाएगा मकर संक्रांति का त्योहार को लेकर शुरू हुई तैयारी

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार: मकर संक्रांति त्योहार गुरुवार को मनाया जाएगा।इसको लेकर घरों और मंदिरों में तैयारी चल रही है। त्योहार को लेकर बाजार में रौनक बढ़ गई है। दान-पुण्य के लिए गजक-रेवड़ी की खरीदारी लोग कर रहे हैं। त्योहार नजदीक आते ही गुड तिल से बनी खाद्य वस्तुओं के दामों में भी 20 से 40 रुपए तक का उछाल आया है।

मुख्य बाजारों नेहरू चौक, सुभाष चौक, टिकटगंज, रेलवे क्रॉसिंग पर गजक रेवडी की दुकानें सज गई हैं। इन दुकानों पर ग्राहकों की आवाजाही बढ़ी हुई है। दुकानों पर गजक और रेवड़ी के दाम एक सप्ताह में 20 से 40 रुपए बढ़ गए हैं। गजक विक्रेता रामगोपाल व सुभाष ने बताया कि तिल का थोक भाव अधिक हो गया है। तिक का भाव बढ़ने से गजक की कीमतों में 20 से 40 रुपये प्रति किलो तक का इजाफा हुआ है। बाजार में उपलब्ध विभिन्न किस्मों की गजक 240 रुपये से 360 रुपये प्रति किलो तक बिक रही है। इसमें गुड़ की कुटी हुई गजक की सबसे अधिक मांग हो रही हैं। बाजारों में मकर संक्रांति पर दान के लिए सामानों की खरीदारी की जा रही है। त्योहार के चलते बाजारों में सुबह से लेकर शाम तक लोगों द्वारा खरीदारी की जा रही है।

बाजार में सजी गजक रेवड़ी की दुकान। ● अमृत विचार

मंदिरों में चल रही तैयारी

मकर संक्रांति पर्व एक दिन बाद मनाया जाएगा। त्योहार के चलते घरों और मंदिरों में तैयारी चल रही है। नगला स्थित शक्तिपीठ मंदिर के पुजारी ने बताया कि मकर संक्रांति त्योहार पर 15 जनवरी को सुबह सूर्योदय के साथ ही शुभारंभ हो जाएगा। इस दौरान गुड़, चावल और वस्त्र का दान-पुण्य करने की धार्मिक मान्यता है। कई मंदिरों में विशेष पूजा-अर्चना, हवन और भंडारे का भी आयोजन किया जाएगा।

पतंगों का सज गया बाजार

मकर संक्रांति पर्व नजदीक आने के साथ ही जिले में पतंगों का मौसम पूरी तरह से परवान चढ़ने लगा है। 15 जनवरी को मनाए जाने वाले पर्व को लेकर शहर से लेकर गांवों तक दुकानें व छतें गुलज़ार हो गई हैं। दुकानों पर सजी रंगीन व डिजाइन वाली पतंगें बच्चों को खूब लुभा रही हैं। खासतौर पर कृष्णा, सर्कस, तिरंगा, मोटू-पतलू, टॉम एंड जेरी और लव माई इंडिया डिजाइन वाली पतंग सबसे ज्यादा पसंद की जा रही हैं। खरीदारी बढ़ने से दुकानदारों के चेहरे भी खिल उठे हैं।

विभिन्न मामलों के आरोपी गिरफ्तार

पुलिस की गिरफ्त में विभिन्न मामलों का आरोपी और जानकारी देते एसपी देहात डॉ. ह्रदेश कठेरिया। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

● पुलिस ने गिरफ्तार किए गए आरोपियों को भेजा जेल

अमृत विचार : उघैती पुलिस ने 23 नवंबर को सराफा की दुकान से चोरी और टप्पेबाजी करने के एक आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेजा है। उघैती क्षेत्र में इस्लामनगर के बॉर्डर पर करनपुर रोड से आरोपी बरेली के थाना सीबीगंज क्षेत्र के गांव जौहरपुर निवासी विवेक शर्मा पुत्र विनोद कुमार शर्मा को गिरफ्तार किया। उनके पास से बाइक चोरी व टप्पेबाजी की हुई सोने की चार अंगूठी, नाक के तीन बेशर, पांच मंगलसूत्र, 1150 रुपये बरामद किए। जिनकी अनुमानित कीमत लगभग 2.70 लाख रुपये है। आरोपी के खिलाफ बदायूं के अलावा रामपुर, संभल, अमरोहा, उत्तराखंड, मेरठ, मुरादाबाद आदि में धोखाधड़ी, चोरी, गैंगस्टर एक्ट, विश्वास के हनन समेत 22 मामले दर्ज हैं। प्रेस वार्ता करके एसपी देहात डॉ. ह्रदेश कठेरिया ने जानकारी दी। गिरफ्तारी करने वालों में प्रभारी निरीक्षक ऋषिपाल सिंह व एसओजी रहे।

नौकरी के नाम पर महिला को ठगने वाला लिपिक निलंबित

बदायूं, अमृत विचार: नगर पालिका में कार्यरत लिपिक ने एक महिला को नौकरी लगने का झांसा देकर 25 हजार ठग लिए। जिसकी शिकायत पर नगर पालिका अध्यक्ष फात्मा रजा ने जांच कराई। जांच में शिकायत सही पाई गई। उन्होंने लिपिक को निलंबित कर दिया।

नगर पालिका में कार्यरत लिपिक सुमित कुमार ने लोटनपुरा निवासी महिला छोटी से नगर पालिका में उसकी सफाई कर्मी के तौर पर नौकरी का लालच दिया। लिपिक के झांसे में महिला आ गई। इसके बाद महिला ने लिपिक को 25 हजार दे दिए। लेकिन महिला की नौकरी नहीं लगी। नौकरी न लगने पर महिला ने लिपिक से रुपए मांगने शुरू कर दिए। लेकिन लिपिक कोई न कोई बहाना बनाकर महिला को टालता आ रहा था। रुपए वापस न मिलने पर महिला ने पालिका चेयरमैन से उसकी शिकायत कर दी। जिसका गंभीरता से संज्ञान लेते हुए पालिका चेयरमैन ने जांच कराई। जांच में शिकायत सही पाई गई। पालिका अध्यक्ष ने लिपिक सुमित कुमार को निलंबित कर दिया।

अभाविप ने लगाया निःशुल्क 'मेडिविजन' स्वास्थ्य शिविर

कैंप में मौजूद अभाविप पदाधिकारी। ● अमृत विचार

संवाददाता, सहसवान

● रक्तचाप व शुगर की कराई गई जांच, रोगियों को उपलब्ध कराई गईं निशुल्क दवाएं

अमृत विचार : अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा समाज सेवा के संकल्प के साथ एक दिवसीय निःशुल्क 'मेडिविजन कैंप' आयोजित किया गया। शिविर का शुभारंभ आरएसएस के विभाग प्रचारक सुधांशु और प्रांत सह मंत्री संजय गुप्ता की उपस्थिति में किया गया। कैंप में वरिष्ठ चिकित्सकों द्वारा सैकड़ों नागरिकों, महिलाओं और विद्यार्थियों की स्वास्थ्य जांच की गई। इस दौरान रक्तचाप, शुगर व सामान्य रोगों का परीक्षण कर निःशुल्क दवाइयां वितरित की गईं। प्रांत सह मंत्री संजय गुप्ता ने कहा कि अभाविप राष्ट्रहित के साथ-साथ सामाजिक दायित्वों के निर्वहन हेतु सदैव तत्पर है।

इस अवसर पर जिला विस्तारक अरुण सूर्यवंशी, नगर मंत्री संजीव ठाकुर, जितेंद्र यादव, अमरपाल, अखंड प्रताप सिंह, रवेंद्र यादव, आरंभ सिंह और शैलेंद्र शर्मा सहित कई कार्यकर्ता सेवा कार्य में जुटे रहे।

मजदूरों के अधिकारों को खत्म कर रही है सरकार

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

● मनरेगा का नाम बदलने पर औरंगाबाद माफी में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने लगाई चौपाल

ग्रामीणों को संबोधित करते ओमकार सिंह। ● अमृत विचार

अमृत विचार : मंगलवार को मनरेगा बचाओ संग्राम ग्राम चौपाल का आयोजन सलारपुर ब्लॉक के ग्राम औरंगाबाद माफी में किया गया। कांग्रेस के वक्ताओं ने कहा कि भाजपा ने मनरेगा को मिटाकर मजदूरों के अधिकारों को खत्म करने का प्रयास किया है जिससे देश की आर्थिक स्थिति और खराब होगी। सरकार की नीतियों का देश भर में भारी विरोध हो रहा है।

कांग्रेस ने औरंगाबाद माफी में मनरेगा बचाओ संग्राम चौपाल का आयोजन कर भाजपा सरकारों पर हमला बोला। प्रदेश कांग्रेस कोऑर्डिनेटर ओंकार सिंह ने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा पास की गई नई योजना के तहत सरकार यह तय करेगी कि यह योजना ग्रामीण गरीबों के लिए कब खोली जाएगी, जो एक तरह से यूपीए सरकार द्वारा दिए गए काम के अधिकार को छीन लेती है. कांग्रेस सरकार ने पहले देश में पंचायती राज संस्थाओं को मजबूत किया था, जिसे नई योजना उन्हें कमजोर कर देगी। जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष मनरेगा बचाओ संग्राम प्रभारी सुनीता सिंह ने कहा बीबीजी रामजी ने सब कुछ बदल दिया है.। नई योजना के तहत काम की मांग करना अब गरीबों का अधिकार नहीं रहा। काम सिर्फ केंद्र सरकार द्वारा नोटिफाई की गई पंचायतों में ही दिया जाएगा। अगर किसी पंचायत को नहीं चुना जाता है, तो वहां के ग्रामीणों को काम का कोई अधिकार नहीं होगा। शहर अध्यक्ष मुन्ना लाल सागर ने कहा नई योजना फंड, काम और संपत्ति सहित सभी फैसले लेने का अधिकार केंद्र सरकार को देती है। इससे योजना के मैनेजमेंट पर केंद्र का पूरा कंट्रोल होगा। कई पंचायतों को जीरो फंड मिलेगा और इससे स्थानीय प्लानिंग और ग्राम निकायों के अधिकार खत्म हो जाएंगे। इस मौके पर न्याय पंचायत अध्यक्ष विरासत अली, रियासत अली, ऐंठन, गुड्डू, हसरत अली, जमात अली, मेहंदी, शाकिर अली, जाकिर हुसैन, श्याम सिंह, राजेश, फरजाना, नत्थू ठेकेदार, अमीनुद्दीन, अमीर अहमद, लट्टू, लाला भाई आदि कांग्रेसी एवं ग्रामवासी मौजूद रहे।

अमृत विचार
क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
9756905552, 8445507002

NOTICE

I KM.SONI MAURYA is wife of no.15191351F HAV (GNR) NEERAJ KUMAR residing at Village - Parmodhapur P.O.- Semra Bazar Tehsil Nighasan District Lakhimpur kheri Uttar Pradesh 262907 have change my Name from KM.SONI MAURYA to SONI MAURYA vide Affidavit No.bx IN-UP45680467079392Y date 12-01-2026 befor The honorable District Lakhimpur

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी पुत्री रीतिका मौर्या के हाईस्कूल मार्कशीट वर्ष 2024 अनुक्रमांक 21138207 में पिता का नाम भूलवश पप्पू मौर्या दर्ज हो गया है जबकि सही नाम प्रेम पाल सिंह मौर्या है। अन्य सभी दस्तावेजें में भी प्रेम पाल सिंह मौर्या ही दर्ज है। **प्रेम पाल सिंह मौर्या पुत्र श्री भोला नाथ मौर्या निवासी बी.डी.ए. कालोनी, करगैना बदायूं रोड, बरेली।**

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे आधार कार्ड में नाम भूलवश भगवान देई दर्ज हो गया हैजबकि मेरा वास्तविक नाम नन्हीं देवी है। वोटर कार्ड व अन्य दस्तावेजों में भी नन्हीं देवी ही दर्ज है। **नन्हीं देवी पत्नी श्री राम अवतार निवासी बालाजी विहार कालोनी, कर्मचारी नगर रोड, थाना इज्जतनगर, बरेली।**

वैधानिक सूचना :- समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन जैसे टावर सम्बन्धी, नौकरी सम्बन्धी, ऋण सम्बन्धी या अन्य किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठकों को सावधान किया जाता है। विज्ञापनदाता द्वारा किये गये दावे या उल्लेख, समर्थन की पुष्टि समाचार पत्र नहीं करता है।

स्थाई लोक अदालत ने शून्य किया गलत बिजली बिल

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

● वादिनी को क्षतिपूर्ति 10 हजार रुपये और परिवाद व्यय बिल में समायोजित करने का दिया आदेश

अमृत विचार : तीन लोगों ने स्थाई लोक अदालत में विपक्षी विद्युत विभाग के खिलाफ परिवाद दायर किया था। लोक अदालत ने उनके 82 हजार 767 रुपये का बिल रद्द कराया है। कोर्ट ने एक लाख रुपये क्षतिपूर्ति के रूप में और अधिवक्ता की फीस व वाद व्यय दिलाने का आदेश दिया है।

सहसवान के गांव सैफुल्लागंज निवासी शालिनी राजवती, आशीष कुमार, अनूप कुमार पुत्र सुरेश कुमार अध्यक्ष उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड, मुख्य अभियंता मध्यांचल विद्युत वितरण, अधीक्षण व उझानी के अधिशासी अभियंता विद्युत वितरण खंड चतुर्थ के खिलाफ परिवाद दायर किया था। उनके मकान पर एक किलोवाट का कनेक्शन स्वीकृत है। समय-समय पर बिल जमा किया जाता है। साल 2019 में 19 अक्टूबर 2019 को पुराना मीटर हटाकर नया लगाया गया। उसे बार नोटिस दिया गया। फिर उसने 22 अगस्त 2019 को 22249 रुपये जमा किए। 11 मार्च 2024 को एक बिल 82 हजार 767 रुपये का आया। वैध संयोजन मनमाने तरीके से अवैध जरूर से विच्छेद कर दिया गया।

ओवरहेड टैंक की कराई जाएगी सफाई

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

● प्रशासन ने स्थानीय लोगों से की भरपूर मात्रा में पानी भंडारण कर लेने की अपील

● सिविल लाइन समेत आस-पास के इलाकों में बाधित होगी पेय जलापूर्ति

अमृत विचार: डीएम टंकी स्थित कैंपस के ओवर हेड टैंक की नगर पालिका द्वारा सफाई कराई जाएगी। ओवरहेड टैंक की सफाई के दौरान जलापूर्ति डायरेक्ट की जाएगी। पालिका प्रशासन ने जलापूर्ति बाधित होने की दशा में पानी भंडार करने की अपील लोगों से की है।

डीएम टंकी स्थित कैंपस के ओवर हेड टैंक से सिविल लाइन क्षेत्र के मोहल्ला आदर्श नगर, नेकपुर, सिविल लाइन, महाराज नगर, मंडी समिति, बाबा कालोनी, पीडब्ल्यूडी कॉलोनी, गन्ना दफ्तर आदि मोहल्लों में पानी की सप्लाई की जाती है। लोगों को शुद्ध पानी मिल सके इसके लिए नगर पालिका द्वारा ओवरहेड टैंक की नियमित सफाई का कार्य कराया जाता है। इस ओवर हेड टैंक की सफाई कराने को लेकर जलकल अभियन्ता नितिन सक्सेना ने बताया कि ओवरहेड टैंक की सफाई जन स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है, ताकि नागरिकों को स्वच्छ एवं सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराया जा सके। प्रस्तावित सफाई कार्य के कारण आसपास के क्षेत्रों में शाम के समय पानी की आपूर्ति बाधित हो सकती है। नगर पालिका ने क्षेत्र में रहने वाले उपभोक्ताओं से अपील की है कि वे असुविधा से बचने के लिए आवश्यक एहतियात बरतें। कहा कि जलापूर्ति प्रभावित होने को ध्यान में रखते हुए उसी दिन प्रातःकाल प्राप्त होने वाली जलापूर्ति से अपनी आवश्यकता के अनुसार पेयजल का भंडारण कर लें। इससे शाम के समय किसी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। बताया कि शहर के नाहर खां सराय, घंटाघर और अम्बेडकर छात्रावास में स्थित ओवरहेड टैंक की सफाई का कार्य पहले ही सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया गया है। इस कार्य के दौरान सभी सुरक्षा एवं स्वच्छता मानकों का पालन किया गया।

पेट्रोल पंप मैनेजर को लगी गोली, अस्पताल में भर्ती

संवाददाता, सहसवान

अमृत विचार : सहसवान कोतवाली क्षेत्र में एक पेट्रोल पंप मैनेजर को मंगलवार दोपहर गोली लग गई। घायल मैनेजर को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

घटना सहसवान कोतवाली क्षेत्र के बदायूं-मेरठ हाईवे पर स्थित एक पेट्रोल पंप के पास हुई। जुनावई थाना क्षेत्र के दुबारी कलां निवासी 40 साल के राजीव शर्मा इस पंप पर मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं। मंगलवार दोपहर करीब एक बजे एक ढाबे के सामने खेत में उन्हें गोली लगी।

घायल राजीव शर्मा। ● अमृत विचार

गोली लगने से राजीव शर्मा गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और घायल मैनेजर को तुरंत इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया।

हादसे में कार चालक घायल : बीसलपुर : ग्राम लुहिचा निवासी आनंद कुमार कार से जा रहे थे। किसान सहकारी चीनी मिल के पास गन्ना लदी ट्रैक्टर ट्रॉले से टक्कर हो गई। हादसे में कार क्षतिग्रस्त हो गई और वह घायल हो गए। दरोगा रामकुमार ने सीएचसी भिजवाया।

पूर्वोत्तर रेलवे

निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु निविदा आमंत्रित करते हैं। क्र.सं. 1. निविदा संख्या : उपमु० इंन्जी०-नि०-सीपीआर-01-2026 दिनांक 09.01.2026, कार्य का नामः पूर्वोत्तर रेलवे में वाराणसी मंडल के बलिया-छपरा खंड के दोहरीकरण परियोजना के संबंध में घाघरा नदी पर महत्वपूर्ण पुल संख्या 16 (18*16मी+2*30.5मी) (मांझी पुल) के ए1 साइड (मांझी छोर) पर गाइड बंड का निर्माण, ए2 साइड (बकुहला छोर) पर मोल के प्रावधान के साथ मौजूदा गाइड बंड का विस्तार/सुधार और सुधार। अनुमानित निविदा मुल्यः 516676342.71, बयाना राशि (रू०) : 2733400.00, निविदा प्रपत्र का मूल्य (रू०) : शून्य, कार्य पूर्ण करने की अवधिः 18 (अट्ठारह) माह। • बिडिंग प्रारम्भ करने की तिथि - 19/01/2026, • उपरोक्त निविदा सबमिसन की बन्द होने की तिथि - दिनांक 02/02/2026, 15.00 बजे तक • उपरोक्त निविदा खुलने की तिथि - दिनांक 02/02/2026, 15.00 बजे के उपरांत। • निविदा सूचना योग्यता मापदण्ड, नियम एवं शर्तें वेवसाइट https://ireps.gov.in पर देखा जा सकता है। • निविदा सूचना में यदि हिन्दी या अंग्रेजी के आलेखों में कोई भिन्नता होती है तो अंग्रेजी के ही आलेख मान्य होगें।

उप मुख्य इन्जीनियर/नि०/I, वाराणसी

मुजाधि/डब्ल्यू - 409

गाड़ियों की छतों व पायदान पर कदापि यात्रा न करें।

फर्जी फर्म बनाकर किया 16.26 करोड़ का गोलमाल

फर्म के दर्ज पते पर मौजूदा समय में नहीं किया जा रहा था काम

कार्यालय संवाददाता, बरेली

• राज्य कर खंड के सहायक आयुक्त की तहरीर पर रिपोर्ट दर्ज

अमृत विचार : फर्जी फर्म बनाकर 16 करोड़ 26 लाख का गोलमाल सामने आने के बाद वाणिज्य कर विभाग ने रिपोर्ट दर्ज कराई है। फर्म के दर्ज पते पर मौजूदा समय में कोई काम नहीं हो रहा था। इसके बाद जांच कराई गई और सारा खेल सामने आया। राज्य कर खंड के सहायक आयुक्त की तहरीर पर इज्जतनगर थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई गई है।

राज्य कर खंड के सहायक आयुक्त की तरफ से इज्जतनगर थाने में दी गई तहरीर में बताया गया कि मिनी बाईपास रोड गांधीपुरम निवासी प्रोपराइटर हिमांशु कुमार की फर्म ने 22 नवंबर 2019 को विभाग में पंजीयन प्राप्त किया था। इसकी जांच के बाद पंजीयन 14 जनवरी 2021 को कैंसिल कर दिया गया। उपलब्ध अभिलेखों एवं दाखिल रिटर्नों की जांच से यह सिद्ध होता है कि उक्त फर्म की ओर से बिना वास्तविक माल की आपूर्ति एवं बिना कर भुगतान के फर्जी इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) पास किया गया। इसके लिए जाली जीएसटी रिकार्ड तैयार किए गए एवं ई-मेल एवं मोबाइल नंबर के माध्यम से रजिस्ट्रेशन प्राप्त करते हुए केंद्र एवं प्रदेश के राजस्व को क्षति पहुंचाई गई।

विभागीय कार्रवाई, सर्वे रिपोर्ट, मिसमैच विश्लेषण और जीएसटी पोर्टल के डेटा के आधार पर यह सामने आया कि हिम ट्रेडर्स ने बिना माल की वास्तविक आपूर्ति के चालान जारी किए गए। झूठे जीएसटी रिर्टन दाखिल गए, जाली इलेक्ट्रानिक जीएसटी रिकार्ड तैयार किए गए। इसके अलावा अन्य लाभार्थी फर्मों के फर्जी आईटीसी हस्तान्तरित की गईं, जबकि फर्म द्वारा घोषित व्यवसाय स्थल पर की गई भौतिक सत्यापन में कोई फर्म नहीं पाई गई। जांच में जीएसटी रिटर्न में दर्शाई गई व्यावसायिक गतिविधियां काल्पनिक थी।

जीएसटी रिर्टन पोर्टल पर जानबूझकर जाली इलेक्ट्रानिक रिकार्ड तैयार करने की पुष्टि हुई। जांच में सामने आया कि 16 करोड़ 26 लाख 62 हजार 609 रुपये की राशि आईटीसी की बोगस प्रपत्रों के आधार पर क्लेम की गई। तहरीर मिलने के बाद इज्जतनगर के गांधीपुरम निवासी हिमांशु कुमार के खिलाफ इज्जतनगर पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज करके मामले की जांच शुरू कर दी है।

लोगों को पिलाई चाय, वितरित किए वस्त्र

गोला गोकर्णनाथ, अमृत विचारः अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद नगर इकाई द्वारा राष्ट्रीय युवा दिवस पर लोगों को चाय व छाछ पिलाकर जरूरतमंदों को वस्त्र वितरित किए।

नगर इकाई के पदाधिकारियों द्वारा राष्ट्रीय युवा दिवस पर सुबह अशोक चौराहे पर राहगीरों को चाय व छाछ का वितरण किया। नीलकंठ मैदान में गरीबों, जरूरतमंदों को वस्त्र वितरित किए। पैरामाउंट प्रशिक्षण क्लासेज में हुई युवा संगोष्ठी में प्रांत प्रवासी, विद्यार्थी संयोजक अलखकान्त श्रीवास्तव ने कहा कि स्वामी विवेकानंद केवल संत ही नहीं बल्कि भारत के युवा शक्ति के शिल्पकार थे। पटेल सुशील वर्मा ने कहा राष्ट्र कि सुरक्षा करना केवल सैनिकों का कार्य नहीं बल्कि युवाओं का भी दायित्व है। जिला सह संयोजक अक्षत पांडे, तहसील संयोजक प्रशांत गुप्ता, तहसील सह संयोजक हर्ष भारद्वाज, कृष्णा शुक्ला, दीपक मिश्रा सहित तमाम कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पुलिस हिरासत में युवक ने खाया जहर, मौत

संवाददाता, भीरा/भानपुर

अमृत विचारः भीरा थाना क्षेत्र में मंगलवार को एक सनसनीखेज मामला सामने आया है। पुलिस हिरासत में लिए गए एक युवक ने कथित तौर पर जहरीला पदार्थ खा लिया, जिससे उसकी हालत बिगड़ गई। आनन-फानन में पुलिस ने युवक को बिजुआ सीएचसी पहुंचाया, जहां से हालत नाजुक देखते हुए डॉक्टरों ने उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया। सुधार न होने पर उसे लखनऊ रेफर किया गया है। लखनऊ ले जाते समय सीतापर के पास उसने दम तोड़ दिया।

गांव मेडईपुरवा निवासी सुजीत मिश्रा ने एसपी संकल्प शर्मा को फोन किया और एक दबंग और उसकी कथित गर्लफ्रेंड पर परेशान करने का आरोप लगाया। एसपी के आदेश पर थाना प्रभारी रोहित दुबे ने पीड़ित से वार्ता की। उसने पुलिस पर कार्रवाई न करने और जहरीला पदार्थ खाने की धमकी दी। उसके बाद पुलिस उसकी तलाश में जुट गई। यूपी 112 पुलिस उसे लेकर थाने पहुंची। बताया जाता है कि इसी बीच उसने जहरीला पदार्थ खा लिया। थाने के गेट पर पहुंचते ही उसकी हालत बिगड़ गई। उसने जहरीला पदार्थ खाने की जानकारी दी। युवक को पहले सीएचसी फिर जिला अस्पताल में भर्ती कराया, लेकिन हालत बिगड़ने पर लखनऊ रेफर किया। लखनऊ ले जाते समय सीतापुर के पास उसकी मौत हो गई। मौत की खबर मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया।

युवक का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वायरल वीडियो में युवक कुछ लोगों पर लगातार धमकी देने का आरोप लगाते हुए दिखाई दे रहा है। उसने पुलिस पर मारपीट का आरोप लगाया है। युवक का दावा है कि इन्हीं हालातों से परेशान होकर उसे यह कदम उठाना पड़ा।

परिजनों को समझाकर शांत कराती पुलिस। • अमृत विचार

• लखनऊ ले जाते समय सीतापर के पास युवक ने दम तोड़ा

“युवक शराब के नशे में था और लगातार यूपी 112 पर कॉल कर आत्महत्या करने की धमकी दे रहा था। उन्होंने बताया कि युवक स्वयं थाने के गेट तक पहुंचा था, जहां उसने पुलिस को बताया कि उसने जहरीला पदार्थ खा लिया है। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने तत्काल उसे उपचार के लिए सीएचसी बिजुआ भेजा। मामला प्रेम प्रसंग से जुड़ा हुआ बताया जा रहा है। -**रोहित दुबे** थाना प्रभारी भीरा

कार्यालय ग्राम पंचायत भैसामई विकास खण्ड सालारपुर बदायूं

पत्रांक- मैमो/राष्ट्रीय ग्राम स्वराज्य अभियान/सामग्री आपूर्ति सूचना/2025-26 दिनांक: 14.01.2026

अल्पकालीन ई-निविदा सूचना

वाणिज्य कर विभाग में पंजीकृत समस्त फर्मो के सामग्री आपूर्तिकर्ताओं को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत भैसामई वि.खं. सालारपुर में राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान (RGSA) योजनान्तर्गत प्राप्त धनराशि से वित्तीय वर्ष 2025-26 में निम्नलिखित कार्य कराया जाना है:-

क्र.	कार्य का नाम	अनु. लागत
1.	ग्राम पंचायत में जनसेवा केन्द्र (CSC) की स्थापना का कार्य।	7,00,000/-

उपरोक्त कार्य हेतु प्राक्कलन में दी गई सामग्री/उपकरण क्रय किये जाने है। ग्राम पंचायत में सामग्री/उपकरण की आपूर्ति करने हेतु सीलबन्द निविदाएं ग्राम पंचायत कार्यालय में दिनांक 20.01.2026 तक आमंत्रित की जाती है। जो उक्त दिनांक को ग्राम पंचायत कार्यालय पर अपरान्ह 05:00 बजे खोली जायेगी। प्राप्त निविदाओं में उल्लिखित दरों में वर्ष 2025-26 को कोई मूल परिवर्तन नहीं होगा। प्रस्तुत निविदाओं में मानक के अनुसार ब्राण्डेड मार्का सामग्री की आपूर्ति का उल्लेख किया जायेगा। निविदा को स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार सक्षम अधिकारी में निहित होगा।

धीर सिंह (प्रधान) **दीपक गुप्ता (सचिव)**

ट्रक चालक ने लगाए गंभीर आरोप

पीलीभीत, अमृत विचार : ट्रक चालक को बंधक बनाकर लूटपाट करने का आरोप ट्रांसपोर्टर पर लगा है। घटना 13 जनवरी की बताई गई है। बरेली के थाना देवरनिया क्षेत्र के ग्राम मेला रिछा के ट्रक चालक मोहम्मद तैयब का कहना है कि उन्होंने पूरनपुर के ट्रांसपोर्टर के लिए माल ढुलाई की थी। इसके 41 हजार रुपये बकाया थे। आरोप है कि हिसाब के बहाने दुकान पर बुलाया। फिर साथियों की मदद से बंधक बनाकर अभद्रता की।

दो दिवसीय बैडमिंटन चैंपियनशिप शुरू

संवाददाता, गोला गोकर्णनाथ

अमृत विचारः जीडी गोयंका पब्लिक स्कूल में दो दिवसीय अंतर विद्यालय बैडमिंटन चैंपियनशिप प्रतियोगिता अंडर 10, अंडर 14 और अंडर 17 का प्रारंभ हुआ है।

प्रतियोगिता का प्रारंभ विद्यालय के प्रधानाचार्य अनुरोध चित्रा, प्रबंधन समिति के सदस्यों अतुल अग्रवाल, दीपक हालन, रोहित अग्रवाल एवं अजय गर्ग की उपस्थिति में मुख्य अतिथि विनय गुप्ता (रिंकू लोहिया) ने कराया। प्रबंधन समिति के सदस्यों व मुख्य अतिथि के मध्य फ्रेंडली मैच राउंड खेला गया। नगर के उमा देवी, सरस्वती विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, चिल्ड्रेन एकेडमी तथा जीडी गोयंका पब्लिक स्कूल के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

अंडर 10 अंडर, 14 और अंडर 17 के सिंगल व डबल मैच के राउंड हुए तथा विजेता छात्र-छात्राएं फाइनल राउंड में पहुंचे। इस चैंपियनशिप प्रतियोगिता का फाइनल राउंड 14 जनवरी को जीडी गोयंका विद्यालय के प्रांगण में प्रातः नौ बजे से होगा। फाइनल राउंड में अंडर 10 बालक (एकल) आर्यन यादव/श्रेयांश श्रीवास्तव, अंडर 14 बालक (एकल) शिवांश चौरसिया/समर प्रताप सिंह, अंडर 14 बालिका (एकल) ईशानी पटेल/अनन्या सिंह, अंडर 10 बालिका (एकल) सौम्या यादव/ आशी सक्सेना, अंडर 17 बालक (एकल) सिद्धार्थ सिंह/अनुराग श्रीवास्तव खेलेंगे।

अंडर 14 बालक (युगल) अथर्व बाजपेई एवं गौरांग नारायण/कर्तव्य गुप्ता एवं गर्व साहनी, बालिका (युगल) अनिका अग्रवाल एवं आरफ़ा बुतूल/रिया अग्रवाल एवं अनुष्का वर्मा खेलेंगी।

तीन कर्मचारियों को हटाया

पीलीभीत, अमृत विचार : टिकरी टोल प्लाजा पर वाहन चालकों से अभद्रता करने के मामले में वीडियो वायरल होने के बाद भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) ने कार्रवाई की। संबंधित टोल एजेंसी पर जुर्माना डालने के साथ ही तीन कर्मचारियों को बर्खास्त कर दिया है। अन्य कर्मचारियों को लोगों से बेहतर व्यवहार करने के निर्देश दिए हैं।

मंदिर में हुआ सुंदरकांड

सिंगाही, अमृत विचारः थाना क्षेत्र के गांव सिंगहा खुर्द में बच्चों द्वारा गठित बाल समिति की सराहनीय पहल से गांव के शिव मंदिर पर सुंदरकांड पाठ एवं भंडारे का आयोजन किया। कार्यक्रम का आयोजन गांव निवासी शिवाय मिश्रा के नेतृत्व में किया। गांव के शिव मंदिर में सुंदरकांड पाठ का के बाद भंडारा हुआ। धार्मिक आयोजन में ग्राम प्रधान प्रतिनिधि श्याम मोहन, राम कैलास सोनी, अशोक मिश्रा, पूर्व प्रधान दुर्गा प्रसाद वर्मा, राजेश मौर्या रहे। कार्यक्रम में विशेष रूप से अमन अवस्थी, तेजस त्रिवेदी, वीर सोनी, पार्थ मिश्रा, दीपक रस्तोगी, राघव अवस्थी रहे।

मोबाइल छीनने के विरोध पर महिला से मारपीट

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

• महिला की हालत गंभीर, अस्पताल में भर्ती

अमृत विचारः मोबाइल छीनने का विरोध करने पर सदर कोतवाली के गांव अमकोटवा में नशेड़ी युवक ने मायके आई महिला के साथ मारपीट की। आरोप है कि उस पर धारदार हथियार से हमला कर दिया। इससे महिला घायल हो गई। घायल महिला की हालत गंभीर बनी हुई है। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

थाना मझगईं के गांव बल्लीपुर मुर्गहा निवासी रामबेटी पत्नी रिंकू चौहान ने बताया कि वह सोमवार की शाम करीब 5:30 बजे अपने पति के साथ मायके गांव अमकोटवा आई थी। घर के बाहर परिवार के लोग आग ताप रहे थे। तभी गांव का ही द्वारिका शराब के नशे में वहां पहुंचा और मोबाइल छीनने लगा। विरोध करने पर आरोपी ने गंदी-गंदी गालियां देते हुए मारपीट शुरू कर दी। आरोप है कि धारदार हथियार से हमला कर दिया, जिससे वह घायल हो गई। आरोप है कि घटना को अंजाम देने के बाद आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए मौके से भाग निकला। परिजन खून से लथपत महिला को अस्पताल ले गए और उसे भर्ती कराया। महिला की हालत गंभीर है। शहर कोतवाल राजेश प्रताप सिंह ने बताया आरोपी पर धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। मामले की जांच एसआई डिंपल कुमार को सौंपी गई है।

दो बाइकों की भिड़ंत में सिपाही समेत तीन घायल

मझगईं, अमृत विचार : पलिया-निघासन स्टेट हाईवे पर मझगईं थाना क्षेत्र के राजापुर तीव्र मोड़ पर दो बाइकों की आमने-सामने टक्कर हो गई। हादसे में दोनों बाइकों पर सवार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। थाना सिंगाही के गांव खैरीगढ़ निवासी विमलेश अपनी पत्नी के साथ बाइक से पलिया की ओर जा रहे थे। वहीं दूसरी बाइक पर मझगई थाना में तैनात सिपाही सुगम त्यागी वह पीआरडी जवान अशोक राणा बम्हनपुर की तरफ जा रहे थे। जैसे ही दोनों बाइकें राजापुर मोड़ पर पहुंचीं, ट्रक को ओवरटेक करने के प्रयास में आमने-सामने टक्कर हो गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों बाइकें बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गईं और सवार सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। स्थानीय लोगों ने तत्काल घटना की सूचना दी और एंबुलेंस बुलाकर तीनों घायलों को सीएचसी निघासन पहुंचाया। सीएचसी में प्राथमिक उपचार के बाद सिपाही सुगम त्यागी की हालत गंभीर देखते हुए उन्हें जिला अस्पताल लखीमपुर रेफर कर दिया गया।

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, लघु सिंचाई खण्ड, बरेली।

पत्रांक 22/ल0सिं0/तालाब/ई-निविदा/ 2025-26 दिनांक 06.01.2026

अल्पकालीन ई-निविदा सूचना संख्या- 41/2025-26

महामहिम राज्यपाल महोदय, उत्तर प्रदेश की ओर से अधिशासी अभियन्ता, लघु सिंचाई खण्ड, बरेली द्वारा जनपद बदायूं में तालाब जीर्णोद्वार के कार्य हेतु ई-टेन्डर पर पंजीकृत निविदाताओं से ई-टेण्डरिंग के माध्यम से बजट एवं अनुमोदन की प्रत्याशा में दर प्रतिशत दर पर निम्न कार्यों हेतु ई-निविदा आमन्त्रित की जाती है।

कार्य का विवरण

क0 सं0	कार्य का नाम	कार्य की अनुमानित लागत	धरोहर धनराशि रूपये में	निविदा प्रपत्र का मूल्य जी0एस0टी0 एवं स्टेशनरी सहित	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1.	ग्राम नगला बारह विकास खण्ड इस्लामनगर में नगला बारह तालाब का जीर्णोद्वार कार्य।	3364000.00	336400.00	300+54+2000=2354.00	30 दिवस
2.	ग्राम खजुरिया विकास खण्ड बिसौली में (कुडिया वाला ताल) का जीर्णोद्वार कार्य।	2326000.00	232600.00	300+54+2000=2354.00	30 दिवस

बिड डाक्यूमेट http://etender.up.nic.in पर दिनांक 15.01.2026 से दिनांक 21.01.2026 तक उपलब्ध रहेंगे जो कि दिनांक 15.01.2026 को प्रातः 10:00 बजे से दिनांक 21.01.2026 के अपरान्ह 05:00 बजे तक अपलोड किये जा सकते हैं। इसकी तकनीकी बिड दिनांक 22.01.2026 को पूर्वान्ह 11:00 बजे से अधीक्षण अभियन्ता, लघु सिंचाई वृत्त, बी0डी0ए0 कॉम्पलेक्स, तृतीय तल, प्रियदर्शनी नगर, बरेली के कार्यालय मे निविदा समिति द्वारा उपस्थित निविदादाताओं अथवा उनके द्वारा अधिकृत प्रतिनिधियों के समक्ष ऑनलाइन खोली जायेगी। तदोपरान्त तकनीकी बिड में पात्र पाये जाने वाले निविदादाताओं की फाईनेन्शियल बिड खोली जायेगी। उक्त तिथि में अवकाश घोषित होने पर कार्यवाही अगले कार्य दिवस मे तत्समय की जायेगी निविदा से सम्बन्धित अधिक जानकारी वेबसाइट http://etender.up.nic.in तथा अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है।

अधिशासी अभियन्ता, लघु सिंचाई खण्ड, बरेली।

UP - 243841 दिनांकः 12/01/2026 विज्ञापन वेबसाइट www.up.gov.in पर उपलब्ध है।

कार्यालय नगर पंचायत बिलसण्डा, पीलीभीत

पत्रांक : 372/न.पं.बि./2025-26 दिनांक : 12.01.2026

ई-निविदा सूचना

पंजीकृत ठेकेदारान्/कम्पनी को सूचित किया जाता है कि नगर पंचायत बिलसण्डा वित्तीय वर्ष 2025-26 में 15वें वित्त आयोग से प्राप्त अनटाइड/टाइड ग्रान्ट से प्राप्त धनराशि से निर्माण कार्यो को कराने हेतु प्रतिशत दर पर ई-निविदा आमंत्रित की जाती है, जिनके लिए ई-निविदा प्रपत्र उ.प्र. की ई-प्रोक्योरमेन्ट की वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर उपलब्ध है। निविदादाताओं को सलाह दी जाती है कि उक्त ई-निविदा में किसी प्रकार का संशोधन/परिवर्तन देखने के लिए उक्त वेबसाइट पर समय-समय पर अवलोकन करते रहे। विवरण निम्नांकित है -

बिड प्रकाशन/अपलोड करने की तिथि	16.01.2026	अपरान्ह 12:00 बजे से
आनलाइन बिड अपलोड करने की तिथि	16.01.2026	अपरान्ह 12:30 बजे से
बिड अपलोड करने की अन्तिम तिथि	06.02.2026	अपरान्ह 12:30 बजे तक
बिड खुलने की तिथि	06.02.2026	अपरान्ह 1:30 बजे से खुलने तक

अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत बिलसण्डा **अध्यक्ष नगर पंचायत बिलसण्डा**

कार्यालय नगर पंचायत बरखेड़ा जनपद पीलीभीत

पत्रांक: 154/न.पं.ब./2025-26 दिनांक: 13.01.2026

ई-निविदा सूचना

नगर पंचायत बरखेड़ा जनपद पीलीभीत द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 में राज्य सेक्टर के "पेयजल हेतु व्यवस्था" योजना के अन्तर्गत नगरीय निकायों को प्राप्त धनराशि से नगर पंचायत बरखेड़ा में वॉटर पाईप लाईन डाले जाने का कार्य कराये जाने हेतु कार्य की ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। ई-निविदा प्रपत्र उ.प्र. की ई-प्रक्योरमेंट की वेबसाइट http//etender.up.nic.in पर उपलब्ध है। निविदा खोले जाने की तिथि में यदि अवकाश होगा तो निविदा अगले दिन कार्य दिवस में खोली जायेगी।

बिड प्रकाशित होने की तिथि	14.01.2026	प्रातः 08:00 बजे
ऑनलाइन बिड अपलोड करने की तिथि	14.01.2026	प्रातः 10:00 बजे
बिड अपलोड करने की अन्तिम तिथि	31.01.2026	प्रातः 10:00 बजे तक
बिड खुलने की तिथि	31.01.2026	अपरान्ह 02 बजे

नागेन्द्र पाण्डेय उपजिलाधिकारी बीसलपुर अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत बरखेड़ा, पीलीभीत

श्याम बिहारी भोजवाल अध्यक्ष नगर पंचायत बरखेड़ा, पीलीभीत

कार्यालय नगर पंचायत बिलसण्डा, पीलीभीत

पत्रांक : 374/न.पं.बि./2025-26 दिनांक : 13.01.2026

ई-निविदा सूचना

पंजीकृत ठेकेदारान्/कम्पनी को सूचित किया जाता है कि नगर पंचायत बिलसण्डा वित्तीय वर्ष 2025-26 में राज्य सेक्टर के सीवरेज एवं जल निकासी के अन्तर्गत दिनांक 31 अक्टूबर 2025 और वित्तीय वर्ष 2025-26 में शहरी क्षेत्रों में अन्त्येष्टि स्थल विकास योजना के अन्तर्गत दिनांक 06 नवम्बर 2025 को प्राप्त धनराशि से निर्माण कार्यो को कराने हेतु प्रतिशत दर पर ई-निविदा आमंत्रित की जाती है जिनके लिए ई-निविदा प्रपत्र उ.प्र. की ई-प्रोक्योरमेन्ट की वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर उपलब्ध है। निविदादाताओं को सलाह दी जाती है कि उक्त ई-निविदा में किसी प्रकार का संशोधन/परिवर्तन को देखने के लिए उक्त वेबसाइट पर समय-समय पर अवलोकन करते रहे। विवरण निम्नांकित है :-

बिड प्रकाशन/अपलोड करने की तिथि	17.01.2026	अपरान्ह 12:00 बजे से
आनलाइन बिड अपलोड करने की तिथि	17.01.2026	अपरान्ह 12:30 बजे से
बिड अपलोड करने की अन्तिम तिथि	07.02.2026	अपरान्ह 12:30 बजे तक
बिड खुलने की तिथि	07.02.2026	अपरान्ह 1:30 बजे से खुलने तक

अधिशासी अधिकारी नगर पंचायत बिलसण्डा **अध्यक्ष नगर पंचायत बिलसण्डा**

पूर्वोत्तर रेलवे

ई-टेंडरिंग निविदा सूचना सं. 03/2026

भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिए मंडल रेल प्रबन्धक (इंजी.), पूर्वोत्तर रेलवे, इज्जतनगर निम्नलिखित कार्य हेतु आनलाईन (ई-टेंडरिंग) के माध्यम से **"खुली"** निविदा आमंत्रित करते हैं :

क्र. सं. : 1, कार्य का विवरण : इज्जतनगर डिवीजन के कानपुर अनवरगंज (सी.पी.ए.)-मथुरा कैंट (एम.आर.टी.) अनुभाग में ट्रिम्बल जिडो वोर्सिस ट्रॉली सिस्टम या इसी तरह के सिस्टम का उपयोग करके ट्रैक का प्री एवं पोस्ट सर्वे की माप का सर्वेक्षण, ट्रैक मशीन में डिजाइन डेटा की गणना, मार्किंग एवं फीडिंग ताकि ट्रैक की डिजाइन्ड लाइन एवं लेवेल प्राप्त किया जा सके और अपडेटिड स्केल मैप को डेवलप किया जा सके, **अनुमानित लागत** : रु. 1,25,62,610.40, **बयाना राशि** : रु. 2,12,800/-, **निविदा प्रपत्र का मूल्य :** शून्य, **स्वीकृति पत्र जारी होने की तिथि से कार्य पूर्ण करने की अवधि :** 12 माह। **क्र. सं. : 2, कार्य का विवरण :** इज्जतनगर डिवीजन के रामपुर-लालकुआँ अनुभाग में मौजूदा 2x1.2 मीटर व्यास वाले ह्यूमे पाइप बिज के स्थान पर ब्रिज संख्या 182 पर आरसीसी बॉक्स कल्वर्ट (1x3.66 मीटर स्पैन) का निर्माण, **अनुमानित लागत** : रु. 2,04,20,984.82, **बयाना राशि** : रु. 2,52,100/-, **निविदा प्रपत्र का मूल्य :** शून्य, **स्वीकृति पत्र जारी होने की तिथि से कार्य पूर्ण करने की अवधि :** 06 माह। **क्र. सं. : 3, कार्य का विवरण :** विलासपुर रोड-रुद्रपुर सिटी अनुभाग के मध्य डब्ल्यू-बीम मेटल क्रैश बैरियर फेन्सिंग का शेष कार्य। (स्वीकृत कार्य के अन्तर्गत रुद्रपुर सिटी-रामपुर अनुभाग के मध्य 130 किमी/घंटा की गति बढ़ाने तक के मद्देनजर सेफ्टी फेन्सिंग (88.12 किमी) का प्रावधान, **अनुमानित लागत** : रु. 9,05,07,593.65, **बयाना राशि** : रु. 6,02,500/-, **निविदा प्रपत्र का मूल्य :** शून्य, **स्वीकृति पत्र जारी होने की तिथि से कार्य पूर्ण करने की अवधि :** 09 माह। **क्र. सं. : 4, कार्य का विवरण :** इज्जतनगर डिवीजन में रामपुर-लालकुआँ अनुभाग में ब्रिज संख्या 104 (लालकुआँ-काशीपुर) एवं ब्रिज संख्या 270 (पीलीभीत-शाही) पर संरक्षण कार्य एवं ब्रिज संख्या 25, 26, 43, 47, 83, 89, 91, 92, 181, 183 का सुदृढ़ीकरण, **अनुमानित लागत** : रु. 5,22,52,728.78, **बयाना राशि** : रु. 4,11,300/-, **निविदा प्रपत्र का मूल्य :** शून्य, **स्वीकृति पत्र जारी होने की तिथि से कार्य पूर्ण करने की अवधि :** 12 माह।

1. क्रम सं. 1 व 3 की ई-निविदा दिनांक 02.02.2026 को 15.00 बजे तक आनलाइन जमा कर सकेंगे। 2. क्रम सं. 4 की ई-निविदा दिनांक 06.02.2026 को 15.00 बजे तक आनलाइन जमा कर सकेंगे। 3. ई-निविदा की प्रस्तुति हेतु पूर्ण विवरण भारतीय रेलवे के IREPS वेबसाइट www.ireps.gov.in पर देखें।

मंडल रेल प्रबन्धक (इंजी.) इज्जतनगर

मुजाधि/डब्ल्यू-410

ट्रेनों में ज्वलनशील पदार्थ लेकर यात्रा न करें

अगवा कर जान से मारने की दी धमकी

निघासन, अमृत विचार : थाना पढुआ के गांव दुलही पुरवा निवासी धर्मेंद्र मौर्य ने गांव के कुछ लोगों पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उनका कहना है कि आरोपी उसे मंगलवार को पढुआ पुल के पास से तमंचे के बल पर अगवा कर बड़े साइफन की तरफ ले गए और उसके साथ मारपीट की। तमंचा तानते हुए जान से मारने की धमकी दी। गांव दुलही पुरवा मजरा पढुआ निवासी धर्मेंद्र मौर्य ने बताया कि उन्होंने गांव के ही जसवंत को लेखपाल के नाम पर 20 हजार रुपये दिए थे। रुपये वापस न लौटाने पर उन्होंने इसकी शिकायत 16 दिसंबर को एसडीएम निघासन से की थी, जिसकी जांच चल रही है। इससे आरोपी नाराज थे। मंगलवार की सुबह करीब 10 बजे पढुआ पुल के पास बने बाला जी मंदिर के पास जसवंत आए। उनके साथ पांच-छह लोग आए और उसे काली गाड़ी में जबरन बैठा कर बड़े साइफन की तरफ ले गए। वहां पर उसकी बेरहमी से पिटाई की। तमंचा दिखाकर जान से मार देने की धमकी दी। शिकायत करने पर दो महीने के भीतर जान से मार देने की भी धमकी दी। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

पब्लिक नोटिस

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल जना स्माल फाईनेंस बैंक लि. शाखा बरेली से रिन्की देवल पत्नी संजीव देवल निवासी 265 जकाती स्ट्रीट निकट काली देवी मन्दिर चाहबाई बरेली एक किता मकान नं. 254/226 रकबई 74.41 वर्ग मी. का 6/7 भाग 63.78 वर्ग मी. वाकै बजरिया पूरनमल बरेली को श्रीमती साधना सक्सेना पत्नी स्व. प्रदीप कुमार सक्सेना व प्रशांत कुमार सक्सेना व परितोष कुमार पुत्रगण स्व. प्रदीप कुमार सक्सेना निवासीगण ब्लाक बी 39/एस-2 दिलशाद गार्डन पूर्वी दिल्ली से क्रय करने हेतु आपकी शाखा से लोन रही है उक्त मकान श्रीमती साधना सक्सेना आदि को दानपत्र जिसकी रजिस्ट्री दिनांक 15.12.2022 ई. को जिल्द नं. 13947 के पृष्ठ 287 से 308 पर नं. 21537 पर स.र. बरेली में हुई है इकरारी श्रीमती अनुपम सक्सेना आदि से प्राप्त हुआ है। अतः सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि यदि किसी अन्य व्यक्ति/बैंक/संस्था आदि को उक्त बंधक सम्पत्ति के सम्बन्ध में कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति सामान्य कार्य दिवस की सामान्य कार्यावधि में इस प्रकाशन के 07 दिन के अन्दर मेरे मुवक्किल जना स्माल फाईनेंस लि. शाखा बरेली पर या मेरे कार्यालय पर व्यक्तिगत रूप से समस्त दस्तावेजी साक्ष्यों सहित उपस्थित होकर दर्ज करा सकता है। उक्त समयावधि बीत जाने के उपरान्त मेरे मुवक्किल द्वारा उक्त ऋण जारी कर दिया जायेगा।

Amitabh Bhanj
Advocate
Chamber No. 11, Bara Vakalatkhana
Civil Court, Bareilly-243001
Penal Advocate
Jana Small Finance Bank Ltd.
Bareilly

आग से 8 बीघा गन्ना जला, लाखों का नुकसान

संसारपुर, अमृत विचार : मैलानी थाना क्षेत्र के कस्बा संसारपुर में अज्ञात कारणों के चलते भड़की आग ने खेत में खड़े गन्ने को चपेट में ले लिया। आग की चपेट में आकर दो किसानों का करीब 8 बीघा गन्ना जलकर खराब हो गया। कस्बे की कुकुहापुर रोड पर गैस गोदाम के पास अज्ञात कारणों से आग भड़क गई और पास के मनोज गुप्ता पुत्र शिवदयाल गुप्ता तथा राधे वर्मा पुत्र रामदत्त के खेत में खड़े गन्ने को चपेट में ले लिया। लोग आग बुझाने में जुट गए, जब तक आग पर काबू पाया जाता, तब तक आग ने मनोज गुप्ता का करीब चार बीघा तथा राधे वर्मा का 4 बीघे गन्ने को अपनी चपेट में ले लिया। ग्रामीणों ने सूचना डायल 112 को दी। जानकारी मिलने पर पहुंची पीआरबी 5777 ने ग्रामीणों के सहयोग से कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पा लिया। लेकिन तब तक आग ने दोनों किसानों की 8 बीघा खड़ी गन्ने की फसल को नुकसान पहुंचा दिया।

अटल बिहारी वाजपेयी राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, पीलीभीत

Atal Bihari Vajpayee National Institute of Electronics and Information Technology, Pilibhit

(Ministry of Electronics and Information Technology, Govt. of India)

MINISTRY OF ELECTRONICS & INFORMATION TECHNOLOGY Government of India

रा.इ.सू.प्रौ.सं NIELIT

प्रवेश सूचना – जनवरी 2026

अटल बिहारी वाजपेयी नाइलिट विस्तार केंद्र पीलीभीत जनवरी 2026 से शुरू होने वाले विभिन्न उन्मुख लघु और मध्यम अवधि के कौशल पाठ्यक्रमों के लिए आवेदन आमंत्रित करता है।

SC/ST अभ्यर्थियों के लिए कोई पाठ्यक्रम शुल्क नहीं है

लघु अवधि पाठ्यक्रम

क्रम संख्या	पाठ्यक्रम का नाम	NSQF स्तर	योग्यता	अवधि (घंटे)	पाठ्यक्रम शुल्क
(i)	Course on Computer Concepts (CCC)	3	न्यूनतम कक्षा 8 उत्तीर्ण	90	3500
(ii)	Foundation of Artificial Intelligence Technology	3	न्यूनतम कक्षा 10 उत्तीर्ण	90	3500

दीर्घ अवधि पाठ्यक्रम

क्रम संख्या	पाठ्यक्रम का नाम	NSQF स्तर	योग्यता	अवधि (घंटे)	पाठ्यक्रम शुल्क
(i)	O Level (IT)	4	कक्षा 10 के बाद 10+2 या आईटीआई प्रमाणपत्र (एक वर्षीय)	520	18000
(ii)	Data Analysis Assistant	3	न्यूनतम कक्षा 10 उत्तीर्ण	300	10000
(iii)	AI Development Associate	4	न्यूनतम कक्षा 12 उत्तीर्ण	570	19000
(iv)	Cyber Secured Web Development Associate	4	कक्षा 10 के बाद 10+2 या आईटीआई प्रमाणपत्र (एक वर्षीय)	990	33000
(v)	Computer Applications and Business Accounting Associate	4	न्यूनतम कक्षा 10 उत्तीर्ण	990	33000
(vi)	Office Automation Accounting and Publishing Assistant	3	10वीं कक्षा उत्तीर्ण या 8वीं कक्षा उत्तीर्ण और नियमित स्कूल में व्यावसायिक विषय के साथ निरंतर शिक्षा प्राप्त	690	23000
(vii)	ITeS BPO Executive - Voice	3	10वीं या समकक्ष या ग्रेड 8 के साथ 2 साल का (एनटीसी/एनएसी)	330	10000
(viii)	Full Stack Development Associate	4	12वीं या समकक्ष या 10वीं के साथ आईटी या संबद्ध क्षेत्र में 3 वर्ष का अनुभव	390	13000

अटल बिहारी वाजपेयी नाइलिट विस्तार केंद्र पीलीभीत में उपलब्ध सुविधाएँ:
- NSQF, NEP और उद्योग आधारित पाठ्यक्रम
- प्लेसमेंट और उद्यमशीलता सहायता
- आधुनिक प्रयोगशालाएँ, स्मार्ट कक्षाएं
- इंटरनेट सुविधा
- समृद्ध पुस्तकालय सुविधा
- इंटर्नशिप सुविधाएं

प्रवेश के लिए संपर्क विवरण :
फोन- 6203739575, 7906208801
पता : अटल बिहारी वाजपेयी नाइलिट एक्सटेंशन सेंटर, ड्रमंड गवर्नमेंट इंटर कॉलेज कैंपस, पीलीभीत, यू.पी.-262001

अधिक जानकारी एवं आवेदन के लिए स्कैन करें

न्यूज ब्रीफ

समाज कल्याण विभाग और मदद फाउंडेशन के बीच एमओयू

अमृत विचार, लखनऊ : प्रदेश में बालिकाओं के समावेशी विकास, डिजिटल साक्षरता और तकनीकी सशक्तिकरण को मजबूती देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। समाज कल्याण विभाग और मदद फाउंडेशन के बीच मंगलवार को समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इसके साथ ही पायलट प्रोजेक्ट के तहत दो सर्वोदय बालिका विद्यालयों को 40 टैबलेट वितरित किए गए। गोमती नगर स्थित भागीदारी भवन में आयोजित समन्वय बैठक एवं टैबलेट वितरण कार्यक्रम में समाज कल्याण राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) असीम अरुण ने कहा कि डिजिटल शिक्षा आज समय की अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है। कार्यक्रम में पायलट प्रोजेक्ट के तहत चयन किए गए जयप्रकाश नारायण सर्वोदय बालिका विद्यालय, गोरखपुर और महाराजगंज को कुल 40 टैबलेट प्रदान किए गए।

संयुक्त परिषद 20 को करेगी विधानसभा का घेराव

अमृत विचार, लखनऊ : प्रदेश के करीब 40 लाख कार्मिकों की लंबित समस्याओं के समाधान की मांग को लेकर राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद ने 20 जनवरी को विधान सभा घेराव का ऐलान किया है। परिषद का कहना है कि क्षेत्रीय, मंडलीय और प्रांतीय स्तर पर कई चरणों में आंदोलन और सम्मेलन किए गए, लेकिन शासन–सरकार की ओर से कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई, जिससे कर्मचारियों में आक्रोश है। इसी क्रम में आलमबाग बस स्टेशन पर परिवहन निगम से जुड़े विभिन्न संगठनों की बैठक हुई। इसकी अध्यक्षता परिषद के प्रदेश अध्यक्ष जेएन तिवारी ने की।

डिप्लोमा फार्मेसी संस्थानों की संबद्धता प्रक्रिया शुरू

अमृत विचार, लखनऊ : सत्र 2026–27 के लिए डिप्लोमा स्तरीय फार्मेसी संस्थानों को संबद्धता दिए जाने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। प्राविधिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश ने इसके लिए यू-राइज पोर्टल को सक्रिय कर दिया है। शासनादेश के अनुपालन में अब नई फार्मेसी संस्था की स्थापना, नया पाठ्यक्रम शुरू करने, प्रवेश क्षमता बढ़ाने या घटाने तथा संस्था क्लोजर से जुड़े सभी आवेदन केवल यू-राइज पोर्टल के माध्यम से ही स्वीकार किए जाएंगे। परिषद के अनुसार, नव-आवेदित और पूर्व से परिषद से संबद्ध सभी डिप्लोमा स्तरीय फार्मेसी संस्थान 30 अप्रैल तक ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। निर्धारित तिथि और समय के बाद किसी भी प्रकार का आवेदन स्वीकार नहीं किया जाएगा। परिषद ने स्पष्ट किया है कि ऑफलाइन या किसी अन्य ऑनलाइन माध्यम से भेजे गए आवेदन मान्य नहीं होंगे।

विवादमुक्त संपत्ति व्यवस्था पर सरकार का फोकस

अमृत विचार, लखनऊ : विधान भवन स्थित कक्ष में आयोजित प्रेस वार्ता में स्टांप एवं पंजीयन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) रवींद्र जायसवाल ने कहा कि अब पारिवारिक अचल संपत्ति के बंटवारे के लिए स्टांप शुल्क मात्र 5000 रुपये और पंजीयन शुल्क अधिकतम 5000 रुपये तय किया गया है। यानी प्रदेश के नागरिक अब 10 हजार के भीतर वैध रूप से संपत्ति का पारिवारिक विभाजन करा सकेंगे। इससे पारिवारिक विवाद, कोर्ट-कचहरी और वर्षों तक चलने वाले मुकदमों में कमी आएगी। मंगलवार को विधान भवन स्थित कक्ष में आयोजित प्रेस वार्ता में स्टांप एवं पंजीयन राज्य मंत्री ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश सरकार ने आम नागरिकों, महिलाओं और परिवारों को बड़ी राहत देते हुए स्टांप एवं पंजीयन शुल्क में ऐतिहासिक रियायतों का फैसला किया है।

वीबी–जीरामजी से बदलेगी ग्रामीण अर्थव्यवस्था, भ्रष्टाचार पर लगेगा डिजिटल ब्रेक

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

किरण रिजिजू का आरोप

- **मनरेगा में 11 लाख करोड़ खर्च के बाद भी गांवों का विकास नहीं**

अमृत विचार: केंद्रीय संसदीय कार्य एवं अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री किरण रिजिजू ने मनरेगा को लेकर तीखा राजनीतिक हमला बोलते हुए कहा कि इस योजना में 11 लाख करोड़ रुपये खर्च होने के बावजूद ग्रामीण भारत में अपेक्षित विकास नहीं हुआ। उन्होंने आरोप लगाया कि जहां रोजगार की जरूरत नहीं थी, वहां पैसा बहाया गया और जहां काम चाहिए था, वहां लोगों को रोजगार नहीं मिला। रिजिजू ने कहा कि मनरेगा रोजगार की नहीं, बल्कि लूट की गारंटी बन गई थी, इसलिए केंद्र सरकार वीबी–जीरामजी (विकसित भारत–गारंटी फॉर रोजगार एंड आजीविका मिशन ग्रामीण) लेकर आई है।

वीबी–जीरामजी योजना को लेकर इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित भाजपा की वर्कशॉप और बाद में प्रेस वार्ता में केंद्रीय मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संकल्प गांवों का समग्र और टिकाऊ विकास है। नई योजना के जरिए रोजगार, आजीविका और ग्रामीण इंफ्रास्ट्रक्चर को एक साथ मजबूत किया जाएगा। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा राज्य है और यहां होने वाला बदलाव पूरे देश के लिए मॉडल बनेगा।

किरण रिजिजू ने बताया कि वीबी–जीरामजी के तहत हर परियोजना की डिजिटल मॉनिटरिंग होगी, जिससे भ्रष्टाचार और दुरुपयोग की कोई गुंजाइश नहीं बचेगी। 100 दिन की जगह अब 125 दिन रोजगार की गारंटी दी जाएगी। कृषि सीजन के अनुसार योजना में लचीलापन रखा गया है, ताकि किसानों को सीधा लाभ मिले। जल संरक्षण, स्वास्थ्य सुविधाएं, बेसिक शिक्षा और ग्रामीण जलापूर्ति के लिए मजबूत इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया जाएगा। उन्होंने दावा किया कि इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बड़ा उछाल आएगा।

केंद्रीय मंत्री ने विपक्ष पर दुष्प्रचार फैलाने का आरोप लगाते हुए कहा कि जैसे सीएए के समय नागरिकता छीनने का झूठा भ्रम फैलाया गया था, वैसे ही अब नए कानून को लेकर डर पैदा किया जा रहा है। उन्होंने सवाल किया कि क्या किसी की नागरिकता गई? वीबी–जीरामजी में हर ग्राम सभा से प्रस्ताव लेकर जनता की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। पुराने कानून में भ्रष्टाचार रोकना संभव नहीं था, इसलिए नया कानून लाना जरूरी हो गया।

इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित वर्कशॉप में बाएं से उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी, उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक और भाजपा के संगठन महामंत्री धर्मपाल सिंह। अमृत विचार

गरीबों को जीरामजी के फायदे गिनाएं कार्यकर्ता

- कार्यशाला में मंत्रियों और भाजपा नेता ने कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि नया कानून पारदर्शिता और जवाबदेही की गारंटी देता है। संगठन स्तर पर कार्यकर्ता इसे जन-जन तक पहुंचाएं। गांवों की भागीदारी से ही विकसित भारत का सपना साकार होगा। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि वीबी–जीरामजी से गांवों में वास्तविक विकास होगा। यह योजना गरीब, किसान और मजदूर की जिंदगी बदलेगी। बृजेश पाठक ने कहा कि डिजिटल निगरानी से भ्रष्टाचार खत्म होगा। यह योजना भरोसे और पारदर्शिता की गारंटी है। पंचायती राज मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने कहा कि ग्राम पंचायतें इस योजना की रीढ़ होंगी। गांव से ही विकसित भारत का रास्ता निकलेगा। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी ने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता वीबी–जीरामजी को गांव-गांव तक पहुंचाएंगे। यह ऐतिहासिक सुधार है। संगठन महामंत्री धर्मपाल सिंह ने कहा कि संगठन स्तर पर हर कार्यकर्ता इस योजना को जन-आंदोलन बनाएगा। कहा कि प्रदेश की कार्यशाला के पश्चात वीबी-जी राम जी की जिला कार्यशालाओं में भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि पार्टी जिला सम्मेलनों के माध्यम से वीबी-जी राम जी पर श्रमिकों, गामीणों, ग्राम प्रधानों, बीडीसी सदस्यों तथा किसानों के साथ संवाद करेगी। जिला सम्मेलनों में सांसद, विधायक सहित सभी जनप्रतिनिधि तथा अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति मोर्चा के पदाधिकारी सम्मिलित रहेंगे। उन्होंने कहा कि भाजपा मंडल स्तर पर भी सम्मेलन आयोजित करेगी। प्रदेश उपाध्यक्ष संतोष सिंह, प्रदेश मीडिया प्रभारी मनीष दीक्षित, शहर मीडिया प्रभारी हिमांशु दुबे, राष्ट्रीय मंत्री ओम प्रकाश धनखड़, राष्ट्रीय मंत्री सुरेन्द्र नागर, कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही, स्वतंत्र देव सिंह, भूपेन्द्र सिंह चौधरी उपस्थित रहे। संचालन प्रदेश उपाध्यक्ष संतोष सिंह ने किया।

5 लाख युवाओं को मिलेगा हाई-स्किल रोजगार

प्रदेश में 1000 से अधिक जीसीसी स्थापित करने का लक्ष्य

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

एक नज़र में यूपी का जीसीसी रोडमैप

- **लक्ष्य :** 1000 ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स
- **संभावित रोजगार :** 5 लाख युवा
- **वर्तमान जीसीसी :** लगभग 90
- **नीति :** उत्तर प्रदेश जीसीसी नीति-2024
- **फोकस सेक्टर :** आईटी, डेटा, इंजीनियरिंग, मैनेजमेंट
- **मुख्य लाभ :** हाई-स्किल जॉब्स, प्रतिभा पलायन पर नियंत्रण

रफ्तार पकड़ रही मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना

- **अमृत विचार, लखनऊ :** मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना वित्तीय वर्ष 2025–26 में 94 इकाइयां स्थापित की गई हैं, जिसके तहत 648 .63 लाख रुपये का पूंजी निवेश संभव हुआ है। इसके माध्यम से 2,586 युवाओं को रोजगार दिलाने में सफलता मिली है। योजना के तहत ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षित एवं तकनीकी योग्य बेरोजगार युवक-युवतियों को 10 लाख रुपये तक का बैंक ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है। योगी सरकार ने उद्यमियों के लिए ब्याज सब्सिडी की बड़ी सुविधा दी है, जिसमें सामान्य वर्ग के उद्यमियों के लिए 4 प्रतिशत से ऊपर का ब्याज सरकार देती है, जबकि आरक्षित वर्ग के उद्यमियों का पूरा ब्याज सरकार वहन करती है। योजना में 18 से 50 वर्ष आयु वर्ग के पुरुष एवं महिला उद्यमी पात्र हैं। चयन प्रक्रिया जिलाधिकारी की अध्यक्षता में गठित जिला स्तरीय टास्क फोर्स के माध्यम से की जाती है। सामान्य वर्ग को परियोजना लागत का 10 प्रतिशत, जबकि आरक्षित वर्ग को 5 प्रतिशत स्वयं का अंशदान देना होता है।

अमृत विचार: तेजी से विकसित होती अवसंरचना, स्पष्ट नीतियों और स्थिर शासन के चलते उत्तर प्रदेश अब ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर्स (जीसीसी) के लिए देश का उभरता हुआ हॉटस्पॉट बनता जा रहा है। बीते नौ वर्षों में योगी सरकार में प्रदेश ने न केवल मैन्युफैक्चरिंग बल्कि नॉलेज और सर्विस आधारित अर्थव्यवस्था की दिशा में भी ठोस कदम बढ़ाए हैं। उद्योग विशेषज्ञों का मानना है कि आने वाले वर्षों में उत्तर प्रदेश वैश्विक कंपनियों का एक बड़ा ऑपरेशन हब बन सकता है।

प्रदेश सरकार ने उत्तर प्रदेश जीसीसी नीति-2024 के तहत 1000 से अधिक जीसीसी स्थापित करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किया है। इसके माध्यम से पांच लाख से अधिक युवाओं को प्रत्यक्ष रोजगार मिलने की संभावना है। वर्तमान में प्रदेश में लगभग 90 जीसीसी सक्रिय हैं, जो आईटी, इंजीनियरिंग, डेटा एनालिटिक्स, फाइनेंस और मैनेजमेंट जैसे क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। नीति की सबसे बड़ी ताकत इसकी स्पष्टता और दीर्घकालिक दृष्टिकोण है। निवेशकों की सबसे बड़ी चिंता-नियमों की अनिश्चितता और प्रक्रियागत देरी—को दूर करने के लिए सरकार ने एक स्पष्ट और पारदर्शी ढांचा तैयार किया है। इससे निवेशकों को शुरुआती चरण में ही नियम, शर्तें और जिम्मेदारियां स्पष्ट हो जाती हैं, जिससे निर्णय लेने की गति तेज हुई है और भरोसा मजबूत हुआ है। भूमि आधारित प्रोत्साहन और संरचनात्मक सहयोग से निवेश की शुरुआती लागत घटाने पर विशेष जोर दिया गया है। प्रदेश सरकार का मानना है कि यदि निवेशक को आरंभिक स्तर पर ठोस आधार मिलेगा, तो वह लंबे समय तक राज्य से जुड़ा रहेगा। इसी कारण अस्थायी कार्यालयों के बजाय स्थायी औद्योगिक और आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके साथ ही समयबद्ध क्रियान्वयन और जवाबदेही तय कर यह सुनिश्चित किया गया है कि परियोजनाएं तय समय में धरातल पर उतरें।जीसीसी के माध्यम से प्रदेश में हाई-वैल्यू और हाई-स्किल रोजगार के अवसर तेजी से बढ़ रहे हैं। स्थानीय युवाओं को अंतरराष्ट्रीय कार्य संस्कृति और तकनीकी अनुभव मिल रहा है, जिससे प्रतिभा पलायन पर अंकुश लगने की उम्मीद है। साथ ही कम विकसित क्षेत्रों में निवेश को प्रोत्साहित कर सरकार क्षेत्रीय संतुलन साधने की दिशा में भी आगे बढ़ रही है।

गोरखपुर महोत्सव में बच्चों से बात करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। अमृत विचार

विकास की नई ऊंचाइयों पर उत्तर प्रदेश : योगी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ/गोरखपुर

- **मुख्यमंत्री ने किया गोरखपुर महोत्सव का समापन, छह विभूतियां 'गोरखपुर रत्न' से सम्मानित**

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश में अब केवल संभावनाओं की चर्चा नहीं होती, बल्कि मजबूत इच्छाशक्ति के साथ परिणाम धरातल पर दिखाई देते हैं। सरकार की दृढ़ नीति और संकल्प का ही परिणाम है कि आज उत्तर प्रदेश माफियामुक्त, दंगामुक्त होकर विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है।

मुख्यमंत्री मंगलवार अपराह्न रामगढ़ताल के सामने चंपा देवी पार्क में आयोजित गोरखपुर महोत्सव के औपचारिक समापन समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने स्थानीय छह विभूतियों को 'गोरखपुर रत्न' से सम्मानित किया और महोत्सव की स्मारिका 'अभ्युदय' का विमोचन किया। योगी ने कहा कि सरकार की स्पष्ट इच्छाशक्ति से प्रदेश में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। आज नौजवानों को रोजगार मिल रहा है, किसानों की आय में वृद्धि हो रही है और व्यापारी भयमुक्त वातावरण में अपना कारोबार बढ़ा रहे हैं। बहन-बेटियां सुरक्षित माहौल में स्कूल और बाजार जा पा रही हैं। उन्होंने सख्त शब्दों में कहा कि यदि कोई बहन-बेटियों की सुरक्षा से खिलवाड़ करने का दुस्साहस करता है, तो उसे कानून का कठोर सामना करना पड़ेगा। यह परिवर्तन तभी संभव हुआ है, जब सरकार में जनसेवा की सच्ची भावना और निर्णय लेने का साहस हो।

2017 से पहले और बाद जमीन-आसमान का फर्क

- योगी ने कहा कि 2017 से पहले गोरखपुर और प्रदेश की स्थिति बदहाल थी। सड़कें जर्जर थीं, बिजली संकट था, गुंडा टैक्स वसूला जाता था और बीमारियों का प्रकोप था। आज गोरखपुर और उत्तर प्रदेश विकास की नई बुलंदियों पर हैं। उन्होंने कहा कि मच्छर और माफिया एक-दूसरे के पूरक होते हैं, एक शरीर को बीमार करता है, दूसरा समाज को। स्वच्छता और कानून व्यवस्था के जरिए दोनों पर नियंत्रण किया गया है। मुख्यमंत्री ने बताया कि आज गोरखपुर में शानदार सड़क, रेल और हवाई कनेक्टिविटी है। हजारों करोड़ रुपये का निवेश हुआ है, जिससे करीब 50 हजार युवाओं को रोजगार मिला है।

माघ मेले में मकर संक्रांति स्नान पर्व के लिए तैयारी पूरी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ/प्रयागराज

- **एक करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं के आगमन का अनुमान**

मेला प्रशासन की तैयारी

- **अनुमानित श्रद्धालु :** 1 करोड़ से अधिक
- **स्नान घाट :** 12,100 फीट लंबाई
- **पार्किंग स्थल :** 42 (1 लाख वाहन क्षमता)
- **स्वच्छता कर्मी :** 3,300
- **टॉयलेट :** 25,880
- **सुरक्षा :** 400 एआई व सीसीटीवी कैमरे
- **विशेष सुविधा :** गोल्फ कार्ट व बाइक टैक्सी सेवा

अमृत विचार: संगम नगरी प्रयागराज में आयोजित माघ मेले का दूसरा और महत्वपूर्ण स्नान पर्व मकर संक्रांति 15 जनवरी को होगा। पौष पूर्णिमा स्नान पर्व पर 31 लाख से अधिक श्रद्धालुओं को सकुशल स्नान कराने के बाद अब मेला प्रशासन मकर संक्रांति के लिए पूरी तरह मुस्तैद है। प्रशासन का अनुमान है कि इस पर्व पर एक करोड़ से अधिक श्रद्धालु संगम तट पर आस्था की डुबकी लगाएंगे।

श्रद्धालुओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए मेला क्षेत्र में 12,100 फीट लंबाई में स्नान घाटों का निर्माण किया गया है। भीड़ के दबाव को कम करने के लिए घाटों के समीप ही पार्किंग विकसित की गई है, जिससे श्रद्धालुओं को कम से कम पैदल चलना पड़े। इस बार 42 अस्थायी पार्किंग स्थल बनाए गए हैं, जिनमें एक लाख से अधिक वाहनों की क्षमता है। सुगम आवागमन के लिए गोल्फ कार्ट और बाइक टैक्सी सेवा भी उपलब्ध रहेगी। भीड़ माघ मेला अधिकारी ऋषिराज के अनुसार, पिछले वर्ष मकर संक्रांति पर करीब 29 लाख श्रद्धालु आए थे, जबकि इस बार अनुमान लगभग तीन गुना है। इसी को देखते हुए यातायात और प्रवेश-निकास मार्गों को विशेष रूप से सुव्यवस्थित किया गया है। गंगा में पर्याप्त जल उपलब्धता के लिए कानपुर स्थित बैराज से प्रतिदिन 8000 क्यूसेक जल छोड़ा जा रहा है और सभी 81 नालों की टैपिंग पूरी कर ली गई है। स्वच्छता और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। मेला क्षेत्र को ओडीएफ, दुर्गंध मुक्त और जीरो डिस्चार्ज बनाए रखने के लिए 25,880 टॉयलेट, 11 हजार डस्टबिन, 10 लाख लाइनर बैग और 3,300 स्वच्छता कर्मियों की तैनाती की गई है। सुरक्षा व्यवस्था के तहत मेला क्षेत्र में 17 थाने, 42 पुलिस चौकियां, जल पुलिस, अग्निशमन स्टेशन और पैरामिलिट्री फोर्स तैनात की गई है। एआई आधारित 400 से अधिक कैमरों से क्राउड मॉनिटरिंग और भीड़ घनत्व का विश्लेषण किया जाएगा।

शॉर्ट सर्किट से लगी आग, दो छोलदारियां जलीं

- **अमृत विचार, लखनऊ :** माघ मेला–2026 के दौरान प्रयागराज में फायर सर्विस की सतर्कता और त्वरित कार्रवाई से एक संभावित बड़ा हादसा टल गया। मंगलवार को मेला क्षेत्र अंतर्गत थाना झूंसी, सेक्टर–05 में श्री राम नाम एवं मानव प्रचार संघ के संस्था परिसर में विद्युत आपूर्ति के दौरान लाइट फ्लक्चुएशन के कारण शॉर्ट सर्किट से आग लग गई। घटना की सूचना मिलते ही मौके के पास ड्यूटी पर तैनात दो-पहिया फायर वाहन ने तुरंत घटनास्थल पर पहुंचकर अग्निशमन कार्य शुरू किया। इसके बाद मात्र दो मिनट के भीतर फायर सर्विस के कुल छह वाहन मौके पर पहुंच गए और संगठित तरीके से आग बुझाने की कार्रवाई की गई।

एसआईआर के लंबित मामलों पर जवाब-तलब

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- **सीईओ नवदीप रिणवा ने वीडियोकॉन्फ्रेंसिंग से डीईओ–ईआरओ को दिए सख्त निर्देश**
- **18 को मिशन मोड में पढ़ी जाएगी मतदाता सूची, सोशल मीडिया पर त्वरित समाधान के आदेश**

अमृत विचार: उत्तर प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने मंगलवार को प्रदेश के सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों, उप जिला निर्वाचन अधिकारियों और निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों (ईआरओ) के साथ वीडियोकॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) से जुड़े कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि मतदाता सूची को त्रुटिरहित, पारदर्शी और भरोसेमंद बनाने में किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने निर्देशित किया कि 18 जनवरी 2026 को प्रदेश के सभी बूथों पर बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) मिशन मोड में आलेख्य मतदाता सूची को पुनः पढ़कर मतदाताओं को सुनाएंगे। इस अभियान में राजनीतिक दलों द्वारा नियुक्त बूथ लेवल एजेंट, संबंधित क्षेत्र के पार्षद और ग्राम प्रधान का सहयोग लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए व्यापक मतदाता जागरूकता अभियान चलाया जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि बीएलओ के पास फॉर्म-6 (घोषणा पत्र सहित), फॉर्म-7 और फॉर्म-8 पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हों। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों को निर्देश दिए कि सोशल मीडिया के माध्यम से प्राप्त मतदाताओं की जिज्ञासाओं और शिकायतों का समयबद्ध, तथ्यपरक और स्पष्ट उत्तर दिया जाए, ताकि मतदाताओं के बीच किसी भी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न हो।

नाम–पते की त्रुटियों पर सख्ती

- सीईओ ने निर्देश दिए कि फॉर्म-6 ऑफलाइन भरवाते समय मतदाता का नाम, पता और अन्य विवरण हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में मतदाता के सामने भरवाया जाए, ताकि वर्तनी की किसी भी प्रकार की गलती की संभावना न रहे। इसी प्रकार, ऑनलाइन फॉर्म-6 के मामलों में सत्यापन के दौरान बीएलओ मतदाता से उसका नाम हिंदी में भी भरवाएं, जिससे मतदाता सूची पूरी तरह शुद्ध और अद्यतन हो सके।

'बुक ए कॉल विद बीएलओ' की समीक्षा

- बैठक में 'बुक ए कॉल विद बीएलओ' सुविधा के अंतर्गत 48 घंटे से अधिक समय तक लंबित प्रकरणों की विधानसभा वार समीक्षा की गई। जिन आठ विधानसभा क्षेत्रों मुरादाबाद ग्रामीण, शिकोहाबाद, गढ़मुक्तेश्वर, चायल, मधुबन, कुंदरकी, मनकापुर और मुरादाबाद नगर में 10 से अधिक प्रकरण 48 घंटे से ज्यादा लंबित पाए गए, वहां के ईआरओ से स्पष्टीकरण तलब करने के निर्देश दिए गए। साथ ही सभी ईआरओ को नियमित बूथ वार समीक्षा करने और यह सुनिश्चित करने को कहा गया कि कोई भी प्रकरण 48 घंटे से अधिक लंबित न रहे।

राजनीति | मछुआ समाज अब सिर्फ वोट बैंक नहीं, सत्ता का भागीदार : डॉ. संजय निषाद

निषाद पार्टी के संकल्प दिवस पर एनडीए ने किया ताकत का प्रदर्शन

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: निर्बल इंडियन शोषित हमारा आम दल (निषाद पार्टी) के 13वें संकल्प दिवस पर मंगलवार को राजधानी लखनऊ में एनडीए के सहयोगी दलों की एकजुटता और राजनीतिक ताकत का जोरदार प्रदर्शन देखने को मिला। 2027 के विधानसभा चुनाव में एनडीए की प्रचंड जीत का दावा करते हुए विपक्ष को हाशिये पर पहुंचाने का संकल्प लिया गया।

डॉ. बीआर आंबेडकर सभागार, राम मनोहर लोहिया विधि विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय और राज्य सरकार के कई वरिष्ठ मंत्री, सहयोगी दलों के नेता तथा हजारों कार्यकर्ता मौजूद रहे। निषाद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कैबिनेट मंत्री डॉ. संजय निषाद ने कहा कि 13 साल पहले श्रृंगवेरधाम में संकल्प लिया था कि मछुआ समाज का शोषण करने वाली सरकारों का अंत करेंगे। उन्होंने कहा कि निषाद समाज अब केवल नदी–तालाब तक सीमित नहीं है, बल्कि सरकार बनाना और गिराना भी जानता है। उन्होंने फूलन देवी और स्व. जमुना निषाद की हत्या की सीबीआई जांच की मांग दोहराई और संतकबीरनगर लोकसभा चुनाव में साजिश का आरोप लगाया।

डॉ. संजय निषाद ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में मछुआ समाज के लिए अभूतपूर्व कार्य हुए हैं। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत बीते 11 वर्षों में 41.5 हजार करोड़ रुपये मछुआरों को दिए गए, जबकि पूर्ववर्ती सरकारें दशकों में यह नहीं कर पाईं। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने निषाद पार्टी के नाम को सबसे सुंदर बताते हुए कहा कि भाजपा और निषाद पार्टी का रिश्ता राजनीतिक नहीं, बल्कि पारिवारिक गठबंधन है।

सुभासपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर ने कहा कि यदि निषाद पार्टी और सुभासपा एकजुट रहती हैं, तो बिना उनके सहयोग के कोई भी सरकार नहीं बन सकती।

उन्होंने समाजवादी पार्टी पर तीखा हमला करते हुए कहा कि 2027 में सपा सत्ता से पूरी तरह बाहर हो जाएगी। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने निषाद समाज को भरोसा दिलाया कि आरक्षण का मुद्दा एनडीए सरकार में ही हल होगा। कार्यक्रम में परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह, शिवसेना (शिंदे) के समन्वयक अभिषेक वर्मा सहित एनडीए के कई नेता उपस्थित रहे। संकल्प दिवस ने यह स्पष्ट संदेश दिया कि 2027 के चुनाव की तैयारी में एनडीए पूरी तरह संगठित और आक्रामक मोड में है।

केंद्रीय मंत्री किरण रिजिजू, उप मुख्यमंत्री द्वय केशव प्रसाद मौर्य, ब्रजेश पाठक और संजय निषाद का स्वागत करते कार्यकर्ता।

अमृत विचार

बुधवार, 14 जनवरी 2026

जब मैं कहता हूं कि आप देवी या देवता हैं, तो मेरा मतलब है कि आप में अनंत संभावनाएं हैं, आपकी क्षमताएं अनंत हैं।
-ओशो, दार्शनिक

विफलता और प्रश्न

पीएसएलवी-सी 62 मिशन मई 2025 में प्रक्षेपित पीएसएलवी-सी 61 मिशन की तरह ही असफल हो गया। इसरो की विगत उपलब्धियों और पीएसएलवी की 90 फीसद से ज्यादा सफलता के मद्देनजर शक नहीं कि इसरो अपनी गलती सुधार कर भविष्य में ऐसे मिशन में कामयाब रहेगा। 64 प्रक्षेपणों में पांच विफलताएं बुरा प्रदर्शन नहीं। पीएसएलवी ने ही चंद्रयान-1 और आदित्य-एल 1 सौर वेधशाला जैसे मिशनों को प्रक्षेपित किया था। पर इस मिशन की नाकामी ने इसरो की प्रतिष्ठा, पीएसएलवी की क्षमताओं पर सवाल खड़ा किया है। अंतरिक्ष बाजार में तेजी से उभरते भारत की गति प्रगति को तात्कालिक तौर पर ही सही, झटका तो लगा है। इस विफलता के वित्तीय परिणाम शोचनीय हैं। प्रतिस्पर्धी वैश्विक प्रक्षेपण बाजार में इसरो पीएसएलवी को एक वाणिज्यिक उत्पाद के तौर पर प्रस्तुत करता है। यह ईओएस-ए 1 प्रेक्षण उपग्रह अन्वेषा के साथ सात देशों के स्टार्टअप्स के अलावा शैक्षणिक संस्थानों की ओर से विकसित 15 अन्य पेलोड लेकर जा रहा था, सभी नष्ट हो गए। स्वदेशी संस्थाओं की बात दीगर है, लेकिन विदेशी संस्थाओं का भरोसा इस दोहरी असफलता से किंचित डिगेगा। ऐसे में अंतरिक्ष बाजार की अंतर्राष्ट्रीय बीमा कंपनियां पीएसएलवी के जोखिम का आकलन कर प्रीमियम बहुत ज्यादा बढ़ाएंगी, इसरो का प्रक्षेपण किफायती नहीं रहेगा। चार चरणों वाले रॉकेट पीएसएलवी-सी 62 पहले और दूसरे चरण में सामान्य रहा। तीसरे चरण के दौरान रॉकेट नियत प्रक्षेप पथ से हट गया। वह असामान्य रूप से घूमने लगा, जिसे "रोल रेट डिस्टर्बेंस" कहते हैं, इसके बाद वह अपेक्षित मार्ग पर आगे नहीं बढ़ सका। संभवतः सी 61 मिशन के तीसरे चरण की तरह उसने भी 'चैंबर प्रेशर' खो दिया। नोजल या केसिंग प्रणाली में किसी संरचनात्मक या सामग्री संबंधी विफलता भी इसकी वजह हो सकती है। नाकामी का कारण अभी स्पष्ट नहीं है, जांच जारी है।

पिछले साल की विफलता की वजहें सार्वजनिक नहीं की गईं, फेल्योर एनालिसिस कमिटी की रिपोर्ट प्रधानमंत्री कार्यालय में रखा रह गया। संभवतः रक्षा सुरक्षा मामलों को लेकर गोपनीयता बरती गई हो, ऐसे में इस बार भी उम्मीद कम ही है कि गलतियों की रिपोर्ट सामने आए। कुछ बरसों से नाकामी के विश्लेषण वाली रिपोर्टों को सार्वजनिक करना बंद है। रिपोर्ट सार्वजनिक होती तो पता चलता कि क्या कमियां थीं, उन्हें ठीक करने के लिए क्या किया गया? इस बार बस भरोसा दिलाया गया कि तीसरे चरण के डिजाइन को सुदृढ़ किया गया है, लेकिन नाकामी ही हाथ आई। करदाता जनता और वाणिज्यिक हितधारकों को यह जानने का पूरा हक है कि 2025 में क्या गलत हुआ था? क्या 2026 में भी ऐसी ही गलती दोहराई गई और तीसरा चरण फिर से क्यों प्रभावित हुआ? निजी उद्योगों के लिए अंतरिक्ष निर्माण क्षेत्र खोलने की भारत की पहल पर भी प्रश्न है। ये कभी-कभार होने वाली गड़बड़ियां नहीं है। फिलहाल, इसरो के लिए भरोसा फिर से कायम करने और गुणवत्ता सुनिश्चित करने वाले नियमों एवं प्रक्रियाओं को दोबारा बनाने का मुश्किल काम शुरू कर देना चाहिए, जिसका सबसे अच्छा तरीका तो यही होगा कि अंतरिक्ष विभाग सी 61 मिशन की "फेलियर एनालिसिस कमेटी" द्वारा दी गई रिपोर्ट को जारी करे, जिससे विफलता का सटीक कारण जानकर सबक लिया जा सके।

प्रसंगवश

मोटे अनाजों की खेती में बुंदेलखंड क्यों पिछड़ा

बुंदेलखंड की जलवायु, मिट्टी और पृष्ठभूमि मोटे अनाजों या जिन्हें हम मिलेट्स भी कहते हैं, के अनुकूल थी, लेकिन यह विचारणीय तथ्य है कि बुंदेलखंड से मोटे अनाजों की खेती क्यों गायब सी हो गई है? सरसरी तौर पर देखें तो यह खाद्य सुरक्षा के लिए किए गए सरकारी प्रयासों और हरित क्रांति के परिणामों का एक दुष्प्रभाव-सा दिखता है, परंतु इसके पीछे अनेक महत्वपूर्ण कारण छुपे हुए हैं, जो हमारी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से जुड़े हुए हैं। ऐतिहासिक तौर पर हमारी सभ्यता मोटे अनाजों विशेषकर बाजरा, ज्वार, कोदो, रागी, काकुन, कनकी, मक्का पर निर्भर थीं, क्योंकि इन्हें आसानी से उगाया जा सकता था। ये न सिर्फ पौष्टिक थे, बल्कि शुष्क जलवायु के लिए उपयुक्त भी थे, जिसमें सिंचाई या ज्यादा शारीरिक श्रम की आवश्यकता नहीं पड़ती थी, परंतु उत्पादन कम होने के कारण यह बढ़ती जनसंख्या को खिलाने के लिए पर्याप्त नहीं था। इस समस्या के निवारण हेतु 1960 के दशक में शुरू हुई हरित क्रांति का उद्देश्य

अविनाश झा
डीएफएमओ, चित्रकूट

वैश्विक स्तर पर खाद्य उत्पादन को बढ़ाकर लोगों की खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करना था, जिसके लिए इसमें चावल और गेहूं जैसी अधिक उपज और अधिक कैलोरी प्रदान करने वाली फसलों को प्राथमिकता दी गई। स्वाभाविक रूप से सरकारों और वैज्ञानिकों ने इन अनाजों की किस्में विकसित करने में भारी निवेश किया। उन्होंने उत्पादन बढ़ाने के लिए सब्सिडी, सिंचाई सुविधाएं और रासायनिक उर्वरक उपलब्ध कराए। उन्नत बीजों की अनुपलब्धता और अनुसंधान व विकास में निवेश की कमी के कारण मोटे अनाजों की उत्पादकता कम बनी रही। स्वाभाविक रूप से इससे इनकी खेती में धीरे-धीरे गिरावट आ गई। आंकड़ों के अनुसार वर्ष 1983 से वर्ष 2011 के बीच भारत मंर शहरी और ग्रामीण दोनों ही परिवारों में मोटे अनाज की खपत में भारी कमी आई।

शहरीकरण, खान पान में बदलाव और आधुनिक जीवनशैली से भी मोटे अनाजों के उपभोग में कमी आई। परिष्कृत गेहूं और पॉलिश किए हुए चावल हमारे मुख्य भोजन बन गए। गेहूं और चावल को 'बेहतर' या उच्च सामाजिक स्थिति वाला अनाज माना जाने लगा, जबकि मोटे अनाजों को 'गरीबों का भोजन' समझकर उपेक्षा की जाने लगी। भारत में वर्ष 1961 और वर्ष 2011 के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में कुल अनाजों में मोटे अनाजों का अनुपात 35 प्रतिशत से घटकर 5 प्रतिशत हो गया और शहरी क्षेत्रों में यह 17 प्रतिशत से घटकर 3 प्रतिशत हो गया। मोटे अनाजों की कम उत्पादकता ने भी इसकी खेती पर असर डाला है। भारत में वर्ष 1961 और वर्ष 2011 के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में कुल अनाजों में मोटे अनाजों का अनुपात 35 प्रतिशत से घटकर 5 प्रतिशत हो गया और शहरी क्षेत्रों में यह 17 प्रतिशत से घटकर 3 प्रतिशत हो गया। मोटे अनाजों की कम उत्पादकता ने भी इसकी खेती पर असर डाला है। बुंदेलखंड के दृष्टि से देखें, तो मोटे अनाजों की खेती निरंतर कम होते रहने के पीछे यहां की अन्ना प्रथा को एक महत्वपूर्ण कारण माना जाता रहा है, लेकिन मोटे अनाजों की खेती के प्रति अरुचि का सबसे बड़ा कारण बेहतर मार्केटिंग व्यवस्था का अभाव, जागरूकता, नई तकनीकों के उपयोग में कमी, मंडी में खपत, प्रोसेसिंग व्यवस्था का अभाव है। जाहिर तौर पर कोई भी किसान अब सिर्फ खाने के लिए खेती नहीं करता है, बल्कि यह उसकी आजीविका का साधन है। हाल के दिनों में एफ पीओ/ एफपीसी के माध्यम से बेहतर मार्केटिंग व्यवस्था, प्रोसेसिंग युनिटों की स्थापना, मिलेट्स महोत्सव के जरिए जागरूकता और जानकारी बढ़ाना, किसानों को बाजार से सीधे जोड़ने के प्रयासों से मोटे अनाजों की खेती के प्रति रुचि बढ़ी है। आशा है कि इससे निकट भविष्य में बुंदेलखंड फिर से अपनी पुरानी पहचान पाने में सफल होगा।

नाटो के अस्तित्व पर मंडरा रहे संकट के बादल

दिग्विजय सिंह
कानपुर

नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी ऑर्गेनाइजेशन (नाटो) के अस्तित्व पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। इसकी वजह अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की दादागिरी है। वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को उनके देश में घुसकर गिरफ्तार किए जाने के बाद से ही ट्रंप अपनों के साथ ही विरोधियों के भी निशाने पर हैं, लेकिन ग्रीनलैंड पर कब्जे और कोलंबिया, क्यूबा, मैक्सिको जैसे देशों पर हमले की धमकी अब उनके मित्र देशों के राष्ट्राध्यक्षों को भी रास नहीं आ रही है। ग्रीन लैंड को अमेरिका में मिलाने की बार-बार धमकी के बाद फ्रांस, ब्रिटेन जैसे देशों के राष्ट्र प्रमुखों ने गंभीर परिणाम भुगतने की न सिर्फ चेतावनी दी है, बल्कि इशारे में यह भी बता दिया है कि नाटो का अस्तित्व इससे मिट जाएगा।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद नाटो की स्थापना 1949 में हुई थी। शुरुआती दौर में इस संगठन में अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन और फ्रांस शामिल थे। इसका मूल उद्देश्य संगठन के किसी भी देश पर हमले की स्थिति में सदस्य देश मदद को आगे आएंगे और आक्रमण करने वाले देश के विरुद्ध मिलकर लड़ेंगे। दुनिया के सबसे बड़े इस सैन्य संगठन से लोहा लेने की स्थिति में फिलहाल कोई गैर-नाटो देश नहीं है, लेकिन मादुरो की गिफ्तारी के बाद पूरी दुनिया में भूचाल आ गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव ने भी इस घटना को लेकर गंभीर टिप्पणी की और अमेरिका को चेताया।

रूस, चीन जैसे देशों ने ट्रंप से मादुरो को तत्काल छोड़ने की मांग की, लेकिन अमेरिका के मित्र राष्ट्रों ने बयान देने में संयम बरता। अब वे भी ट्रंप के विरुद्ध दिख रहे हैं। इसकी वजह ट्रंप का आक्रामक रवैया है। ट्रंप लगातार कह रहे हैं कि वे डेनमार्क के नियंत्रण वाले ग्रीन लैंड को अमेरिका में मिलाना चाहते हैं, क्योंकि वहां आसपास रूस, चीन जैसे विरोधी देशों की सेनाएं हैं। पिछले दिनों एयर फोर्स वन में पत्रकारों से उन्होंने कहा कि हमें राष्ट्रीय सुरक्षा के लिहाज से ग्रीनलैंड चाहिए। हम 20 दिन में इस पर बात करेंगे। उनके इस बायान पर डेनमार्क की प्रधानमंत्री मेटे फ्रेडरिकसन ने सख्त रुख अपनाया और साफ कर दिया कि अमेरिका ने ऐसा किया तो यह नाटो के अंत की शुरुआत होगी।

नॉर्डिक देशों के साथ ही ब्रिटेन डेनमार्क और ग्रीनलैंड के आत्मनिर्णय के अधिकार का समर्थन करके ट्रंप को यह बता दिया कि उन्हें अब अपने बयान वापस लेने चाहिए। ग्रीनलैंड भले ही काफी हद तक स्वायत्त है, लेकिन अभी वह डेनमार्क का हिस्सा है। ऐसे में अगर अमेरिका वहां सैन्य कार्रवाई करता है, तो फिर यह संगठन में फूट की शुरुआत होगी। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों, जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मर्ज, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टार्मर ने डोनाल्ड ट्रंप को चेताते हुए कहा है कि ग्रीनलैंड वहां के लोगों का है और इसके भविष्य का फैसला सिर्फ डेनमार्क और ग्रीनलैंड ही करेंगे। हालांकि इन चेतावनियों का फर्क ट्रंप पर होता नहीं दिख रहा है।

नाटो के रक्षा बजट में अमेरिका का योगदान करीब 16 फीसदी है। अमेरिका के सांसद ही नाटो से अमेरिका के अलग होने की मांग कर रहे हैं। हालांकि ट्रंप सामरिक दृष्ट से कभी नहीं चाहेंगे कि नाटो से अमेरिका अलग हो, लेकिन उनकी बढ़ती महत्वाकांक्षा इस संगठन को मटियामेट कर सकती है। मादुरो की गिरफ्तारी के बाद ट्रंप वेनेजुएला की नई राष्ट्रपति को भी लगातार धमकी दे रहे हैं। माना जा रहा है कि वहां के तेल भंडार और व अन्य खनिजों पर अधिकार प्राप्त करने के लिए अमेरिका फिर हमले करेगा और वहां के लोगों को चैन से जीने नहीं देगा।

मादुरो की गिरफ्तारी के बाद कोलंबिया पर भी अमेरिकी हमले का खतरा मंडरा रहा है। वहां के राष्ट्रपति गुस्तावों पेट्रो को ट्रंप का विरोधी माना जाता है। ट्रंप की कोशिश वहां समर्थक सरकार लाने की है ताकि वहां के संसाधन अमेरिका के काम आ सकें। इसीलिए वे पेट्रो को लगातार धमकियां दे रहे हैं। वेनेजुएला पर कार्रवाई के बाद राष्ट्रपति पेट्रो ने डोनॉल्ड ट्रंप को सीधी चुनौती दी है और कहा है कि आओ मुझे पकड़ लो, मैं यहीं इंतजार कर रहा हूं। कोलंबिया से अमेरिका में ड्रग्स आ रही है यह आरोप ट्रंप का है। उन्होंने कहा है कि कोलंबिया को एक बीमार आदमी चला रहा है, जो अमेरिका में कोकीन बेचता है। इस बयान के बाद के बाद अब हमले की आशंका और गहरा गई है।

मादुरो ने भी ट्रंप को गिरफ्तारी की चुनौती दी थी। परिणाम यह रहा कि अमेरिका ने सैन्य कार्रवाई की और उन्हें गिरफ्तार किया। राष्ट्रपति ट्रंप ने मेक्सिको को भी चेतावनी दी है। उनका आरोप मेक्सिको पर अमेरिका में ड्रग्स भेजने का है। उन्होंने कहा है कि मेक्सिको को अपनी हालत सुधारनी होगी, क्योंकि ड्रग्स मेक्सिको के रास्ते अमेरिका में आ रहा है। इसे रोकने के लिए हमें कुछ करना होगा। उनके इस बयान के बाद मेक्सिको के लोग डरे हुए हैं। मेक्सिको की राष्ट्रपति क्लाउडिया शिनबाम ने ट्रंप के गुस्से को शांत करने की कोशिश की है और कहा है कि "मुझे हमले की संभावना पर विश्वास नहीं है, मुझे तो यह भी विश्वास नहीं है कि वे इसे गंभीरता से ले रहे हैं। शिनबाम ने ट्रंप को सुझाव देते हुए कहा है कि विदेशी सैन्य हस्तक्षेप से संगठित अपराध का समाधान नहीं होता"। हालांकि ट्रंप कब क्या करेंगे कह पाना कठिन है। यही वजह है कि पूरी दुनिया की नजर ट्रंप के अगले कदम पर है।

माना जा रहा है कि अगर ट्रंप अब किसी अन्य देश पर कार्रवाई करते हैं, तो चीन का हौसला भी बढ़ेगा और भी ताइवान पर हमला करके उसे अपने में मिलाने की कोशिश करेगा। चीन ने यह देख लिया कि मादुरो के मामले में संयुक्त राष्ट्र संघ ने निंदा के अलावा कुछ नहीं किया।

रूस, चीन जैसे देशों ने ट्रंप से मादुरो को तत्काल छोड़ने की मांग की, लेकिन अमेरिका के मित्र राष्ट्रों ने बयान देने में संयम बरता। अब वे भी ट्रंप के विरुद्ध दिख रहे हैं। इसकी वजह ट्रंप का आक्रामक रवैया है।

आमने

चुनाव शुरू होने के बाद से, मैंने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके बताया है कि क्या-क्या गलत काम हुए हैं। पिंपरी-चिंचवाड़ इतना समृद्ध निगम था, फिर भी उन्हें बॉन्ड जारी करने पड़े। विभिन्न विभागों में लगभग 4,000 करोड़ रुपये के बिल लंबित हैं और भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। मैंने इसके उदाहरण दिए हैं।

- अजीत पवार, एनसीपी प्रमुख

सामने

मैं अपने वचन का पक्का हूं। इसीलिए, जब यह तय हुआ कि पुणे और पिंपरी-चिंचवाड़ में हम एनसीपी के साथ गठबंधन में चुनाव नहीं लड़ेंगे, तो हमने यह भी कहा था कि यह एक सौहार्दपूर्ण मुकाबला होगा और हम एक-दूसरे पर कोई व्यक्तिगत हमला नहीं करेंगे। हमने अंत तक उस प्रतिबद्धता का पालन किया, लेकिन अजीत पवार ने नहीं किया। उन्होंने ऐसा क्यों किया, यह मुझे नहीं पता।

- देवेंद्र फडणवीस, मुख्यमंत्री महाराष्ट्र

भारत को स्पेस सुपरपावर बनाता प्राइवेट सेक्टर

विवेक शुक्ला
पूर्व सूचना अधिकारी
यूएई एंबेसी

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के सोमवार को पोलर सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल (पीएसएलवी) मिशन में एक निजी क्षेत्र की भागीदारी रही। पहली बार, हैदराबाद की निजी कंपनी ध्रुवा स्पेस ने सात सैटेलाइट प्रदान किए, जो इसरो के मिशन का हिस्सा बने। इस ताजा मिशन में निजी क्षेत्र की भागेदारी से साफ है कि भारत के अंतरिक्ष इकोसिस्टम में निजी कंपनियों का योगदान रहने वाला है। निजी क्षेत्र को फंडिंग, रेगुलेटरी सपोर्ट और तकनीकी विशेषज्ञता की जरूरत है। इसरो के साथ साझेदारी से ये दूर हो सकती हैं। निजी क्षेत्र की भूमिका कितनी अहम है?

इसरो के मिशनों में निजी कंपनियां अब सैटेलाइट निर्माण, लॉन्च व्हीकल विकास और डेटा सेवाओं में सक्रिय हैं। ध्रुवा स्पेस के सात सैटेलाइट्स पीएसएलवी मिशन में शामिल होने से पता चलता है कि निजी क्षेत्र सस्ते, नवीन समाधान प्रदान कर रहा है। इससे लॉन्च क्षमता बढ़ रही है और लागत कम हो रही है। पहले इसरो अकेले ही सब कुछ संभालता था, लेकिन अब 300 से अधिक स्टार्टअप्स इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं। कंपनियां जैसे स्काईरूट एयरोस्पेस, सेलेस्टियल एयरोस्पेस, अग्निकुल कॉसमोस और पिक्सेल स्पेस सैटेलाइट लॉन्च और अर्थ ऑब्जर्वेशन में योगदान दे रही हैं। निजी क्षेत्र की भागीदारी से इसरो को बड़े मिशनों पर फोकस करने का मौका मिलता है, जबकि छोटे कार्य निजी कंपनियां संभालती हैं।

इस संदर्भ में, गुरुग्राम के युवा वैज्ञानिकों का एक समूह विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनमें से कई आईआईटी के छात्र हैं और टीम का नेतृत्व युवा वैज्ञानिक श्रेयांस जैन कर रहे हैं। उनकी कंपनी, सेलेस्टियल एयरोस्पेस, एक क्रांतिकारी बैलून-सहायता प्राप्त रॉकेट लॉन्च सिस्टम विकसित कर रही है। इस तकनीक में एक बड़ा बैलून रॉकेट को ऊपरी वायुमंडल तक ले जाता है, जहां हवा पतली होती है और प्रतिरोध कम। वहां से रॉकेट प्रज्वलित होता है, जिससे ईंधन की बचत होती है और पेलोड क्षमता 2-3 गुना बढ़ जाती है। श्रेयांस बताते हैं, "जमीन से लॉन्च करने में घनी हवा और गुरुत्वाकर्षण से लड़ना पड़ता है, जिससे ईंधन बर्बाद होता है। हमारा तरीका कुशल है और लागत कम करता है।" उनकी टीम हाई-प्रेशर इन्फ्लेटेबल संरचनाओं पर काम कर रही है, जो गर्म गैसों से संचालित होती हैं। भविष्य में न्यूक्लियर प्रोपल्शन जैसी उन्नत तकनीकें जोड़ी जा सकती हैं, जो ग्रहों के बीच तेज यात्रा सक्षम करेंगी।

यह नवाचार इसरो के मिशनों से सीधे जुड़ा है। इसरो के पीएसएलवी मिशन में निजी क्षेत्र की भागीदारी दिखाती है कि कैसे युवा उद्यमी राष्ट्रीय प्रयासों को मजबूत कर रहे हैं। कई महीनों के अकेले शोध के बाद, श्रेयांस ने आईआईटी ग्रेजुएट्स और युवा वैज्ञानिकों की टीम बनाई। अब वे विंड टनल टेस्ट और छोटे प्रयोग कर रहे हैं, लक्ष्य 2026 के अंत तक प्रोटोटाइप लॉन्च करना है। टीम ने भारत और विदेश में पेटेंट फाइल किए हैं, और अंतिम लक्ष्य ऑर्बिटल लॉन्च है। निजी क्षेत्र अंतरिक्ष मिशनों में बड़ी भूमिका निभा रहा है, जो भारत के सपनों के लिए अनिवार्य है।

यह भूमिका भारत के लिए कितनी जरूरी है? भारत की स्पेस इकोनॉमी वर्तमान में लगभग 9 बिलियन डॉलर की है, जो वैश्विक बाजार का 2-3% है। सरकार का लक्ष्य 2033 तक इसे 44 बिलियन डॉलर तक पहुंचाना है। निजी क्षेत्र इस लक्ष्य की कुंजी है। 2020 से शुरू हुए सुधारों ने इसे संभव बनाया है। इंडियन स्पेस पॉलिसी 2023, आईएन-स्पेस (इंडियन नेशनल स्पेस प्रमोशन एंड ऑथोराइजेशन सेंटर) का गठन और 100% एफडीआई की अनुमति ने निजी कंपनियों को प्रोत्साहित किया है। इससे स्वदेशी तकनीक विकसित हो रही है, जो आत्मनिर्भर भारत की दिशा में महत्वपूर्ण है। कृषि, आपदा प्रबंधन, टेलीकॉम और इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे क्षेत्रों में स्पेस टेक्नोलॉजी की मदद से समाज का विकास हो रहा है। उदाहरण के लिए, अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट्स फसल पूर्वानुमान और बाढ़ चेतावनी में उपयोगी हैं।

निजी क्षेत्र की भागीदारी रोजगार सृजन भी कर रही है। युवा वैज्ञानिक जैसे श्रेयांस जैन की टीम आईआईटी छात्रों को अवसर दे रही है, जो अन्यथा विदेश जा सकते थे। इससे ब्रेन ड्रेन रुकता है और स्थानीय नवाचार बढ़ता है। वैश्विक स्तर पर, भारत को लॉन्च प्रदाता के रूप में स्थापित करने में निजी क्षेत्र मदद कर रहा है। स्पेसएक्स जैसी कंपनियों की तरह, भारतीय स्टार्टअप्स सस्ते लॉन्च प्रदान कर सकते हैं, जो विकासशील देशों के लिए आकर्षक है। इससे विदेशी मुद्रा अर्जित होती है और भारत की सॉफ्ट पावर बढ़ती है। सेलेस्टियल एयरोस्पेस जैसी कंपनियां बड़े बदलाव ला सकती हैं। सेलेस्टियल एयरोस्पेस की बैलून तकनीक ईंधन बचत से पर्यावरण अनुकूल भी है, जो सस्टेनेबल स्पेस एक्सप्लोरेशन की दिशा में कदम है। भविष्य में, निजी क्षेत्र मंगल मिशन या स्पेस टूरिज्म में योगदान दे सकता है।

बेशक, इसरो के मिशनों में निजी क्षेत्र की भूमिका न केवल अहम है, बल्कि भारत की अंतरिक्ष महत्वाकांक्षाओं के लिए अनिवार्य है। श्रेयांस जैन जैसे युवा इनोवेटर्स इस परिवर्तन के प्रतीक हैं। उनकी सेलेस्टियल एयरोस्पेस कंपनी पीएसएलवी जैसे मिशनों से प्रेरित होकर नई ऊंचाइयां छू रही है। निजी क्षेत्र से नवाचार, लागत कमी और वैश्विक प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी, जो भारत को स्पेस सुपरपावर बनाएगा। यह आत्मनिर्भरता, आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण की कुंजी है। जैसे-जैसे स्टार्टअप्स बढ़ेंगे, भारत का अंतरिक्ष भविष्य और उज्ज्वल होगा।

गुरुग्राम के युवा वैज्ञानिकों का एक समूह विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनमें से कई आईआईटी के छात्र हैं और टीम का नेतृत्व युवा वैज्ञानिक श्रेयांस जैन कर रहे हैं। उनकी कंपनी, एक क्रांतिकारी बैलून-सहायता प्राप्त रॉकेट लॉन्च सिस्टम विकसित कर रही है।

सोशल फोरम

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति और नाटो की वास्तविक प्रकृति

आज जब अमेरिका ग्रीनलैंड पर कब्जा करना चाहता है, जो एक नाटो सदस्य देश का अंग है, तो ऐसी एक घटना पर ध्यान देना चाहिए, जो भारत से जुड़ी है। 1961 में जब भारत ने गोवा, दमन और दीव पर सैन्य कार्रवाई कर उन्हें पुर्तगाली शासन से मुक्त कराया, उस समय पुर्तगाल नाटो (NATO) का सदस्य था। इसके बावजूद नाटो ने भारत के विरुद्ध कोई सामूहिक सैन्य कार्रवाई नहीं की। यह तथ्य अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की जटिलताओं और नाटो की वास्तविक प्रकृति को समझने में मदद करता है। सबसे पहला कारण यह था कि नाटो एक सामूहिक रक्षा संगठन है, आक्रामक युद्धों में हस्तक्षेप करने वाला वैश्विक पुलिस बल नहीं। नाटो की संधि का अनुच्छेद-5 तभी लागू होता है, जब किसी सदस्य देश पर उसके अपने क्षेत्र में सशस्त्र हमला हो। गोवा उस समय यूरोप में स्थित पुर्तगाल का हिस्सा नहीं था, बल्कि एक उपनिवेश था। कई नाटो देशों की नजर में उपनिवेशों की रक्षा को अनुच्छेद-5 के अंतर्गत लाना कानूनी रूप से स्पष्ट नहीं था।

प्रवीण झा
लेखक

दूसरा महत्वपूर्ण कारण था औपनिवेशिक व्यवस्था का पतन। 1960 के दशक तक विश्व समुदाय में उपनिवेशवाद के विरुद्ध माहौल बन चुका था। भारत की कार्रवाई को कई देशों ने औपनिवेशिक शासन के अंत के रूप में देखा, न कि एक संप्रभु राष्ट्र पर आक्रमण के रूप में। अमेरिका और ब्रिटेन जैसे नाटो के प्रभावशाली सदस्य भारत को शीत युद्ध के संदर्भ में पूरी तरह विरोधी खेमे में धकेलना नहीं चाहते थे।

तीसरा कारण था रणनीतिक यथार्थवाद। भारत एक बड़ा, स्थिर और क्षेत्रीय रूप से महत्वपूर्ण देश था। गोवा के लिए भारत से युद्ध करना न तो व्यावहारिक था और न ही नाटो के दीर्घकालिक हितों में।

इस प्रकार, कानूनी सीमाओं, बदलते वैश्विक नैतिक दृष्टिकोण और रणनीतिक हितों के कारण नाटो ने पुर्तगाल का साथ देकर युद्ध में उतरने से परहेज किया। यह घटना दिखाती है कि अंतर्राष्ट्रीय गठबंधन भी हमेशा अपने घोषित सिद्धांतों से नहीं, बल्कि परिस्थितियों और हितों से संचालित होते हैं।

-फेसबुक वॉल से

सामयिकी

सावधान, रात में सड़कें पुरुषों के लिए आरक्षित हैं

दिन में जितना महिलाओं के लिए व्यवस्था को आरक्षित किया गया, उतनी ही रातें महिलाओं के लिए भयावह, असुरक्षित, सीमाबद्ध और खोल में सिमटाव लिए है, क्योंकि रात में सड़कें पुरुष वर्ग के लिए जो आरक्षित हैं। महिला सशक्तिकरण और स्वावलंबन के कपाट केवल दिन दोपहरी ही खुलते हैं। रात की कालिमा में जाने किस पुरुष पर उसकी मूल जंतु प्रकृति हावी हो जाए कहा नहीं जा सकता। उत्तराखंड में ऋषिकेश के वंतारा रिजॉर्ट में अंकिता भंडारी हत्याकांड हो अथवा उन्नाव बलात्कार या निर्भया का दिल दहलाने वाला हत्याकांड तमाम मामलों में मृतक महिला के नाम केवल मोमबत्तियां, रैली, धरना, प्रदर्शन और मृत्यु के पश्चात चारित्रिक बलात्कार आता है और आरोपी रसूख वाले हैं, तो सबूत और गवाहों के नामोनिशान मिटा दिए जाते हैं। कानून न्याय भावनाओं से नहीं सबूत और गवाहों से संचालित होता है। पितृसत्तात्मक, अर्थकेंद्रित व्यवस्था सबूत मिटाने और गवाह को तोड़ने में सदा कामयाब रही है। रात में सड़कों पर पुरुषों का वर्चस्व रहा है।

बीना नयाल
लेखिका, अल्मोड़ा

मेरी एक कॉलेज मित्र, जिसने एमबीए किया था, नोएडा की किसी कंपनी में कार्यरत थी। दूसरा बच्चा होने के पश्चात उसके प्रमोशन के लिए शिफ्ट ड्यूटी करना अनिवार्य हो गया, जब भी शिफ्ट होती थी, उसका पति या देवर उसको आनंद विहार लेने जाता था, क्योंकि ऑफिस कैब केवल आनंद विहार तक उपलब्ध थी। बीते दिनों रात 10:30 बजे उसका फोन आया। मैं अर्धनिद्रा की अवस्था में थी। मैंने बोला कहां है तू? वो बोली आनंद विहार पहुंचने वाली हूं। मैंने पूछा पति आएंगे, वह बोली नहीं वह 26 जनवरी की परेड के पास का इंतजाम करने गए हैं। बोली आज नौकरी के चक्कर में घर में कहासुनी हो गई। सब बच्चों का एहसान जताते हैं। इसलिए मैंने देवर को भी आने का सही वक्त नहीं बताया है। आज रानी लक्ष्मीबाई बनघर तक का ऑटो लूंगी। मित्र दिल्ली में ज्योति कॉलोनी में डीडीए फ्लैट में रहती थी। अगले दिन 26 जनवरी का दिन था, सोचा उसने गणतंत्र दिवस की परेड लाइव देखी होगी, तो शाम को फोन लगाया। फोन उठाते ही वह रुंधे गले से बोली यार, कल हादसा होते-होते बचा। आनंद विहार से केवल नंद नगरी का ऑटो मिला, क्योंकि उसका घर वहीं था और वो आगे जाने को तैयार नहीं था। रात 11:30 बजे ऑटो वाले को पैसे दे रही थी कि दो बाइक सवार ने मेरे ऊपर पिस्टल तान दी और बोला चल मेरे साथ में। मैं रोने लगी। मैंने जल्दी से ऑटो वाले के हाथ जोड़े और बोली भैया बचा लो मुझे। ऑटो वाले ने अपनी जान जोखिम में डालकर तेजी से ऑटो चलाया और सीधा नंद नगरी थाने में रोका, जहां मुझे महिला पुलिस को सौंप दिया। वह बाइक सवार भी पीछा करते रहे। आटो वाले ने पुलिस वालों को सब कुछ बताया, मैं कांप रही थी, डर के मारे आवाज भी नहीं निकल रही थी। मैंने घर पर फोन किया, देवर आया तो पुलिस वालों ने फटकारा, कैसे अकेले महिला को रात में सड़कों पर सफर करने छोड़ देते हैं? इस घटना के पश्चात मेरी मित्र ने नौकरी के साथ स्वरोजगार पर भी ध्यान दिया। स्वरोजगार बढ़िया चल निकला तो नौकरी छोड़ दी। आज भी उस घटना को याद करके मुहं से बस यही निकलता है कि रात में सड़कें पुरुषों के लिए आरक्षित हैं। समाज में समृद्धि का ग्राफ जितनी तेजी से बढ़ रहा है, उतनी तीव्रता से महिला सुरक्षा का ग्राफ लगातार गिर रहा है। शायद यह परवरिश का ही नतीजा है कि हम महिलाओं को तो नैतिकता के सांचे में ढाल देते हैं, परंतु कुछ पुरुषों की गलत शिक्षा, उन्हें मर्द तो नहीं बनाती है, लेकिन भेड़िया जरूर बना डालती हैं, जिससे पीड़ित और परिवार तो प्रभावित होता ही है। साथ ही पूरा समाज और तंत्र की नीयत भी संदेह व निशाने पर आ जाती है।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उ.प्र.), पिन कोड-243006 से मुद्रित एवं 932 कटरा चांद खां, भारत पेट्रोल पंप के सामने पीलीभीत बाईपास रोड बरेली (उ.प्र.) पिन कोड-243005 से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, स्थानीय संपादक- नवीन गुप्ता*** 0581-4000222 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2019/78502, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र बरेली होगा)।

घुघुतिया पर्व

लोकसंस्कृति और उत्तरायणी की आत्मा

'काले कौवा आ ले घुघुति माला खा ले- घुघुति माला खा ले' कभी ये आवाज उत्तराखंड के सुदूर ग्रामीण अंचलों, उत्तराखंड के विकसित क्षेत्रों सहित प्रत्येक उत्तराखंडी परिवार का बहुत ही लोकप्रिय गीत हुआ करता था। प्रत्येक उत्तराखंडी परिवार चाहे वह प्रदेश में अथवा देश के किसी भी कोने रहता हो। इस घुघुतिया त्योहार को बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। यह कुमाऊं क्षेत्र में अत्यंत लोकप्रिय त्योहार है, जिसे उत्तराखंड में उत्तरायणी त्योहार के साथ मनाया जाता है। घुघुतिया त्योहार मुख्य रूप से कुमाऊं क्षेत्र में बहुत ही प्रचलित है, उत्तराखंड में उत्तरायणी का त्योहार धार्मिक मान्यता लिए हुए है। बागेश्वर में प्रति वर्ष उत्तरायणी मेले का आयोजन होता है, जो एक सप्ताह तक चलता है। यह उत्तराखंड के क्षेत्र का अत्यंत श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाने वाला त्योहार माना जाता है। आज भी उत्तराखंड के लोग गांव हों या भारत वर्ष में कहीं, जहां उत्तराखंडी प्रवासी बंधु रहते हैं, उत्तरायणी के त्योहार को बड़ी ही धूमधाम से मनाते है।

मोहन सिंह बिष्ट
समाजसेवी

उत्तरायणी त्योहार पूरे उत्तराखंड का लोकप्रिय त्योहार है। इसका धार्मिक महत्व भी है। कहते हैं अयोध्या में जब प्रभु श्रीराम का भव्य राजतिलक का आयोजन हो रहा था, तो इस आयोजन में सम्मिलित होने के लिए जगत पिता ब्रह्मा जी भगवान विष्णु की मानस पुत्री सरयु देवी को अपने साथ अयोध्या लेकर जा रहे थे तभी मार्ग में मार्कण्डेय ऋषि का आश्रम पड़ा। मार्कण्डेय ऋषि एक वृक्ष के नीचे साधना कर रहे थे। यह देखकर सरयू रुक गईं और मार्ग में ऋषि के बैठने से उत्पन्न बाधा के कारण व्याकुल होने लगीं। यह देखकर माता पार्वती को उन पर दया आ गई, उन्होंने भगवान शिव की ओर उनकी सहायता हेतु देखा, तो भोलेनाथ ने लीला रची, उन्होंने एक व्याघ्र का रूप धारण कर लिया और माता पार्वती गोमाता रूप धरकर लीला करने लगे। व्याघ्र गाय की ओर झपटा उससे मार्कंडेय जी ध्यान टूटा और वो गोमाता की रक्षा हेतु मार्ग से हट गए। देवी सरयू प्रसन्न होकर अपने मार्ग से बहकर आगे बढ़ गईं, जिस स्थान पर भगवान शिव ने व्याघ्र का रूप धरा था, उस स्थान ऋषि मार्कण्डेय द्वारा भगवान व्याघ्रेश्वर महादेव को शिवलिंग के रूप में स्थापित किया, उन्हीं के नाम पर व्याघेश्वर से धीरे-धीरे अपभ्रंश होकर, उस स्थान का नाम बागेश्वर पड़ा। उसी स्थान पर पवित्र गोमती नदी और मान्यता है कि लुप्त सरस्वती नदी की धारा भी बहती थी। इससे तीनों पवित्र नदियों का संगम होने के कारण यह स्थान और भी पवित्र हो गया। इस दिन को समस्त जनमानस नदी के पवित्र जल में स्नान कर सूर्य को अर्घ्य देकर पूजा आराधना करने लगा। धीरे-धीरे इस स्थान पर दूर-दूर से श्रद्धालु आकर पूजा-अर्चना करने लगे तथा स्नान ध्यान और दान इत्यादि से सभी प्रकार कष्टों मुक्त होने की भावना से एकत्र होने लगे। इस स्थान का महत्व बढ़ता गया। उत्तरायणी प्रमुख रूप से मकर संक्रांति का त्योहार ही है। उत्तराखंड में भी यह कुमाऊं क्षेत्र में घुघुति त्योहार और गढ़वाल क्षेत्र में खिचड़ी संक्रांति के नाम से मनाया जाता है और पूरे उत्तराखंड में यह बहुत ही लोकप्रिय त्योहार है। इस दिन लोग प्रात: काल नदी में स्नान करके सूर्य देव को अर्घ्य देते हैं और उनकी उपासना करते हैं तथा खिचड़ी का दान भी करते हैं।

उत्तरायणी कैथीग

उत्तराखंड में जिला बागेश्वर के अलावा उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ तथा बरेली में भी प्रति वर्ष उत्तरायणी का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। राजधानी लखनऊ में विभिन्न पर्वतीय प्रवासी संगठन धूमधाम से उत्तरायणी का त्योहार मनाते हैं। पर्वतीय महापरिषद के द्वारा इस अवसर पर महानगर रामलीला ग्राउंड से लेकर न्यू हैदराबाद स्थित गोमती तट के किनारे भारत रत्न पंडित गोविंद बल्लभ पंत सांस्कृतिक उपवन तक भव्य शोभा यात्रा के साथ दस दिवसीय 'उत्तरायणी कैथीग' का भी आयोजन किया जाता है। इस वर्ष संस्था के रजत जयंती वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 'उत्तरायणी कैथीग' '15 दिवसीय' कर दिया गया है। यह कौथीग (मेला) 14 जनवरी से 28 जनवरी 2026 तक चलेगा। इस मेले में उत्तराखंडी जड़ी बूटियों, खान-पान, पहनावे, हस्तशिल्प, ज्वेलरी, दन, शाक-सब्जी में मूली, गडेरी इत्यादि के स्टॉल लगते हैं तथा उत्तराखंडी लोकसंस्कृति को दर्शाने वाले कार्यक्रम लोकनृत्य लोकगीतों की धूम रहती है। बड़े-बड़े गणमान्य अतिथियों के साथ-साथ आम प्रवासी उत्तराखंडी बंधु भी इस कार्यक्रम में बड़े ही उत्साह से भाग लेते हैं। उत्तरायणी के इस मेले से स्थानीय लोगों में पर्वतीय संस्कृति के प्रति जिज्ञासा और अनुराग बढ़ा है, जिससे भारी संख्या में स्थानीय निवासी भी उत्तराखंडी कार्यक्रमों में जुटते हैं तथा भाग भी लेते हैं।

पौराणिक कथा

उत्तराखंड में घुघुतिया त्योहार के पीछे स्थानीय कथा प्रचलित है कि कुमाऊं क्षेत्र में राजा कल्याण चंद का शासन था, उनके कोई संतान नहीं थी। ईश्वर की आराधना करने के बाद, उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई, जिसका नाम निर्भय चंद था, जिसे प्यार से रानी घुघुतिया कहकर बुलाती थी। घुघुतिया को रानी ने सुंदर सी मोतियों की माला पहना रखी थी। घुघुतिया जब आंगन में खेलता तो रानी मां उसे खिलाते हुए कौओं से कहती थीं। काले कौवा आरे घुघुति की माला खा ले और घुघुति जोर-जोर से ताली बजाकर खुश होता था। घुघुतिया को खेलने के लिए रानी मां पकवान भी रखती थीं, तो कौवे आकर घुघुति के पास एकत्र हो जाते, तो वो उन्हें प्यार से पकवान खिलाता था। धीरे-धीरे घुघुति बड़ा होने लगा और कौवों से उसकी दोस्ती हो गई और वह कौवों के साथ खेलता रहता था। राजा कल्याण चंद का मंत्री बड़ा हो दुष्ट था, जब राजा नि :संतान था, तो उसे राज्य पाने की आस थी, लेकिन राजकुमार घुघुतिया के जन्म लेने से उसका सपना टूट गया था, वो मन ही मन में घुघुतिया से शत्रुता रखने लगा और एक दिन मौका पाकर वह राजकुमार घुघुति को उठाकर उसे मारने की नियत से घने जंगल की ओर ले जाने लगा। ऐसा करते हुए कौवों ने उसे देख लिया। सभी कौवे अपने दोस्त घुघुति को बचाने के लिए मंत्री और उसके साथियों पर टूट पड़े। कुछ कौवे घुघुति की कीमती मोतियों की माला लेकर राजमहल में पहुंचकर कांव-कांव करने लगे। तभी राजा और रानी की नजर घुघुति की माला पर पड़ी, जिसे कौवा चोंच में दबाए हुए था, उसके साथी कांव-कांव कर रहे थे। राजा-रानी समझ गए कि घुघुति संकट में है। राजा ने अपने सैनिकों को लेकर जंगल में जाकर घुघुति को बचाया और उस दुष्ट मंत्री को बंदी बना, उसे मृत्युदंड दिया, घुघुति की जीवन रक्षा होने और सही सलामत घर लौटने पर नगर की राजा सहित समस्त प्रजा बहुत प्रसन्न हुई तथा राजा के आदेश पर नगर में उत्सव का माहौल बन गया। कौओं के सम्मान में सभी नगरवासियों ने घुघुते सहित तरह-तरह के पकवान बनाकर कौवों के साथ-साथ एक दूसरे को भी खिलाए और गीत-संगीत के साथ पूरे वातावरण में हर्षोलासित होकर प्रत्येक वर्ष घुघुतिया त्योहार मनाने लगे। इस घटना का समय और उत्तरायणी का त्योहार एक समय होने के कारण घुघुतिया त्योहार के रूप में मनाया जाने लगा। घुघुति अंग्रेजी अक्षर & के प्रकार का एक पकवान होता है, जो खाने में अत्यंत स्वादिष्ट होता है, जिसे बनाकर उत्तराखंडी माताएं, उन्हें एक मजबूत धागे में माला पिरोकर बच्चों को खेलने के लिए दे देती थीं। सभी बच्चे अपनी-अपनी माला लेकर दौड़ते-हंसते-कूदते अत्यंत प्रसन्न होकर कौवों को आवाज लगाते हैं। 'काले कौवा आ ले घुघुति माला खा ले', 'काले कौवा आले घुघुति माला खा ले'।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और समकालीन कला का संकट

सुमन कुमार सिंह
कलाकार/कला लेखक

भारतीय कला इतिहास की चर्चा करते समय प्राय: यह स्वीकार किया जाता है कि सदियों तक यह परंपरा पुरुषसत्ता, राजसत्ता और धर्मसत्ता के प्रभाव में संचालित होती रही। वरिष्ठ कलाकार और कला समीक्षक अशोक भौमिक के अनुसार, इसी कारण भारतीय कला में लंबे समय तक आम जनजीवन, शर्म, पीड़ा और व्यक्तिगत भावनाओं का प्रत्यक्ष प्रकटीकरण सीमित रहा। इस दृष्टि से देखें, तो उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं सदी के आरंभ में विकसित बंगाल पुनर्जागरण काल की कला भी इस संरचनात्मक सीमा से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकी। ऐसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में स्वतंत्रता के बाद प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप (1947) की स्थापना भारतीय कला में एक निर्णायक मोड़ के रूप में सामने आती है। एफ.एन. सूज़ा, एम.एफ़. हुसैन, एस.एच. रज़ा, के.एच. आरा और रामकुमार जैसे कलाकारों ने न केवल औपनिवेशिक अकादमिक यथास्थिति को चुनौती दी, बल्कि व्यक्तिगत अनुभव, सामाजिक यथार्थ और आधुनिक चेतना को चित्रकला का विषय बनाया। यह वह क्षण था, जब भारतीय कला में कलाकार की निजी अभिव्यक्ति पहली बार पूरे आत्मविश्वास के साथ उभरती है।

संवाद होना चाहिए कला का मूल उद्देश्य

आधुनिकता के विस्तार को आगे बढ़ाते हुए भूपेन खख्खर ने मध्यमवर्गीय जीवन, यौनिक पहचान और घरेलू संसार को चित्रकला के केंद्र में रखा, गुलाम मोहम्मद शेख ने इतिहास, मिथक और समकालीन राजनीति के जटिल संवाद रचे और अर्पिता सिंह ने स्त्री अनुभवों को निजी स्मृति और सामाजिक असुरक्षा के साथ जोड़ा। इन कलाकारों के यहां अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अराजक नहीं, बल्कि वैचारिक जिम्मेदारी के साथ दिखाई देती है। हालांकि पिछले दो-तीन दशकों में समकालीन भारतीय कला में एक ऐसी प्रवृत्ति भी तेजी से उभरी है, जहां अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता स्वयं एक उद्देश्य बनती दिखाई देती है। परिणामस्वरूप ऐसी कृतियां सामने आती हैं, जिनमें न तो माध्यम के साथ गहरा संघर्ष दिखता है, न विषय के साथ कोई जोखिम। कई बार ये कृतियां वैश्विक कला बाजार की मांग, क्यूरेटर-केंद्रित शब्दावली या त्वरित दृश्य प्रभाव के लिए गढ़ी हुई प्रतीत होती हैं। इसी संदर्भ में द आर्ट न्यूजपेपर के सहयोगी संपादक बेन ल्यूक का हालिया टिप्पणी-लेख "वी आर लिविंग इन एन एज ऑफ बैड पेन्टिंग" यानी "हम एक खराब कला के दौर में रह रहे हैं" विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है। ल्यूक स्पष्ट करते हैं कि उनका प्रश्न केवल ब्रिटेन या फ्रिज लंदन जैसे कला मेलों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आज की वैश्विक चित्रकला की वैचारिक स्थिति पर एक गंभीर टिप्पणी है। भारतीय संदर्भ में भी यह प्रश्न अप्रासंगिक नहीं है। एक ओर वी.एस. गायतोंडे, जेराम पटेल या नसरीन मोहम्मदी जैसे कलाकारों की परंपरा है, जहां अमूर्तता भी गहन साधना और अनुशासन से उपजती है। दूसरी ओर आज ऐसी चित्रकला भी दिखाई देती है, जो केवल 'अवधारणा' के नाम पर दर्शक से किसी भी संवेदनात्मक या बौद्धिक संवाद से बचती है।

यहां आम दर्शकों के बीच प्रचलित वह व्यंग्यात्मक किस्सा याद आता है- खाली कैनवास पर गाय के घास चरने की कहानी। यह मजाक भले ही अतिरंजित हो, पर वह उस दूरी की ओर संकेत करता है, जो कई बार समकालीन कला और सामान्य दर्शक के बीच पैदा हो गई है। दर्शक यह मानने को विवश हो जाता है कि आधुनिक कला समझ से परे है, जबकि कला का मूल उद्देश्य संवाद होना चाहिए- भले ही वह सहज न हो।

भारतीय समकालीन कला के सामने चुनौती

निस्संदेह, चित्रकला एक दृश्य भाषा है और उसका अनुवाद शब्दों में अनिवार्य नहीं। किंतु इतिहास बताता है कि महान आधुनिक और समकालीन कलाकारों-चाहे वे रामकुमार, तैयब मेहता हों या के.जी. सुब्रमण्यम, ने अपने समय के प्रश्नों से टकराते हुए ऐसी दृश्य भाषाएं रचीं, जो जटिल होते हुए भी अर्थपूर्ण थीं। यहां बेन ल्यूक का प्रश्न इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह हमें यह याद दिलाता है कि "सब कुछ स्वीकार्य है" का वातावरण कला के लिए उतना ही खतरनाक हो सकता है, जितना सेंसरशिप। भारतीय समकालीन कला के सामने भी आज यही चुनौती है कि वह स्वतंत्रता और जिम्मेदारी, प्रयोग और संवेदना तथा वैश्विक संवाद और स्थानीय अनुभव के बीच संतुलन कैसे बनाए? स्पष्ट है कि 'खराब कला' की यह बहस आने वाले समय में और तेज होगी और ऐसे में संभव है कि भारतीय कला जगत के लिए यह आत्मपरीक्षण का एक जरूरी अवसर भी बन सकती है।

पोंगल: तमिल परंपरा का जीवंत उत्सव

लोकायन

तमिलनाडु का शस्योत्सव अथवा फसल कटाई का पर्व पोंगल केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि प्रकृति, कृषि और जीवन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का सांस्कृतिक उत्सव है। यह पर्व नई शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। इस शुभ अवसर पर सूर्य को समस्त सृष्टि के पीछे निहित जीवन-ऊर्जा के रूप में पूजा जाता है। यह पर्व चार दिनों तक मनाया जाता है और इस अवधि को उत्तरायण पुण्यकालम कहा जाता है, जिसे हिंदू सौर कैलेंडर के अनुसार अत्यंत शुभ माना गया है। इस वर्ष पोंगल 15 जनवरी से 18 जनवरी तक मनाया जाएगा। लगभग दो हजार वर्ष पुराने इस त्योहार के प्रमाण चोल काल से मिलते हैं, जो इसकी प्राचीनता और सांस्कृतिक गहराई को दर्शाते हैं। पोंगल मुख्य रूप से तमिलनाडु में उगाई जाने वाली तीन प्रमुख फसलों चावल, हल्दी और गन्ना के इर्द-गिर्द केंद्रित है। 'पोंगल' शब्द का अर्थ है उबलना या ऊपर से बहना। यही अर्थ उस पारंपरिक व्यंजन से भी जुड़ा है, जो इस पर्व का अभिन्न अंग है। यह उबाल समृद्धि, भरपूर फसल और खुशहाली का प्रतीक माना जाता है।

परंपरागत रूप से पोंगल शुभ मुहूर्त में घर के आंगन में पकाया जाता है। यह मुहूर्त अक्सर मंदिर के पुजारी द्वारा बताया जाता है। आज भी कई घरों में पत्थर से बने चूल्हों पर मिट्टी के बर्तनों में पोंगल पकाने की परंपरा जीवित है। लकड़ी के ईंधन पर पकाया गया पोंगल अपने विशिष्ट स्वाद और सुगंध के लिए जाना जाता है। जैसे ही पकवान उबलकर बर्तन से बाहर आने लगता है, लोग 'पोंगालो पोंगल' का सामूहिक उद्घोष करते हैं। इस समय एक-दूसरे से पूछा जाता है-"पाल पोंगिता?" यानी क्या दूध उबल गया है?-जो शुभता का संकेत होता है। पोंगल की शुरुआत मकर संक्रांति यानी सूर्य उत्तरायण से होती है और यह चार दिनों तक विभिन्न रूपों में मनाया जाता है भोगी पोंगल, थाई पोंगल, मट्टू पोंगल और कानुम पोंगल।

भोगी पोंगल

पोंगल उत्सव का पहला दिन भोगी पोंगल कहलाता है। इस दिन वर्षा और समृद्धि के देवता भगवान इंद्र की पूजा की जाती है, क्योंकि अच्छी फसल के लिए वर्षा का विशेष महत्व होता है। इसी कारण इसे इंद्रन भी कहा जाता है। इस दिन घरों की विशेष साफ-सफाई की जाती है और फर्श पर चावल के घोल से सुंदर कोलम बनाए जाते हैं। कोलम न केवल सजावटी होते हैं, बल्कि उस पवित्र स्थान को भी चिह्नित करते हैं, जहां पोंगल पकाया जाएगा। दिन के अंत तक खेतों से ताजी फसल चावल, हल्दी और गन्ना घर लाई जाती है। शाम को भगवान इंद्र के सम्मान में अलाव जलाए जाते हैं, जिनके चारों ओर नृत्य और गायन का आयोजन होता है।

सूर्य / थाई पोंगल

दूसरा दिन थाई पोंगल या सूर्य पोंगल कहलाता है और इसे सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। इस दिन की शुरुआत प्रात: काल स्नान के बाद कोलम बनाने से होती है, जो प्राय: घर की महिलाएं करती हैं। परिवार के सभी सदस्य नए वस्त्र धारण करते हैं और फिर पोंगल पकाने की मुख्य रस्म आरंभ होती है। मिट्टी के बर्तन में चावल उबाले जाते हैं, जिनमें हल्दी का पौधा बांधा जाता है। बर्तन को सुंदर चित्रकारी से सजाया जाता है और आंगन में चूल्हे पर रखा जाता है। पकने के बाद पोंगल को केले, नारियल और गन्ने के साथ सूर्य देव को अर्पित किया जाता है। पहले देवताओं, फिर मवेशियों और अंत में परिवार व मित्रों को पोंगल बांटा जाता है। इस क्रम का पालन अत्यंत आवश्यक माना जाता है।

मट्टू पोंगल

तीसरे दिन मट्टू पोंगल मनाया जाता है, जो मवेशियों को समर्पित होता है। किसान के जीवन में मवेशियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, इसलिए इस दिन उनका आभार प्रकट किया जाता है। मवेशियों को स्नान कराया जाता है, उनके सींगों को रंगा-संवारा जाता है और फूलों से सजाया जाता है। बुरी नजर से बचाने के लिए उनकी आरती की जाती है। इस दिन जल्लीकट्टू जैसे पारंपरिक पशु खेलों का भी आयोजन होता है।

कानुम पोंगल

चौथा और अंतिम दिन कानुम पोंगल उत्सव के समापन का प्रतीक है। यह आनंद और मेल-मिलाप का दिन होता है। इस दिन चावल को हल्दी के पत्तों पर रखकर पक्षियों के लिए अर्पित किया जाता है। घर की महिलाएं परिवार की समृद्धि और भाइयों की कुशलता के लिए सामूहिक प्रार्थना करती हैं। हल्दी जल से आरती कर उसे पूरे घर में छिड़का जाता है। कानुम पोंगल को नए रिश्ते तय करने, विवाह प्रस्तावों और नए सामाजिक बंधनों के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है। इस प्रकार पोंगल केवल फसल का उत्सव नहीं, बल्कि प्रकृति, परंपरा और सामूहिक जीवन-मूल्यों का उत्सव है, जो आज भी तमिल संस्कृति की जीवंत पहचान बना हुआ है।

आर्ट गैलरी

अतियथार्थ का स्वप्नलोक

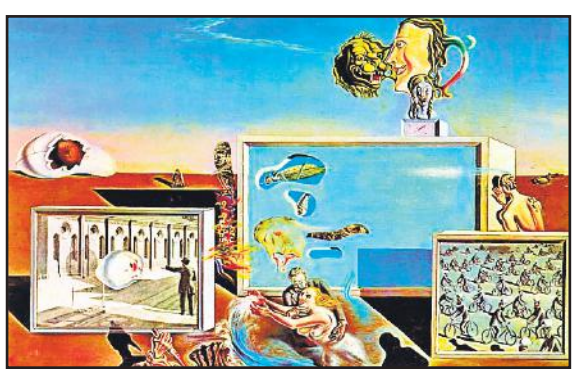

1929 में निर्मित साल्वाडोर डाली की प्रसिद्ध कृति "प्रकाशित सुख" अतियथार्थवादी कला की एक महत्वपूर्ण आधारशिला मानी जाती है। यह चित्र केवल दृश्य सौंदर्य तक सीमित नहीं रहता, बल्कि दर्शक को अवचेतन मन की रहस्यमय और जटिल परतों में प्रवेश करने के लिए प्रेरित करता है। स्पेन के कैटालोनिया क्षेत्र में उभरते कला-आंदोलनों के प्रभाव में बनी यह रचना आंद्रे ब्रेटन और मैक्स अर्न्स्ट जैसे अतियथार्थवादी विचारकों की मुक्त और प्रयोगधर्मी चेतना को प्रतिबिंबित करती है। चित्र में एक काल्पनिक परिदृश्य उभरता है, जहां अनेक पुरुष आकृतियां असंबद्ध और तर्क से परे क्रियाओं में लीन दिखाई देती हैं। लहरदार, रेगिस्तानी भू-भाग के बीच स्थित एक केंद्रीय आकृति पूरे दृश्य पर प्रभुत्व स्थापित करती है, जबकि आसपास फैली अन्य आकृतियां किसी स्वप्न की भांति अलग-अलग भावनाओं और स्थितियों को व्यक्त करती हैं।

सल्वाडोर डाली के बारे में- 1904 में स्पेन के फिगेरेस में जन्मे सल्वाडोर डाली का जीवन उतना ही असाधारण था, जितनी उनकी कला। बचपन से ही उनकी प्रतिभा स्पष्ट थी, किंतु पारिवारिक अनुभवों और निजी आघातों ने उनके भीतर द्वैत और रहस्य की भावना को गहराई दी। सैन फर्नांडो अकादमी में औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के बावजूद उन्होंने पारंपरिक सीमाओं को अस्वीकार किया और अपनी स्वतंत्र शैली विकसित की। पुनर्जागरण की तकनीकी परिपक्वता और स्वप्निल कल्पना के अद्वितीय मेल ने डाली को अतियथार्थवाद का सबसे प्रभावशाली चित्रकार बना दिया।

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	83,627.69	25,732.30
गिरावट	250.48	57.95
प्रतिशत में	0.30	0.22

सोना 1,45,000 प्रति 10 ग्राम

चांदी 2,71,000 प्रति किलो

अमृत विचार

बरेली, बुधवार, 14 जनवरी 2026

www.amritvichar.com

कारोबार

बरेली मंडी

वनस्पति तेल तिलहन : तुलसी 2565, राज श्री 1860, फ़ॉर्चून कि. 2330, रविन्द्रा 2450, फॉर्चुन 13 किग्रा 2050, जय जवान 2050, सचिन 2045, सूरज 2065, अवसर 1885, उजाला 1975, गृहणी 13 किग्रा 1910, क्लासिक (किग्रा) 2235, मोर 2260, चक्र टिन 2330, ब्लू 2140, आशीर्वाद मस्टर्ड 2325, स्वास्तिक 2520

किराना : हल्दी निजामाबाद 17000, जीरा 24500, लाल मिर्च 14000-18000, धनिया 9400-12000, अजवाइन 13500-20000, मेथी 6000-8000 सौंफ 9000-13000, सोंठ 31000, (प्रति कि.) लौंग 800-1000, बादाम 780-1080, काजू 2 पीस 840, किसमिस पीली 300-400, मखाना 800-1100

चावल प्रति कु. : डबल चाबी सेला 9700, स्पाइस 6500, शरबती कच्ची 5250, शर्बती स्टीम 5350, मंसूरी 4000, महबूब सेला 4050, गौरी रॉयल 8200, राजभोग 6850, हरी पत्ती (1 किग्रा, 5 किग्रा) 10100, हरी पत्ती नेचुरल 9100, गौरी स्पेशल 8400, गौरी प्रीमियम 9800, सूमो 4000, गौरी रॉयल 8600, मंसूरी पनघट 4050, लाडली 4000

दाल दलहन : मूंग दाल इंदौर 9700, मूंग धोवा 10000, राजमा चित्रा 11200-12500, राजमा भूटान नया 10100, मलका काली, 7250-7450 मलका दाल, 7350-9200, मलका छांटी 7250, दाल उड़द बिलासपुर 7800-8500, मसूर दाल छोटी 10000-11600, दाल उड़द दिल्ली 10300, उड़द साबुत दिल्ली 9900, उड़द धोवा इंदौर 11800, उड़द धोवा 9800-10400, चना काला 7150, दाल चना 7250, दाल चना मोटी 7100, मलका विदेशी 7200, रूपकिशोर बेसन 7700, चना अकोला 6600, डबरा 6700-8400, सच्चा हीरा 8500, मोटा हीरा 9800, अरहर गोला मोटा 7700, अरहर पटका मोटा 8000, अरहर कोरा मोटा 8500, अरहर पटका छोटा 10000-10600, अरहर कोरी छोटी 11000

चीनी : पीलीभीत 4260, बहेड़ी 4200

न्यूज ब्रीफ

चावल : शरबती- 3200, मसूरी- 800, बासमती- 5000, परमल- 1200

दाल दलहन : काला चना- 2100, साबुत चना दाल- 1200, मूंग साबुत- 4400, राजमा- 8000-11200, दाल उड़द- 5000, साबुत मसूर दाल- 2900, मसूर दाल- 2200, उड़द साबुत- 3700, काबुली चना- 7500, अरहर दाल- 10000, लोबिया/करमानी- 1200

ट्रंप की नई धमकी से भारतीय निर्यातक चिंतित

ईरान के साथ व्यापार करने वाले देशों पर अमेरिकी राष्ट्रपति ने की है 25% शुल्क लगाने की घोषणा

नई दिल्ली, एजेंसी

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ईरान के साथ व्यापार करने वाले देशों पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क लगाने की घोषणा के बाद निर्यातक सतर्क हो गए हैं। उनका कहना है कि अतिरिक्त शुल्क के प्रभाव का आकलन ट्रंप प्रशासन की ओर से अधिसूचना जारी होने के बाद ही किया जा सकेगा। भारतीय निर्यातक पहले से 50 प्रतिशत अमेरिकी शुल्क का सामना कर रहे हैं।

ट्रंप ने घोषणा की है कि ईरान के साथ व्यापार करने वाले किसी भी देश को अमेरिका के साथ अपने व्यापार पर 25 प्रतिशत शुल्क का भुगतान करना होगा। यह एक ऐसा कदम है जो भारत, चीन और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) जैसे ईरान के प्रमुख व्यापारिक भागीदारों को प्रभावित कर सकता है। निर्यातकों के संगठन 'फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गनाइजेशंस' (फियो) ने मंगलवार को कहा कि घरेलू कंपनियां ईरान के साथ व्यापार से संबंधित सभी प्रतिबंधों का अनुपालन कर रही हैं। हालांकि ट्रंप की ईरान के साथ व्यापार करने वाले देशों को 25 प्रतिशत शुल्क लगाने की घोषणा पर स्पष्ट जानकारी मिलने पर ही इस चेतावनी के प्रभाव का आकलन संभव हो पाएगा। ट्रंप की घोषणा से भारत-ईरान व्यापार संबंधों पर असर पड़ सकता है।

फियो के महानिदेशक अजय सहाय ने कहा, भारतीय कंपनियां और बैंक, ईरान पर लगाए गए ओएफएसी (विदेशी संपत्ति नियंत्रण कार्यालय) प्रतिबंधों का पूरी तरह और स्पष्ट रूप से पालन कर रहे हैं। हम केवल खाद्य पदार्थों और दवा क्षेत्र में ही काम कर रहे हैं जिन पर रोक नहीं है, इसलिए भारत पर किसी भी प्रतिकूल प्रभाव की आशंका का कोई आधार नहीं है। एक निर्यातक ने कहा, हम अमेरिकी राष्ट्रपति की घोषणा से चिंतित हैं। हम इस संबंध में अमेरिका से अधिसूचना की प्रतीक्षा कर रहे हैं। भारत से ईरान को होने वाले प्रमुख निर्यातों में चावल, चाय, चीनी, दवा, कृत्रिम रेशे, विद्युत मशीनरी और कृत्रिम आभूषण शामिल हैं। प्रमुख आयातों में सूखे मेवे, अकार्बनिक/कार्बनिक रसायन और कांच के बर्तन शामिल हैं।

ईरान में अशांति से भारतीय बासमती के निर्यात पर असर

नई दिल्ली। ईरान में जारी नागरिक अशांति का असर भारत के बासमती चावल के निर्यात पर पड़ना शुरू हो गया है जिससे घरेलू कीमतों में भारी गिरावट आई है। निर्यातकों को भुगतान में देरी और बढ़ती अनिश्चितता इसकी मुख्य वजह है। इंडियन राइस एक्सपोर्टर्स फेडरेशन ने निर्यातकों से ईरानी अनुबंधों पर जोखिमों का पुनर्मूल्यांकन करने और भुगतान के सुरक्षित तरीके अपनाने का आग्रह किया है। साथ ही ईरानी बाजार के लिए जरूरत से ज्यादा भंडार रखकर जोखिम न लेने की सलाह दी है। व्यापारिक आंकड़ों के अनुसार भारत ने वित्त वर्ष 2025-26 के अप्रैल-नवंबर के दौरान ईरान को 468.10 अमेरिकी डॉलर का बासमती चावल निर्यात किया जिसकी कुल मात्रा 5.99 लाख टन थी। ईरान भारत का सबसे बड़ा बासमती चावल आयातक है लेकिन अस्थिरता के कारण ऑर्डर प्रवाह, भुगतान चक्र और निर्यात पर दबाव बढ़ रहा है। इसका असर अब घरेलू मंडियों में साफ तौर पर दिखाई दे रहा है। एक सप्ताह में ही बासमती की प्रमुख किस्मों की कीमतों में भारी गिरावट आई है।

नए शिखर पर चांदी-सोना

चांदी 6,000 रुपये उछलकर 2,71,000 रुपये किलो पर

*** तीन सत्रों में 21,000 रुपये की वृद्धि**

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी के सर्राफा बाजार में मंगलवार को चांदी की कीमतें 6,000 रुपये उछलकर 2,71,000 रुपये किलोग्राम के नए रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गईं। स्टॉकिस्टों की लगातार खरीदारी के बीच सोना भी 400 रुपये बढ़कर 1,45,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के अपने उच्चतम स्तर पर जा पहुंचा।

अखिल भारतीय सर्राफा संघ ने कहा कि चांदी ने लगातार तीसरे दिन अपनी बढ़त जारी रखी और 6,000 रुपये यानी 2.3 प्रतिशत उछलकर सभी करो समेत 2,71,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर पहुंच गई। सोमवार को चांदी 15,000 रुपये यानी छह प्रतिशत की जबर्दस्त उछाल के साथ 2,65,000 रुपये प्रति किग्रा के सर्वकालिक उच्चतम स्तर पर पहुंच गई थी। यह शुक्रवार को 2,50,000 रुपये प्रति किग्रा पर बंद हुई थी। मंगलवार की बढ़त के साथ चांदी पिछले तीन कारोबारी सत्रों में कुल 21,000 रुपये यानी 8.4 प्रतिशत की बड़ी छलांग लगा चुकी है। वर्ष 2026 में अब तक चांदी ने कुल 32,000 रुपये यानी 13.4 प्रतिशत की तेज बढ़त दर्ज की है। यह 31 दिसंबर, 2025 को 2,39,000 रुपये प्रति किलोग्राम पर रही थी।

सेंसेक्स 250 अंक टूटा

मुंबई। विदेशों से मिश्रित संकेतों के बीच घरेलू शेयर बाजारों में मंगलवार को गिरावट रही और बीएसई का सेंसेक्स 250.48 अंक यानी 0.30 फीसदी टूटकर 83,627.69 पर बंद हुआ। एनएसई का निफ्टी-50 सूचकांक भी 57.95 अंक यानी 0.22 प्रतिशत गिरकर 25,732.30 अंक पर रहा। टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद, रियलिटी, फार्मा, तेल एवं गैस, ऑटो और एफएमसीजी सेक्टरों के सूचकांक लाल निशान में रहे। आईटी, बैंकिंग, मीडिया और रसायन समूहों के सूचकांक हरे निशान में बंद हुए। सेंसेक्स की कंपनियों में ट्रेंट और एलएंडटी में तीन प्रतिशत से अधिक की गिरावट रही।

सरकार ने अफगानिस्तान के साथ व्यापार निलंबित करने के दावों को खारिज किया

नई दिल्ली। सरकार ने ईरान में अशांति के कारण भारत के अफगानिस्तान के साथ व्यापारिक संबंध निलंबित करने के दावों को मंगलवार को खारिज कर दिया। पाकिस्तानी सोशल मीडिया पर ऐसी खबरें फैलाई जा रही हैं कि ईरान में अशांति के कारण भारत ने अफगानिस्तान के साथ व्यापारिक संबंध निलंबित कर दिए हैं।

- **पाकिस्तान में सोशल मीडिया पर फैलाई जा रही हैं झूठी खबरें**

भारत सरकार की ओर से कहा गया है कि ये खबरें पूरी तरह झूठी हैं। इस संबंध में पाकिस्तान के दुष्प्रचार करने वाले कुछ खाते मनगढ़ंत पत्र प्रसारित कर रहे हैं। 'पीआईबी फैक्ट चेक' ने सोशल मीडिया पर लिखा, पाकिस्तानी दुष्प्रचार खातों द्वारा एक मनगढ़ंत पत्र प्रसारित किया जा रहा है जिसमें झूठा दावा किया गया है कि ईरान में बढ़ती अशांति के कारण भारत ने अफगानिस्तान के साथ व्यापारिक संबंध अस्थायी रूप से निलंबित कर दिए हैं। वित्त वर्ष 2024-25 में अफगानिस्तान को भारत का निर्यात 31.891 करोड़ अमेरिकी डॉलर रहा जबकि आयात 68.981 करोड़ अमेरिकी डॉलर था।

रूस से तेल खरीदने में तीसरे स्थान पर खिसका भारत

नई दिल्ली, एजेंसी

- **रिलायंस ने की आयात में भारी कटौती, अब चीन पहले और तुर्किए दूसरे नंबर पर**

रिलायंस इंडस्ट्रीज और सार्वजनिक क्षेत्र की रिफाइनरियों की ओर से कच्चे तेल के आयात में भारी कटौती के बाद दिसंबर 2025 में रूस से इस ईंधन को खरीदने के मामले में भारत तीसरे स्थान पर आ गया है। यूरोपीय शोध संस्थान सेंटर फॉर रिसर्च ऑन एनर्जी एंड क्लीन एयर (सीआरईए) ने मंगलवार को इस संबंध में आंकड़े जारी किए।

सीआरईए के अनुसार भारत द्वारा रूस से कुल हाइड्रोकार्बन आयात दिसंबर में 2.3 अरब यूरो रहा, जो पिछले महीने के 3.3 अरब यूरो से कम है। रिपोर्ट में कहा गया, ''तुर्की भारत को पीछे छोड़ते हुए दूसरा सबसे बड़ा आयातक बन गया, जिसने रूस से दिसंबर में 2.6 अरब यूरो के हाइड्रोकार्बन खरीदे। चीन शीर्ष खरीदार बना रहा, जिसकी रूस के शीर्ष पांच आयातकों से होने वाली निर्यात आय में 48 प्रतिशत (छह अरब यूरो) की हिस्सेदारी रही।

सीआरईए ने कहा, भारत रूसी जीवाश्म ईंधन का तीसरा सबसे बड़ा खरीदार था, जिसने दिसंबर में कुल 2.3 अरब यूरो के रूसी हाइड्रोकार्बन का आयात किया। इसके मुताबिक, भारत की कुल खरीद में कच्चे तेल की हिस्सेदारी 78 प्रतिशत थी, जो कुल 1.8 अरब यूरो रही। इसके अलावा कोयला (42.4 करोड़ यूरो) और तेल उत्पाद (8.2 करोड़ यूरो) आयात किया गया। भारत ने नवंबर में रूसी कच्चे तेल की खरीद पर 2.6 अरब यूरो खर्च किए थे।

इंडिगो: न्यू ईयर सेल में किराए की शुरुआत 14,99 रुपये से

नई दिल्ली। निजी विमान सेवा कंपनी इंडिगो ने मंगलवार को न्यू ईयर सेल की घोषणा की जिसमें घरेलू मार्गों पर किराया 1,499 रुपये से शुरू हो रहा है।

इंडिगो ने बताया कि सेल 13 से 16 जनवरी तक जारी रहेगी। इसमें घरेलू मार्गों पर सभी कर सहित किराया 1,499 और अंतर्राष्ट्रीय मार्गों पर 4,499 रुपये से शुरू होगा। इसके साथ, चुनिंदा 6 ई एडऑन पर 70 प्रतिशत तक की छूट भी मिलेगी। इस ऑफर के तहत 20 जनवरी से 30 अप्रैल तक की यात्रा के लिए टिकट की बुकिंग की जा सकेगी। बुकिंग यात्रा से सात दिन पहले करानी होगी। इंडिगोस्ट्रेच का किराया चुनिंदा घरेलू मार्गों पर 9,999 रुपये से शुरू होगा। इंडिगो की वेबसाइट, एप, व्हाट्सएप और एआई एसिस्टेंट 6 ईस्काई से टिकट बुक कराने पर दो साल तक के बच्चों के टिकट एक रुपये में बुक होंगे।

एनपीएस में सुनिश्चित पेंशन के लिए बनाई गई विशेषज्ञ समिति

नई दिल्ली, एजेंसी

- **कई क्षेत्रों के विशेषज्ञों को रखा गया है 15 सदस्यीय समिति में**

पेंशन कोष विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) ने राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) के तहत निश्चित भुगतान के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इसके तहत निश्चित पेंशन सुनिश्चित करने के लिए रूपरेखा एवं नियम तैयार करने को लेकर एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया है।

पीएफआरडीए ने मंगलवार को एक बयान में कहा कि यह पहल पेंशन नियामक अधिनियम के अनुरूप है और इसका उद्देश्य एनपीएस अंशधारकों के लिए सेवानिवृत्ति के बाद मिलने वाली आय को सुनिश्चित और सुरक्षित बनाना है। इस समिति के गठन का उद्देश्य हर नागरिक को उम्रदराज होने के बाद आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित करना है। बयान के अनुसार, 15 सदस्यीय समिति का गठन दिवाला एवं शोधन अक्षमता बोर्ड (आईबीबीआई) के पूर्व अध्यक्ष डॉ. एमएस साहू की अध्यक्षता में किया गया है। इसमें विधि, मूल्यांकनकर्ता, वित्त, पूंजी बाजार एवं शिक्षा जगत जैसे विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ शामिल हैं। इसके अलावा, व्यापक विचार-विमर्श सुनिश्चित के लिए समिति को बाहरी विशेषज्ञों या मध्यस्थों को विशेष सदस्यों के तौर पर प्रतिक्रिया एवं परामर्श के लिए आमंत्रित करने का अधिकार दिया गया है।

समिति नियमित पेंशन भुगतान पर एक स्थाई सलाहकार समिति के रूप में गठित की गई है। इसके मुख्य कार्यों में नियमों का विकास, बाजार आधारित गारंटी, परिचालन के तौर-तरीके खोजना, जोखिम और कानूनी निगरानी, अंशधारकों की सुरक्षा आदि शामिल हैं। पेंशन नियामक पेंशन कोष नियामक एवं विकास प्राधिकरण एक सांविधिक नियामक संस्था है। इसका मकसद पेंशन कोष की स्थापना, विकास एवं नियमन के माध्यम से सेवानिवृत्ति के बाद आय सुरक्षा को बढ़ावा देना और पेंशन योजनाओं से जुड़े अंशधारकों के हितों की रक्षा करना है।

राष्ट्रीय

रेल किराए की गणना का तरीका हमारा व्यापारिक रहस्य, नहीं कर सकते आम

रेलवे ने केंद्रीय सूचना आयोग के नोटिस पर दिया जवाब, आरटीआई अपील खारिज

नई दिल्ली, एजेंसी

भारतीय रेलवे ने केंद्रीय सूचना आयोग (सीआईसी) को अपनी किराए की गणना की पद्धति की जानकारी देने से यह कहकर इन्कार कर दिया कि यह पद्धति उसका व्यापारिक रहस्य है जो व्यावसायिक गोपनीयता के दायरे में आती है, इसलिए इसे सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम के तहत सार्वजनिक नहीं किया जा सकता। सीआईसी की ओर से इस संबंध में दायर एक आरटीआई अपील खारिज किए जाने के दौरान रेलवे की ओर से दिया गया यह तर्क सामने आया है।

आरटीआई आवेदन के जरिए ट्रेन टिकटों और विशिष्ट सेवा पश्चिम सुपरफास्ट एक्सप्रेस के लिए मांग आधारित किराया निर्धारण और तत्काल बुकिंग के प्रभाव सहित आधार किराया (बेस फेयर) गणना प्रणाली पर विस्तृत जानकारी मांगी गई थी। जवाब में, रेलवे बोर्ड ने कहा कि किराया श्रेणी-आधारित है और विभिन्न श्रेणियों में प्रदान की जाने वाली सुविधाओं के कारण इसमें अंतर आता है। उसने इसके साथ यह भी तर्क दिया कि विभिन्न श्रेणियों के किराया निर्धारण के वर्गीकरण और पद्धति के संबंध में उसकी नीति व्यापार रहस्य/बौद्धिक संपदा अधिकारों के दायरे में आता है और आरटीआई अधिनियम की धारा 8 के तहत इसे सार्वजनिक किए जाने से छूट प्राप्त है।

सूचना का अधिकार अधिनियम की धारा 8 में उन सूचनाओं के लिए छूट का प्रावधान है जिन्हें सार्वजनिक करना अनिवार्य नहीं है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा, व्यापार रहस्य और व्यक्तिगत गोपनीयता जैसी संवेदनशील जानकारी की रक्षा करती हैं। रेलवे अधिकारियों ने किराया निर्धारण पद्धति की गोपनीयता को बरकरार रखने संबंधी सीआईसी के पूर्व के आदेशों का भी हवाला दिया। साथ ही, यह तर्क दिया कि भारतीय रेलवे एक वाणिज्यिक उपयोगिता के रूप में कार्य करता है तथा राष्ट्रीय हित में सामाजिक दायित्वों का निर्वहन भी करता है। रेलवे बोर्ड के मुख्य जन सूचना अधिकारी (सीपीआईओ) ने कहा कि विस्तृत मूल्य निर्धारण प्रणाली का खुलासा जनहित में उचित नहीं है।

कहा- टिकट मूल्य निर्धारण खुलासा जनहित में भी नहीं

मुख्य जन सूचना अधिकारी ने यह भी कहा, मूल्य निर्धारण संबंधी जानकारी का खुलासा जनहित में उचित नहीं है, क्योंकि यदि कोई लाभ होता भी है, तो वह आम आदमी को वितरित/हस्तांतरित कर दिया जाता है, न कि निजी उद्यम की तरह व्यक्तिगत लाभ के लिए रखा जाता है। आयोग ने उल्लेख किया कि जन सूचना अधिकारी ने पहले ही सभी सार्वजनिक करने योग्य जानकारी और रेलवे रेटिंग नीतियों के सामान्य सिद्धांत मुहैया कर दिए थे और उपलब्ध अभिलेखों से परे डेटा तैयार करने या उसकी व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है।

सावरकर के चित्रों को हटाने की याचिका पर सुनवाई से इन्कार

नई दिल्ली, एजेंसी

- **सुप्रीम कोर्ट ने याचिका को बताया तुच्छ याचिकाकर्ता को लगाई फटकार**

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को संसद और अन्य सार्वजनिक स्थानों से विनायक दामोदर सावरकर के चित्रों को हटाने के अनुरोध वाली जनहित याचिका पर सुनवाई करने से इन्कार कर दिया और याचिकाकर्ता को याचिका वापस लेने की अनुमति देने से पहले भारी जुर्माना लगाने की चेतावनी दी।

सीजेआई सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति विपुल एम पंचोली की पीठ ने याचिकाकर्ता सेवानिवृत्त भारतीय राजस्व सेवा अधिकारी बी बालमुरुगन को ऐसी तुच्छ याचिका दायर करने पर चेतावनी दी। सीजेआई ने कहा, इस तरह की याचिका मानसिकता दर्शाती है। पीठ याचिकाकर्ता के इस निवेदन से नाराज थी कि वह वित्तीय बाधाओं के कारण व्यक्तिगत रूप से बहस करने नहीं आ सकता। बालमुरुगन ने याचिका में संसद के केंद्रीय कक्ष और अन्य सार्वजनिक स्थानों से सावरकर के चित्रों को हटाने का निर्देश देने का अनुरोध किया था। यह भी कहा था कि सरकार हत्या या राष्ट्रविरोधी गतिविधियों जैसे जघन्य अपराधों के आरोपियों को तब तक सम्मानित न करे जब तक कि वे बरी न हो जाएं।

अब्बास अंसारी की पूर्ण जमानत याचिका को मंजूरी

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गैंगस्टर तथा यूएपीए के तहत दर्ज मामले में उत्तर प्रदेश के पूर्व विधायक अब्बास अंसारी की पूर्ण जमानत याचिका को मंगलवार को मंजूरी दे दी। सीजेआई सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति एम पांचोली की पीठ ने अंसारी की याचिका पर सुनवाई के दौरान यह आदेश दिया। पीठ ने कहा कि अंसारी अंतरिम जमानत पर लंबे वक्त से बाहर हैं और अब तक उन पर इस आजादी का दुरुपयोग करने का कोई आरोप नहीं लगा है। ऐसे में मामले पर कोई भी टिप्पणी किए बिना अंतरिम जमानत को पूर्ण किया जाता है। वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल और निजाम पाशा ने अब्बास अंसारी की ओर से पैरवी की।

लड़की की शादी से पहले माता-पिता को उसकी सहमति लेनी चाहिए

भुवनेश्वर। उड़ीसा हाईकोर्ट ने कहा है कि यदि कोई लड़की शादी के लिए तैयार नहीं है तो बाहरी दबाव या जबरदस्ती के जरिए उसकी शादी कराना स्वस्थ समाज के अनुकूल नहीं है। मुख्य न्यायाधीश हरीश टंडन और न्यायमूर्ति मुराहारी श्री रमन की पीठ ने कहा, अब समय आ गया है कि समाज आत्ममंथन करे कि लड़कियों को उनके माता-पिता जबरन शादी के लिए मजबूर करते हैं तो क्या होता है। लड़की का निर्णय सर्वोपरि है और माता-पिता को कोई भी फैसला लेने से पहले उसकी सहमति लेनी चाहिए।

- **उड़ीसा हाईकोर्ट की पति से अलग हुई महिला की याचिका पर टिप्पणी**

हाईकोर्ट ने यह टिप्पणी एक विवाहित महिला की उस याचिका का निपटारा करते हुए की, जिसमें उसने जबरन कराई गई शादी के बाद अलग रहने की अनुमति मांगी थी। अदालत ने स्पष्ट किया कि किसी भी स्थिति में माता-पिता को ऐसा निर्णय लेने से पहले बालिग लड़की की सहमति अवश्य लेनी चाहिए। महिला ने कहा कि वह न तो अपने पति के साथ रहना चाहती है और न ही अपने माता-पिता के साथ, क्योंकि वह रोजगार में है और स्वयं अपनी आजीविका अर्जित करती है।

एसएसबी ने शुरू की शराब के आदी अपने जवानों की बर्खास्तगी

नई दिल्ली। नेपाल और भूटान के साथ लगती बिना बाड़ वाली सीमाओं की रक्षा में जुटे सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) ने अपने शराब के आदी जवानों के खिलाफ सेवा समाप्ति की कार्रवाई शुरू की है। अधिकारियों के मुताबिक अब तक ऐसे 50 से ज्यादा जवानों की पहचान की गई है जिनमें से 8-10 कर्मियों को चिकित्सा और कानूनी कार्यवाही पूरी करने के बाद नौकरी से निकाल दिया गया है। बाकी के खिलाफ भी इसी तरह की कार्रवाई जारी है। अधिकारियों के मुताबिक उन कर्मचारियों के खिलाफ यह कार्रवाई की जा रही है जिनकी पहचान कई वर्षों से शराब की लगातार लत वाले कर्मियों के रूप में की गई है। उन्हें शराब पर निर्भरता के लक्षणों (एडीएस) वाले मामलों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। अधिकारियों का कहना है कि ऐसे जवान अपनी खुद की सुरक्षा के साथ अपने सहयोगियों और यहां तक कि आम जनता की सुरक्षा के लिए भी खतरा बन जाते हैं। शराब न मिलने पर ऐसे जवान चरम कदम उठा सकते हैं।

जज कम होने के बाद भी हिमाचल हाईकोर्ट 90 प्रतिशत मामले निपटाए

शिमला। हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट ने स्वीकृत संख्या से पांच न्यायाधीश कम होने के बावजूद 2025 में लगभग 90 प्रतिशत मामलों का निपटारा किया है। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, एक जनवरी 2025 तक उच्च न्यायालय में 93,942 मामले लंबित थे। वर्ष के दौरान 81,092 नए मामले दर्ज किए गए जबकि 72,981 मामलों का निपटारा किया गया। इस तरह वर्ष के अंत तक लंबित मामलों की संख्या बढ़कर 1,02,053 हो गई लेकिन निपटारे की दर उल्लेखनीय रूप से 89.99 प्रतिशत रही। हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश सहित स्वीकृत 17 न्यायाधीशों की संख्या के मुकाबले न्यायालय में 12 न्यायाधीश कार्यरत हैं। लंबे समय से लंबित मामलों को निपटाने के उद्देश्य से हाईकोर्ट ने 2026 में 12 शनिवारों को कार्य दिवस घोषित किया है, जिनमें सबसे पुराने मामलों की ही सुनवाई होगी।

लोकतांत्रिक ढांचे पर हमला कर रहे सरकार चलाने वाले : राहुल

उदगमंडलम। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को आरोप लगाया कि देश के लोकतांत्रिक ढांचे और जनता की आवाज पर केंद्र सरकार चलाने वालों की ओर से हमला किया जा रहा है। गुडलूर में एक स्कूल के कार्यक्रम में भाग लेने पहुंचे राहुल गांधी ने छात्रों के साथ बातचीत में कहा कि निर्वाचन आयोग जैसी संस्थाएं हमलों की चपेट में हैं।

उन्होंने कहा, वे उन लोगों को धमका रहे हैं जो उनकी विचारधारा से सहमत नहीं हैं। उन्होंने कहा, ऐसे परिदृश्य में, हमें आपके जैसे आत्मविश्वासी और सवाल पूछने से न डरने वाले युवाओं की जरूरत है। राहुल ने कहा, भारत एक लोकतांत्रिक देश है और हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था पर हमला हो रहा है। लोकतंत्र का मतलब ही है कि सभी लोगों को अपनी बात कहने का अधिकार हो।

जना नायकन फिल्म पर रोक मोदी का तमिल संस्कृति पर हमला

राहुल गांधी ने आरोप लगाया है कि तमिल फिल्म 'जना नायकन' पर प्रतिबंध लगाकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तमिल संस्कृति पर हमला किया है। राहुल गांधी ने एक्स पर लिखा, मोदी जी, आप तमिल लोगों की आवाज दबाने में कभी सफल नहीं होंगे। गौरतलब है कि दक्षिण भारत के सुपरस्टार तलपती के करियर की आखिरी फिल्म 'जना नायकन' 9 जनवरी को रिलीज होनी थी लेकिन अब मामला कोर्ट पहुंच गया है।

पश्चिमी दिल्ली में जिम के बाहर बिश्नोई गैंग ने चलाई गोलियां

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी के पश्चिम विहार में एक जिम के बाहर गोलीबारी की घटना के बाद लॉरेंस बिश्नोई गैंग की ओर से हमले की जिम्मेदारी लेने का दावा किया गया है।

पुलिस सूत्रों के मुताबिक सोमवार रात को बाहरी दिल्ली के एक जिम के बाहर कुछ अज्ञात मोटरसाइकिल सवार बदमाशों ने गोलीबारी की थी। इसके बाद सोशल मीडिया पर एक संदेश में लॉरेंस बिश्नोई गैंग ने इस हमले की जिम्मेदारी ली। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि पोस्ट की सच्चाई की जांच की जा रही है, जबकि गोलीबारी के संबंध में मामला दर्ज कर लिया गया है। पुलिस ने बताया कि दोनों हमलावर आउटर रिंग रोड पर आर के फिटनेस के पास से गुजरे, जिसमें से एक ने बाहर दो गोलियां चलाईं। किसी को चोट नहीं लगी। घटना के बाद रणदीप मलिक नाम के एक फेसबुक अकाउंट पर एक मैसेज सामने आया, जिसमें हमले की जिम्मेदारी लेने का दावा किया गया। कहा गया कि गोलीबारी रणदीप और अनिल पंडित ने करवाई थी, जो अमेरिका में रहता है।

हमें चुनावी उद्देश्यों से नागरिकता की जांच करने का अधिकार... सुप्रीम कोर्ट में निर्वाचन आयोग की दलील

नई दिल्ली। निर्वाचन आयोग ने मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट को बताया कि वह मतदाता सूची और चुनाव संचालन से संबंधित मामलों में मूल प्राधिकारी के रूप में कार्य करता है और यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य देश की नागरिकता हासिल करता है तो इस संबंध में आयोग की राय राष्ट्रपति पर बाध्यकारी होती है। आयोग ने कहा कि एसआईआर के दौरान यदि कोई प्रतिकूल निष्कर्ष निकलता है तो उसका परिणाम संबंधित व्यक्ति का नाम मतदाता सूची से हटाया जाना होगा और वह निर्वासन का कारण नहीं बनता। ऐसे मामले को नागरिकता अधिनियम और संबंधित कानूनों के तहत जांच के लिए केंद्र को भेजा जा सकता है।

- **संवैधानिक अधिकारों से परे काम करने के आरोपों को नकारा**

आयोग ने कहा कि खनन पट्टों या अन्य वैधानिक लाभों से जुड़े कई नियामक ढांचों में नागरिकता एक अनिवार्य शर्त होती है और सक्षम प्राधिकारी इसकी जांच कर सकता है। इस दलील के जरिए आयोग ने उस तर्क का खंडन किया कि वह अपने संवैधानिक अधिकार क्षेत्र से आगे बढ़कर काम कर रहा है। सीजेआई सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची की पीठ के समक्ष वरिष्ठ अधिवक्ता राकेश द्विवेदी ने निर्वाचन आयोग की ओर से ये दलीलें पेश कीं। पीठ ने उन याचिकाओं पर अंतिम सुनवाई फिर से शुरू की, जिनमें बिहार सहित कई राज्यों में एसआईआर प्रक्रिया करने के निर्वाचन आयोग के फैसले को चुनौती दी गई थी और निर्वाचन आयोग की शक्तियों के दायरे, नागरिकता और मतदान के अधिकार पर महत्वपूर्ण संवैधानिक प्रश्न उठाए गए थे। द्विवेदी ने एसआईआर प्रक्रिया का बचाव करते हुए कहा कि यह पूरी तरह से चुनाव आयोग के संवैधानिक और वैधानिक अधिकार क्षेत्र के भीतर है।

वर्ल्ड ब्रीफ

पाकिस्तान में चार लोगों की गोली मारकर हत्या

पेशावर। पाकिस्तान के अशांत खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में एक स्थानीय शांति समिति के चार सदस्यों की अज्ञात हमलावरों ने मंगलवार को गोली मारकर हत्या कर दी। यह घटना प्रांत के उत्तरी वजीरिस्तान से सटे बन्नू जिले में हुई। अज्ञात बंदूकधारियों ने जिले के मजांग चौक के पास घात लगाकर हमला किया। घटना के बाद पुलिस और सुरक्षा बल मौके पर पहुंचे और हमलावरों की तलाश में तलाशी अभियान शुरू किया। खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान प्रांत में हाल के दिनों में आतंकवादी हमलों में तेजी आई है। सोमवार को पुलिस वाहन को निशाना बनाकर किए गए विस्फोट में एक वरिष्ठ अधिकारी समेत छह पुलिसकर्मी मारे गए थे।

न्यूयॉर्क में नर्सों की हड़ताल

न्यूयॉर्क। न्यूयॉर्क शहर के कई बड़े अस्पतालों में नए अनुबंध पर बातचीत असफल हो जाने से लगभग 15,000 नर्स हड़ताल पर चली गई हैं। कोलंबिया ब्रॉडकास्टिंग सिस्टम न्यूज (सीबीएस) ने यह जानकारी दी। हड़ताल सोमवार को सुबह पांच निजी अस्पतालों में शुरू हुई, जिसमें माउंट सिनाई, माउंट सिनाई मॉर्निंगसाइड, माउंट सिनाई वेस्ट और मैनहट्टन में न्यूयॉर्क-प्रेस्बिटेरियन सुविधाएं शामिल हैं। मरीजों के परिवारों ने कहा कि नियमित नर्सिंग कर्मचारियों की गैरमौजूदगी से देखभाल की निरंतरता और गुणवत्ता को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं। ग्रेटर न्यूयॉर्क हॉस्पिटल एसोसिएशन ने कहा कि अस्पतालों ने हड़ताल के दौरान कामकाज चलाने के लिए अस्थायी तौर पर नर्सों को सेवा के लिए लिया है। कर्मचारियों के सेवा-समय में बदलाव किया गया है। मरीजों की छुट्टी की प्रक्रिया तेज की है।

कजाखिस्तान में सड़क हादसे में भारतीय छात्रा की मौत

अस्ताना। कजाखिस्तान में हुए एक सड़क हादसे में एक भारतीय छात्रा की मौत हो गई और दो अन्य घायल हो गए। यह दुर्घटना उस समय हुई जब मेडिकल छात्रों का एक समूह सड़क मार्ग से यात्रा कर रहा था। भारतीय दूतावास ने मंगलवार को यह जानकारी दी। यह हादसा ओस्केमेन में उस समय हुआ, जब सेमे मेडिकल विश्वविद्यालय के 11 भारतीय छात्र घूम फिर कर वापस लौट रहे थे। भारतीय दूतावास ने बताया कि इस हादसे में भारतीय छात्रा 25 वर्षीय मिली मोहन की मौत हो गई, जबकि अशिका शीजामिनी संतोष और जसीना बी घायल हो गईं। दूतावास ने बताया कि घायल छात्राओं का उपचार किया जा रहा है और उनकी हालत स्थिर है। परिजनों को सूचना दे दी गई है।

अमेरिका ने एक साल में एक लाख से अधिक वीजा किए रद्द

वॉशिंगटन। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के लगभग एक साल पहले पदभार संभालने के बाद से अब तक एक लाख से अधिक वीजा रद्द किए जा चुके हैं। अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि रद्द किए गए वीज़ा में लगभग 8,000 छात्रों के वीज़ा और 2,500 स्पेशल वीज़ा उन लोगों के शामिल हैं जिनका आपराधिक गतिविधि में लिप्त होने पर अमेरिकी कानून प्रवर्तन एजेंसियों से सामना हुआ था। ज्यादातर वीजा उनके रद्द हुए हैं, जिन्होंने गैरकानूनी तरीके से अवधि से ज्यादा समय देश में बिताया था। बता दें कि पिछले साल जून में अमेरिका ने अपने राजनयिक मिशनों को छात्र वीज़ा के लिए आवेदन करने वाले सभी विदेशियों के सोशल मीडिया और ऑनलाइन मौजूदगी की जांच करने का निर्देश दिया था। अमेरिकी विदेश विभाग ने कहा था कि वह 5 .5 करोड़ से अधिक अमेरिकी वीज़ा धारकों के रिकॉर्ड की समीक्षा कर रहा है।

सियाचिन की दहलीज पर अब ड्रैगन की 'नापाक' चाल

शक्सगाम घाटी पर चीन के दावे के बीच 1963 के उस अवैध समझौते का जिन्न एक बार फिर बाहर आ गया है, जिसके तहत पाकिस्तान ने भारतीय क्षेत्र की 5,180 वर्ग किलोमीटर जमीन (शक्सगाम घाटी) चीन को उपहार में दे दी थी। ताजा सैटेलाइट तस्वीरों में इस विवादित क्षेत्र में चीन की बढ़ती सक्रियता और पक्की सड़कों के जाल ने भारत को कड़ा रुख अपनाने पर मजबूर कर दिया है। विदेश मंत्रालय पहले ही साफ कर चुका है कि अपनी संप्रभुता से समझौता भारत को कतई स्वीकार नहीं है। अब सेना प्रमुख उपेंद्र द्विवेदी ने भी स्पष्ट कर दिया है कि शक्सगाम घाटी में किसी भी तरह की गतिविधि को हम स्वीकार नहीं करते हैं और वहां चीन या पकिस्तान की किसी भी गतिविधि को गैरकानूनी मानेंगे।

शक्सगाम घाटी पर चीन के दावे से तनाव।

क्या है विवाद

- शक्सगाम घाटी का विवाद भारत, चीन और पाकिस्तान के बीच एक जटिल क्षेत्रीय मुद्दा है। वर्तमान में यह विवाद इसलिए गहरा गया है क्योंकि चीन ने इस क्षेत्र में अपनी बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को उचित ठहराते हुए भारत के विरोध को खारिज कर दिया है।

क्षेत्रीय स्थिति और इतिहास

- शक्सगाम घाटी (जिसे ट्रांस-काराकोरम ट्रैक्ट भी कहा जाता है) मूल रूप से जम्मू-कश्मीर रियासत का हिस्सा थी और 1947 में विलय के बाद कानूनी रूप से भारत का अभिन्न अंग बनी थी। लेकिन 1947-48 के युद्ध के दौरान पाकिस्तान ने इस क्षेत्र (पाक अधिकृत कश्मीर) पर अवैध कब्जा कर लिया था।

1963 का अवैध समझौता

- 2 मार्च 1963 को पाकिस्तान ने एक सीमा समझौते के तहत शक्सगाम घाटी का लगभग 5,180 वर्ग किलोमीटर हिस्सा अवैध रूप से चीन को सौंप दिया था। हालांकि भारत ने इस समझौते को कभी मान्यता नहीं दी और हमेशा इसे अवैध तथा अमान्य करार दिया है।

ताजा विवाद

- सैटेलाइट तस्वीरों से पता चला है कि चीन इस इलाके में 75 किलोमीटर लंबी और 10 मीटर चौड़ी 'ऑल-वेदर' सड़क और अन्य सैन्य ढांचा तैयार कर रहा है। जानकारी के अनुसार चीन की निर्माणाधीन सड़क दुनिया के सबसे ऊंचे युद्ध क्षेत्र सियाचिन ग्लेशियर के करीब है। भारत ने बीती 9 जनवरी को इस पर कड़ी आपत्ति दर्ज कराई थी, जिसे चीन ने 12 जनवरी को यह कहते हुए ठुकरा दिया था कि वह अपने क्षेत्र में निर्माण कर रहा है।

सामरिक महत्व

- यह घाटी सामरिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सियाचिन ग्लेशियर के उत्तर में स्थित है। यहां चीन द्वारा सड़क निर्माण से भारतीय सेना के लिए रणनीतिक चुनौती पैदा हो सकती है, क्योंकि यह चीन के शिनजियांग प्रांत को सीधे पाक अधिकृत कश्मीर से जोड़ती है।

भारत का रुख

- भारत सरकार और विदेश मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि संपूर्ण जम्मू-कश्मीर और लद्दाख भारत का अटूट हिस्सा हैं और भारत अपने हितों की रक्षा के लिए आवश्यक कदम उठाने का अधिकार सुरक्षित रखता है।

क्षेत्र: 5,180 वर्ग किलोमीटर (ट्रांस-काराकोरम ट्रैक्ट)।

विवाद : पाकिस्तान ने 1963 में इसे चीन को दिया, जिसे भारत अवैध मानता है।

ताजा घटना : दो दिन पहले चीन ने भारत के विरोध को खारिज करते हुए निर्माण जारी रखने की बात कही है।

ब्रिटेन में नग्न डीपफेक बनाने के खिलाफ लागू होगा कानून

लंदन। ब्रिटेन सरकार किसी उपभोक्ता की सहमति के बिना ऑनलाइन अश्लील इमेज बनाने वालों पर आपराधिक मुकदमा चलाने की तैयारी कर रही है। ब्रिटिश मीडिया नियामक ऑफ़कॉम ने एक्स एआई और एलन मस्क के चैटबॉट ग्रॉक की जांच शुरू की है। इनका इस्तेमाल एआई का उपयोग करके महिलाओं की सहमति के बिना उनकी अश्लील तस्वीरें बनाने के लिए किया गया था।

ब्रिटेन की विज्ञान, नवाचार और तकनीकी राज्य मंत्री लिज़ केंडल ने संसद में कहा कि किसी की सहमति के बिना उसकी अश्लील तस्वीरें बनाना, साझा करना या साझा करने की धमकी देना व्यक्तियों और प्लेटफॉर्म दोनों के लिए एक आपराधिक कृत्य है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने ईरानी अधिकारियों के साथ बैठक की रद्द

प्रदर्शनकारियों से कहा-मदद भेजी जा रही, अब तक दो हजार लोगों की हो चुकी मौत

वाशिंगटन, एजेंसी

अमेरिका राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मंगलवार को कहा कि उन्होंने विरोध प्रदर्शनों पर कार्रवाई के बीच ईरानी अधिकारियों के साथ होने वाली वार्ता रद्द कर दी है। साथ ही उन्होंने ईरान के नागरिकों से कहा, "मदद भेजी जा रही है।"

राष्ट्रपति ट्रंप ने मंगलवार को हालांकि यह विवरण नहीं दिया कि मदद का स्वरूप क्या है। ट्रंप ने यह स्पष्ट नहीं किया कि यह मदद किस रूप में होगी, लेकिन यह बयान ऐसे समय आया है जब रिपब्लिकन राष्ट्रपति ने इस सप्ताह की शुरुआत में कहा था कि वाशिंगटन की ओर से इस्लामी गणराज्य पर हमले की धमकी के बाद ईरान बातचीत करना चाहता है।

मानवाधिकार निगरानी संस्थाओं के अनुसार, ईरान में विरोध प्रदर्शनों में अब तक 2,000 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। ट्रंप हालांकि अपने हालिया सोशल मीडिया संदेश के माध्यम से ईरानी सरकार के साथ बातचीत करने की अपनी तैयारियों को लेकर अचानक रुख बदलते हुए नजर आए। ट्रंप ने 'ट्रुथ सोशल' पर सुबह किए गए एक पोस्ट में लिखा, "ईरानी देशभक्तों, प्रदर्शन जारी रखो — अपनी संस्थाओं पर कब्जा करो!!!" उन्होंने कहा, "हत्यारों और अत्याचारियों के नाम दर्ज कर लो। उन्हें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। जब तक प्रदर्शनकारियों की निरर्थक हत्याएं बंद नहीं होतीं, मैंने ईरानी अधिकारियों के साथ सभी बैठकें रद्द कर दी हैं। मदद भेजी जा रही है।" राष्ट्रपति ने बार-बार तेहरान को सैन्य कार्रवाई की धमकी दी है यदि उनके प्रशासन को पता चलता है कि इस्लामी गणराज्य सरकार विरोधी प्रदर्शनकारियों के खिलाफ घातक बल का प्रयोग कर रहा है।

अमेरिका ने अपने नागरिकों से तत्काल ईरान छोड़ने को कहा

वॉशिंगटन। ईरान में अमेरिका के ऑनलाइन दूतावास ने अपने नागरिकों से ईरान से तुरंत बाहर निकलने का आग्रह किया है। दूतावास ने अमेरिकी नागरिकों को आर्मेनिया और तुर्की के रास्ते सड़क मार्ग से ईरान छोड़ने को कहा है। बयान में यह भी कहा गया कि अमेरिकी-ईरानी दोहरी राष्ट्रीयता वाले नागरिकों को ईरानी पासपोर्ट का उपयोग करके ईरान छोड़ना होगा, क्योंकि ईरानी सरकार दोहरी नागरिकता को मान्यता नहीं देती। चेतावनी दी गई कि, अमेरिकी नागरिक ईरान में पूछताछ, गिरफ्तार और हिरासत में लिए जाने के गंभीर जोखिम में हैं। इस बीच व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलाइन लीविट ने कहा कि कूटनीति अमेरिका के ईरान नीति में प्राथमिक दृष्टिकोण बनी हुई है, हालांकि ट्रम्प प्रशासन ने जरूरत पड़ने पर सैन्य विकल्पों को खारिज नहीं किया है। लीविट ने कहा, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का अगला कदम क्या होगा, केवल वही जानते हैं। इसलिए दुनिया को इंतजार और अनुमान लगाना होगा और हम उन्हें निर्णय लेने देंगे।

... तो भारत को चुकाना पड़ सकता है 75 प्रतिशत टैरिफ

ट्रंप की ईरान के साथ व्यापार करने वाले देश पर 25 प्रतिशत टैरिफ की घोषणा का असर भारत पर भी पड़ सकता है। भारत हाल के वर्षों में ईरान के पांच सबसे बड़े व्यापारिक साझेदारों में से एक रहा है। अमेरिका ने पहले ही भारत पर 50 प्रतिशत शुल्क लगा रखा है। तेहरान स्थित भारतीय दूतावास के अनुसार, ईरान को भारत के प्रमुख निर्यातों में चावल, चाय, चीनी, दवाइयां, कृत्रिम फाइबर, विद्युत मशीनरी और कृत्रिम आभूषण शामिल हैं, जबकि ईरान से भारत के प्रमुख आयातों में सूखे मेवे, अकार्बनिक/कार्बनिक रसायन और कांच के बर्तन शामिल हैं। 2023 में भारत से ईरान को निर्यात 1.19 तो 2024-25 में 1.24 अरब डॉलर था। इसके मुकाबले ईरान से 0.44 डॉलर का आयात हुआ था। ऐसे में भारत अगर ईरान के साथ व्यापार जारी रखता है, तो उसे अमेरिका के साथ व्यापार करने में 75 फीसदी टैरिफ चुकाना पड़ सकता है।

सुप्रीम कोर्ट ने टैरिफ रद्द किया तो गड़बड़ होगी

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि अगर सुप्रीम कोर्ट यह फैसला सुनाता है कि उनके पास व्यापक शुल्क लगाने की एकतरफा शक्ति नहीं है, तो बहुत बड़ी गड़बड़ हो जाएगी, और हमारे देश के लिए उन पैसों को चुकाना लगभग असंभव हो जाएगा, जो अमेरिका ने व्यापक टैरिफ से एकत्र किए हैं। उन्होंने सोमवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि अगर अदालत उनके द्वारा लगाए गए टैरिफ को रद्द कर देती है, तो हम बुरी तरह फंस जाएंगे। ट्रंप ने अदालत के आसन्न फैसले के बारे में सोशल मीडिया पर लगातार पोस्ट किए हैं। उन्होंने अपने पोस्ट में यह भी जिक्र किया कि सरकार के लिए पैसा वापस करना कितना मुश्किल हो सकता है। उन्होंने शुल्क का पैसा वापस करने के बारे में कहा, यह संभव नहीं हो सकता।ट्रंप ने कहा कि लेकिन, अगर ऐसा हुआ, तो यह इतनी बड़ी रकम होगी कि यह पता लगाने में कई साल लग जाएंगे कि हम किस संख्या की बात कर रहे हैं और यहां तक कि किसे, कब और कहां भुगतान करना है।

ब्रिटेन से वापस बुला लेंगे राजनयिक

तेहरान। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा है कि अगर ब्रिटेन ईरान के कर्मचारियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने में विफल रहता है तो ईरान को लंदन में अपने दूतावास के कर्मचारियों को निकालने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। राघची ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय कानूनी दायित्वों के तहत, ब्रिटेन ईरान के लंदन दूतावास की सुरक्षा करने के लिए बाध्य है।

यूक्रेन की आपातकालीन सेवा द्वारा उपलब्ध कराई गई इस तस्वीर में मंगलवार को यूक्रेन के खार्किव में रूसी हमले के बाद लगी आग को बुझाते सेवा कर्मी।

रूस का यूक्रेन के विद्युत ग्रिड पर बड़ा हमला, चार की मौत

कीव। रूस ने यूक्रेन पर बड़ा ड्रोन और मिसाइल हमला करके उसके विद्युत ग्रिड को एक बार फिर निशाना बनाया। युद्ध के चार साल पूरे होने वाले हैं और ऐसा लगता है कि अमेरिका के नेतृत्व वाले शांति प्रयासों को रूस नजरअंदाज कर रहा है। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने सोशल मीडिया पर बताया कि रूस ने रात भर में आठ क्षेत्रों पर लगभग 300 ड्रोन, 18 बैलिस्टिक मिसाइलों और सात क्रूज मिसाइलों से हमला किया। पूर्वोत्तर खार्किव क्षेत्र में हमले में एक डाक डिपो में चार लोगों की मौत हो गई और कीव क्षेत्र में कई लाख घरों में बिजली गुल हो गई। राजधानी में दिन का तापमान शून्य से 12 डिग्री सेल्सियस नीचे था। सड़कें बर्फ से ढकी थीं और शहर जनरेटरों के शोर से गूंज रहा था। चार दिन पहले रूस ने रात भर चले एक बड़े हमले में सैकड़ों ड्रोन और दर्जनों मिसाइलों से हमला किया था। रूस ने युद्ध में दूसरी बार एक शक्तिशाली नई हाइपरसोनिक मिसाइल का इस्तेमाल किया, जिसने पश्चिमी यूक्रेन को निशाना बनाया। स्थानीय अधिकारियों ने बताया कि यूक्रेन के खार्किव क्षेत्र में रूसी हमले में 10 लोग घायल हुए हैं। क्षेत्रीय सैन्य प्रशासन के प्रमुख ओलेह किपर ने बताया कि ओडेसा शहर में हुए रूसी हमले में छह लोग घायल हो गए। हमले में ऊर्जा अवसंरचना, एक अस्पताल, एक शैक्षणिक संस्थान और कई आवासीय इमारतें क्षतिग्रस्त हो गईं। इस बीच, रूस के रक्षा मंत्रालय ने मंगलवार को बताया कि रूसी वायुसेना ने रातभर में 11 यूक्रेनी ड्रोन मार गिराए।

अलेप्पो में सरकारी बलों और कुर्द लड़ाकों के बीच संघर्ष के बाद विस्थापित निवासियों को ले जा रही बसें अशरफीह इलाके में एक खंडहर इमारत के पास से गुजरती हुईं।

सीरिया, कुर्दिश मिलिशिया का अलेप्पो में युद्ध विराम

अल्लेपो। कुर्द सशस्त्र सीरियाई लोकतांत्रिक बल (एसडीएफ) के लड़ाके पिछले हफ़्ते शहर के उत्तर-पश्चिम में अशरफीह और शेख मकसूद इलाकों में सरकार समर्थक सेनाओं के साथ कई दिनों तक चली लड़ाई के बाद हुए युद्धविराम के बाद अलेप्पो खाली करने पर राजी हो गए हैं। इन झड़पों में कम से कम 24 लोग मारे गए और 129 घायल हुए हैं। 140,000 से अधिक लोग बेघर हो गए हैं। जॉर्डन ने लोगों के लिए मदद से भरे 51 ट्रकों का काफिला भेजकर इस खराब मानवीय स्थिति पर प्रतिक्रिया दी है।

इजराइल के फिल्म निर्माता ने निर्भया कांड पर बनाई फिल्म

यरूशलम। इजराइली फिल्म निर्माता डैन वोलमैन ने कहा है कि उनकी नयी फिल्म 'मर्डर्स टू क्लोज, लव टू फार' का विचार उन्हें 2012 में भारत यात्रा के दौरान आया था, जब दिल्ली में एक फिजियोथेरेपी इंटर्न (निर्भया) के साथ हुए सामूहिक बलात्कार व उसकी हत्या के विरोध में व्यापक प्रदर्शन हो रहे थे। ''फ्लोच'', ''माई माइकल'', ''ऐन इजराइली लव स्टोरी'' और ''वैली ऑफ स्ट्रेंथ'' जैसी फिल्मों के लिए मशहूर वोलमैन ने भारतीय फिल्म निर्माता मंजू बोरा के साथ मिलकर इस 'मर्डर मिस्ट्री' का सह-निर्देशन किया है। यह पहली फिल्म है जिसका सह-निर्माण भारत और इजराइली फिल्मकारों ने किया है। इसे 24वें पुणे अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (पीआईएफएफ) में प्रदर्शित किया जाएगा। वोलमैन ने बताया कि फिल्म की शूटिंग भारत में हुई है और इसमें ''यौन उत्पीड़न, हिंसा, भ्रष्टाचार, समूह के व्यवहार, गिरोह और भीड़ की मानसिकता'' जैसे विषयों को उठाया गया है। उन्होंने कहा, ये मुद्दे इजराइल में भी उतने ही आम हैं जितने दुनिया के अन्य हिस्सों में।

पीआईएफएफ में, ''मर्डर्स टू क्लोज, लव टू फार'' को 17 और 19 जनवरी को ग्लोबल सिनेमा श्रेणी के हिस्से के रूप में प्रदर्शित किया जाएगा।

फ्रांस में किसानों ने 350 ट्रैक्टरों के साथ संसद तक मार्च किया

पेरिस। फ्रांस में किसानों ने अपनी कम आय और दक्षिण अमेरिका के साथ यूरोपीय संघ (ईयू) के व्यापार समझौते के विरोध में मंगलवार को 350 ट्रैक्टर के साथ संसद तक मार्च किया। पुलिस सुरक्षा के बीच, ट्रैक्टरों ने व्यस्त समय के दौरान चैंप्स-एलिसी और पेरिस की अन्य सड़कों पर यातायातअवरूद्ध कर दिया फिर वे सीन नदी को पार करके नेशनल असेंबली तक पहुंचे। किसान संघों ने कहा कि वे फ्रांस की खाद्य सुरक्षा की रक्षा के लिए ठोस और तत्काल कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। फ्रांस सरकार की प्रवक्ता मौड ब्रेगॉन ने टीएफ1 टेलीविजन पर कहा कि सरकार किसानों की मदद के लिए जल्द ही नयी घोषणाएं करेगी। राष्ट्रपति एमैनुएल मैक्रों और उनकी सरकार यूरोपीय संघ-मर्कोसुर व्यापार समझौते के विरोध में हैं, लेकिन उम्मीद है कि शनिवार को पैराग्वे में इस पर हस्ताक्षर हो जाएंगे, क्योंकि इसे ज्यादातर अन्य ईयू देशों का समर्थन प्राप्त है। यूरोपीय देशों के किसान मर्कोसुर देशों - ब्राजील, अर्जेंटीना, बोलीविया, पैराग्वे और उरुग्वे के साथ व्यापार समझौते का लंबे समय से विरोध कर रहे हैं।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 14 जनवरी, बुधवार 2026 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- माघ, पक्ष-कृष्ण पक्ष, एकादशी 17 .52 तक तत्पश्चात द्वादशी।

आज का पंचांग

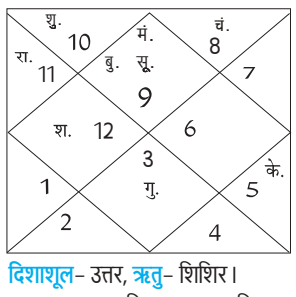

दिशाशूल- उत्तर, **ऋतु**- शिशिर।
चन्द्रबल- वृषभ, मिथुन, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुंभ।
ताराबल- अश्विनी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती।
नक्षत्र- अनुराधा 15 जनवरी 03 .03 तक तत्पश्चात ज्येष्ठा।

मेष — आज व्यावसायिक दृष्टिकोण से दिन बहुत सामान्य रहने वाला है। आपका मन कुछ अशांत हो सकता है। आप जिनसे प्रेम और सम्मान की अपेक्षा रखते हैं, वो आपको भाव नहीं देंगे। आप अपने काम पर ही ध्यान दें। दूसरों के मामलों में पड़ने से बचें।

वृष — आज सहयोगियों के ऊपर अधिक निर्भर न हों। विरोधी आपके विरुद्ध षड्यंत्र रच सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को वेतन की चिंता हो सकती है। रेस्टोरेन्ट्स से जुड़े व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त होगा। आपकी वाणी और व्यवहार से मित्रजन अत्यंत प्रसन्न रहेंगे।

मिथुन — आज आर्थिक समस्याओं को लेकर थोड़े परेशान रहेंगे। बच्चों के भविष्य की चिंता हो सकती है। विद्यार्थी पढ़ाई को लेकर अधिक गंभीर नहीं रहेंगे। धार्मिक क्रियाकलापों से जुड़ने का प्रयास करेंगे। इससे आपकी कार्यक्षमता में वृद्धि होगी।

कर्क — आज व्यर्थ की बहसबाजी से स्वयं को दूर रखें। व्यवसाय में नया प्रयोग करने से बचें। आपको अपनी जिम्मेदारियों पर विशेष ध्यान देना होगा। इस समय आपको काम के साथ आराम की भी आवश्यकता है। शरीर में कुछ थकावट महसूस होगी।

सिंह — आज संपत्ति विवाद हल हो सकते हैं। राजनीति से जुड़े लोगों को विरोधियों से सावधान रहना चाहिए। अपनी कार्यशैली में सुधार लाने का प्रयास करें। किसी महत्वपूर्ण निर्णय को लेकर मन में कुछ कन्फ्यूजन रहने की संभावना है।

कन्या — आज अपनी तीव्रबुद्धि का कुशल प्रयोग करेंगे। नौकरीपेशा जातकों का कार्यक्षेत्र में सम्मान बढ़ेगा। किसी दूर के रिश्तेदार से मिलना हो सकता है। दांपत्य जीवन में चल रही अनबन खत्म होने की संभावना है। आपके मन में उच्च पद और प्रतिष्ठा की इच्छा प्रबल होगी।

तुला — आज के दिन आपको कुछ त्याग करना पड़ेगा। अपने विषय में गलत धारणा बनाने से बचें। व्यर्थ के खर्चों के कारण आपका बजट बिगड़ सकता है। ऐसे सभी लोगों से दूरी बनाकर रखें, जो आपका मनोबल गिराते हों।

वृश्चिक — आज प्रेम विवाह को लेकर घर में चर्चा करना चाहते हैं, तो दिन शुभ है। विदेश यात्रा में आ रही बाधा दूर होगी। अव्यावहारिक विचारों के कारण उपहास हो सकता है। उच्च अधिकारी आपको कोई जिम्मेदारी भरा काम सौंप सकते हैं।

धनु — आज कार्यक्षेत्र में आपकी उपेक्षा हो सकती है। पारिवारिक वातावरण तनावपूर्ण हो सकता है। इसीलिए सोच-विचारकर ही आपको लोगों के सामने प्रतिक्रिया देनी चाहिए। मित्रों से अपने मन की बातें शेयर कर सकते हैं।

मकर — आज आपके कारोबार में अच्छी प्रगति होगी। आधारभूत समस्याओं का समाधान ढूंढने का प्रयास करेंगे। इसका सकारात्मक परिणाम आपको अवश्य मिलेगा। आप जिन कार्यों को प्राथमिकता क्रम में रखेंगे, उन्हें अवश्य ही पूर्ण कर लेंगे।

कुंभ — आज व्यापार में नई साझेदारी को लेकर कुछ निर्णय कर सकते हैं। सरकारी योजनाओं का लाभ मिल सकता है। किसी महत्वपूर्ण कार्य के पूर्ण होने से आनंदित महसूस करेंगे। पुरानी गलतियों से सीखने का अवसर न चूकें।

मीन — आज भविष्य को लेकर योजना बनाने के लिए दिन अनुकूल है। सरकारी कार्यों में रुकावटें आ सकती हैं। महिलाओं को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। कोई समस्या हो, तो उसे अपने बड़ों से साझा करें। संतान के विवाह की चिंता रहेगी।

सुडोकू -31

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

5		4		7		1		9
	2					7		4
		9		8	3	6		
	8		9			5		6
6		3			4		7	
		7	5	6		9		
9		8					2	
3		1		4		8		7

सुडोकू - 30 का हल

5	1	3	9	4	2	6	7	8
9	8	7	5	1	6	2	4	3
6	4	2	3	8	7	9	5	1
7	3	6	4	5	9	1	8	2
4	2	8	6	3	1	7	9	5
1	9	5	7	2	8	3	6	4
3	5	9	1	7	4	8	2	6
8	6	4	2	9	3	5	1	7
2	7	1	8	6	5	4	3	9

अपने सपनों को साकार करने और उन्हें पूरा करने का मौका पाकर मैं खुद को सबसे भाग्यशाली व्यक्ति मानता हूं। लेकिन अब अलविदा कहने का समय आ गया है। मैं टेनिस से संन्यास ले रहा हूं।
–मिलोस राओनिच

स्टेडियम

बरेली, बुधवार ,14 जनवरी 2026

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

सीए कटप्पा फिर मुक्केबाजी टीम के मुख्य कोच बने

नई दिल्ली। द्रोणाचार्य पुरस्कार प्राप्त सी ए कटप्पा की तीसरी बार भारतीय पुरूष मुक्केबाजी टीम के कोच के तौर पर वापसी हो रही है। भारतीय मुक्केबाजी महासंघ ने मंगलवार को इसकी पुष्टि की। वह भारतीय खेल प्राधिकरण रोहतक के कोच धरमेंद्र यादव की जगह लेंगे जिनकी पिछले साल नियुक्ति हुई थी । यादव पुरूष कोचिंग ढांचे का हिस्सा बने रहेंगे । बीएफआई के कार्यकारी निदेशक कर्नल अरूण मलिक ने पीटीआई से कहा सीए कटप्पा को कोच बनाया गया है और धर्मेंद्र यादव कोचिंग स्टाफ का हिस्सा रहेंगे। पिछले कुछ समय से भारतीय पुरूष मुक्केबाजों के खराब प्रदर्शन के कारण यह फैसला लिया गया है।

विंटर स्विमिंग चैंपियनशिप 17 से

नई दिल्ली। दो दिवसीय स्टेयर्स विंटर स्विमिंग चैंपियनशिप का आयोजन 17 से 18 जनवरी तक स्पोर्ट्स स्कूल सिविल लाइन लुडलो कैटल नई दिल्ली पर किया जाएगा। स्विमिंग फेडरेशन ऑफ़ इंडिया के उपाध्यक्ष व मेंटर राजकुमार के अनुसार चैंपियनशिप में ग्रुप एक से लेकर ग्रुप पांच तक के लड़के लड़कियां स्विमर भाग लेंगे। चैंपियनशिप में फ्री स्टाइल, बैक स्ट्रोक, ब्रेस्ट स्ट्रोक, बटरफ्लाई , आई एम मेडले तथा फ्री स्टाइल रिले स्पर्धाओं का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि नेशनल स्पोर्ट्स प्रमोशन ऑर्गेनाइजेशन का मुख्य उद्देश्य ग्रास रूट के स्विमर्स को बेहतरीन सुविधा और आगे बढ़ाना है। चैंपियनशिप स्विमिंग फेडरेशन ऑफ़ इंडिया के नियमों के तहत आयोजित की जाएगी।

वीनस विलियम्स होबार्ट में पहले दौर में बाहर

होबार्ट (ऑस्ट्रेलिया)। वर्ष के पहले ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट ऑस्ट्रेलियाई ओपन को शुरू होने में अब जबकि एक सप्ताह से भी कम समय बचा है तब 45 वर्षीय वीनस विलियम्स फॉर्म हासिल करने के लिए जूझ रही है। वीनस मंगलवार को यहा होबार्ट इंटरनेशनल टेनिस टूर्नामेंट के पहले दौर में तात्याना मारिया से 6-4, 6-3 से हार गईं। वीनस को साल के पहले ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट के लिए वाइल्डकार्ड से प्रवेश दिया गया है। उन्हें होबार्ट में खेलने के लिए भी वाइल्डकार्ड मिला था, जहां वह लगभग डेढ़ घंटे तक चले मैच में छठी वरीयता प्राप्त मारिया से हार गईं।

बंगाल टाइगर्स ने तमिलनाडु को हराया

रांची। जुगराज सिंह की हैट्रिक के दम पर श्राची बंगाल टाइगर्स ने पुरुष हॉकी इंडिया लीग में मंगलवार को एकॉर्ड तमिलनाडु ड्रैगंस को 5-3 से हराया। इस मैच से पहले तालिका में सातवें स्थान पर काबिज टाइगर्स के लिये यह अहम जीत थी पर अब जीत के बाद टीम चौथे स्थान पर पहुंच गई है। जुगराज एचआईएल जीसी के केन रसेल के बाद इस सत्र में हैट्रिक लगाने वाले दूसरे खिलाड़ी बन गए। उनके अलावा सुखजीत (33वां) और अभिषेक (55वां मिनट) ने भी गोल दागे। ड्रैगंस के लिए अद्रोहित इक्का (36वां), थॉमस सोर्सबी (48वां) और ब्लेक गोवर्स (51वां) ने गोल किए।

न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरे ही मैच में सीरीज को जीतना चाहेगी भारतीय टीम

विराट कोहली का शानदार फॉर्म चिंता का विषय है मेहमानों के लिए

राजकोट, एजेंसी

विराट कोहली की शानदार फॉर्म ने भारत की कुछ प्रमुख खिलाड़ियों की चोटों को लेकर बढ़ती चिंताओं को कुछ हद तक कम कर दिया है और वह न्यूजीलैंड के खिलाफ बुधवार को यहां होने वाले दूसरे एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में जीत हासिल करके तीन मैच की शृंखला में अजेय बढ़त हासिल करने की कोशिश करेगा। भारत ने वडोदरा में खेले गए पहले मैच में न्यूजीलैंड को चार विकेट से हराया था। वाशिंगटन सुंदर उस मैच में चोटिल हो गए थे और वह वनडे शृंखला से बाहर हो गए हैं।

चयनकर्ताओं ने दिल्ली के आयुष बडोनी को टीम में शामिल किया है, लेकिन भारत के मुख्य कोच गौतम गंभीर की ऑलराउंडर को प्राथमिकता देने की रणनीति को देखते हुए नीतीश कुमार रेड्डी के रूप में एक और ऑलराउंडर को अंतिम एकादश में शामिल किया जा सकता है। ऋषभ पंत पहले वनडे से पूर्व चोटिल होने के कारण शृंखला से बाहर हो गए थे। चयनकर्ताओं ने उनकी जगह ध्रुव जुरेल को टीम में शामिल करने का फैसला किया, जो टीम प्रबंधन के लिए विशेषज्ञ बल्लेबाज के रूप में एक और विकल्प हो सकते हैं। भारतीय टीम के पास कई विकल्प हैं लेकिन अगले महीने से शुरू होने वाले टीम टी20 विश्व कप को ध्यान में रखते हुए वह किसी तरह का जोखिम नहीं लेना चाहेगी। टी20 टीम में वनडे टीम से बिल्कुल अलग बल्लेबाजी क्रम होगा। लेकिन कुछ नाम दोनों टीमों में समान हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण नाम ऑलराउंडर तिलक वर्मा का है जो ग्रोइन की चोट के कारण न्यूजीलैंड के खिलाफ कम से कम पहले तीन टी20 मैचों में नहीं खेल पाएंगे। भारतीय टीम की इन चिंताओं के बीच सभी की निगाह कोहली और रोहित शर्मा पर टिकी रहेगी।

पहले मैच में कोहली वनडे में अपने 54वें शतक से चूक गए, लेकिन उनकी 91 गेंदों पर खेली गई 93 रन की पारी ने भारत की जीत की नींव रखी। भारत और न्यूजीलैंड की टीमों में काफी अंतर नजर आता है। कीवी टीम का गेंदबाजी आक्रमण मजबूत नहीं है और भारतीय बल्लेबाज इसका पूरा फायदा उठाने की कोशिश करेंगे। पहले मैच में कप्तान शुभमन गिल ने सधी हुई अर्धशतकीय पारी खेली जबकि उप कप्तान श्रेयस अय्यर एक रन से अर्धशतक बनाने से चूक गए। रोहित शर्मा फिर से भारत को अच्छी शुरुआत दिलाने की कोशिश करेंगे। कोहली इस समय अलग ही तरह की क्रिकेट खेल रहे हैं और वह आत्मविश्वास से भरे हुए नजर आते हैं। ऐसा लगता है कि वह अपेक्षाओं और आलोचनाओं के बोझ से पूरी तरह मुक्त हैं। कोहली ने शुरुआत से ही न तो आक्रामक बल्लेबाजी करने से परहेज की है और न ही रन बनाने का कोई मौका छोड़ा है। यही कारण है कि उन्होंने वडोदरा में सभी प्रारूपों में सबसे कम पारियों में 28,000 रनों का रिकॉर्ड बनाया।

अभ्यास सत्र के दौरान न्यूज़ीलैंड के निक केली (दाएं) और माइकल रे। एजेंसी

टीम

भारत : शुभमन गिल (कप्तान), यशस्वी जयसवाल, विराट कोहली, रोहित शर्मा, केएल राहुल (विकेटकीपर), ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), रवींद्र जड़ेजा, नितीश कुमार रेड्डी, आयुष बडोनी, कुलदीप यादव, अर्शदीप सिंह, प्रसिद्ध कृष्णा, मोहम्मद सिराज, हर्षित राणा।

न्यूजीलैंड : माइकल ब्रैसवेल (कप्तान), डेवोन कॉनवे (विकेटकीपर), मिशेल हे, निक केली, हेनरी निकोल्स, विल यंग, जोश क्लार्कसन, जैक फाउल्स, डैरिल मिशेल, ग्लेन फिलिप्स, आदित्य अशोक, क्रिस्टियन क्लार्क, काइल जैमीसन, जेडन लेनोक्स, माइकल रे।

अर्धशतकीय पारी के दौरान शॉट लगाते विदर्भ के बल्लेबाज यश राठौड़। एजेंसी

दिल्ली को हराकर विदर्भ सेमीफाइनल में

बेंगलुरु, एजेंसी

विजय हजारे ट्रॉफी

पिछले सत्र के उपविजेता विदर्भ ने अनुशासित और ऑलराउंड खेल का शानदार प्रदर्शन करते हुए दिल्ली को 76 रन से हराकर मंगलवार को यहां विजय हजारे एकदिवसीय क्रिकेट टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। विदर्भ सेमीफाइनल में कर्नाटक का सामना करेगा। पिछले सत्र में इन दोनों टीमों के बीच फाइनल खेला गया था।

सौराष्ट्र शुक्रवार को होने वाले एक अन्य सेमीफाइनल में पंजाब का सामना करेगा। विदर्भ ने पहले बल्लेबाजी करते हुए नौ विकेट पर 300 रन का चुनौती पूर्ण स्कोर बनाया। उसकी तरफ से यश राठौड़ ने 86 और सलामी बल्लेबाज अथर्व तायडे ने 62 रन का योगदान दिया। इसके जवाब में दिल्ली की टीम 45.1 ओवर में 224 रन पर आउट हो गई। उसे कप्तान ऋषभ पंत और उप कप्तान आयुष बडोनी की कमी खली। पंत चोटिल है जबकि बडोनी को न्यूजीलैंड के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज के लिए राष्ट्रीय टीम में शामिल किया गया है।

एमपी को मात देकर पंजाब अंतिम चार में

बेंगलुरु। अपने बल्लेबाजों के शानदार प्रदर्शन के दम पर पंजाब ने मध्यप्रदेश को 183 रन से हराकर मंगलवार को विजय हजारे ट्रॉफी के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया। पहले बल्लेबाजी के लिये भेजे जाने पर पंजाब ने कप्तान प्रभसिमरन सिंह के 86 गेंद में 88 रन, अनमोलप्रीत सिंह के 62 गेंद में 70, नेहाल वढेरा के 38 गेंद में 56 और हरनूर सिंह के 71 गेंद में 51 रन की मदद से छह विकेट पर 345 रन बनाए। रमनदीप सिंह ने 15 गेंद में 24 रन बनाए। मध्यप्रदेश के लिये त्रिपुरेश सिंह और कप्तान वेंकटेश अय्यर ने दो दो विकेट लिए। जवाब में मध्यप्रदेश की टीम 31.2 ओवर में 162 रन पर आउट हो गई। पहले गेंदबाजी का अय्यर का फैसला सफल नहीं रहा और पंजाब को शानदार शुरूआत देते हुए प्रभसिमरन और हरनूर ने पहले विकेट के लिये 21 ओवर में 166 रन जोड़े।

बीसीबी ने स्वीकार किया आईसीसी नहीं मान रही मांग

ढाका, एजेंसी

- टी20 विश्व कप में भारत ना आने के रुख पर बांग्लादेश अडिग

आईसीसी ने मंगलवार को बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड से टी20 विश्व कप के उसके मैच भारत से बाहर कराने की मांग पर पुनर्विचार का अनुरोध किया लेकिन बीसीसीबी ने सुरक्षा चिंताओं को दोहराते हुए ऐसा करने से इनकार किया है।

एक बयान में बीसीबी ने कहा कि बोर्ड का फैसला वही है हालांकि आईसीसी ने उसका अनुरोध मानने से इनकार कर दिया है। इसने कहा कि दोनों पक्ष संभावित हल तलाशना जारी रखेंगे। बीसीबी ने आईसीसी से अनुरोध किया था कि सुरक्षा कारणों से विश्व कप के उसके मैच भारत के बाहर कराये जायें लेकिन चूंकि सात फरवरी से शुरू हो रहे टी20 विश्व कप का कार्यक्रम तय हो चुका है , लिहाजा आईसीसी ने इस पर स्वीकृति नहीं दी है। बीसीबी ने कहा आईसीसी ने कहा है कि टूर्नामेंट का कार्यक्रम घोषित हो चुका है और बीसीबी से फैसले पर पुनर्विचार के लिये कहा है लेकिन बोर्ड का फैसला नहीं बदलेगा। दोनों पक्ष इसका हल तलाशना जारी रखने पर सहमत हो गए हैं। बयान में कहा गया बीसीबी अपने खिलाड़ियों, अधिकारियों और स्टाफ के हितों की रक्षा के लिये प्रतिबद्ध है और आईसीसी से इस मसले पर बातचीत भी जारी रखेगी। बीसीबी का कहना है कि उसके खिलाड़ियों का भारत जाना सुरक्षित नहीं है लेकिन आईसीसी की जोखिम आकलन रिपोर्ट में टीम को किसी तरह के खतरे की ओर इंगित नहीं किया गया है। आईसीसी के साथ बृहस्पतिवार को प्रेस कांफ्रेंस में बीसीबी की ओर से अध्यक्ष अमीनुल इस्लाम, सीईओ निजामुद्दीन चौधरी ने भाग लिया ।

मुंबई ने गुजरात को सात विकेट से हराया

शॉट लगातीं मुंबई इंडियंस की कप्तान हरमनप्रीत कौर। एजेंसी

नवी मुंबई, एजेंसी

महिला प्रीमियर लीग

- कप्तान हरमनप्रीत कौर ने खेली 71 रनों की नाबाद पारी

भारत की विश्व कप विजेता कप्तान हरमनप्रीत कौर के नाबाद 71 रन की मदद से मुंबई इंडियंस ने महिला प्रीमियर लीग के मैच में मंगलवार को गुजरात जाएंट्स को सात विकेट से हराया। यह गुजरात जाएंट्स की टूर्नामेंट में पहली हार थी।

इससे पहले निचले क्रम पर भारती फुलमाली और जॉर्जिया वेयरहैम की आक्रामक पारियों के दम पर गुजरात जाएंट्स ने पांच विकेट पर 192 रन बनाये थे। जीत के लिए कठिन लक्ष्य का पीछा करते हुए हरमनप्रीत ने 33 गेंद में अर्धशतक पूरा किया जो टूर्नामेंट में उनका दसवां अर्धशतक था। इसके साथ ही उन्होंने डब्ल्यूपीएल में एक हजार रन भी पूरे कर लिए। वह 43 गेंद में सात चौकों और दो छक्कों की मदद से 71 रन बनाकर नाबाद रही और मुंबई ने चार गेंद बाकी रहते जीत दर्ज की। मुंबई के दो विकेट पावरप्ले के भीतर ही 37 रन पर गिर गए थे। इसके बाद हरमनप्रीत ने अमनजोत कौर (26 गेंद में 40 रन) के साथ 44 गेंद में 72 रन की साझेदारी की। अमनजोत के आउट होने के बाद निकोला कैरी ने कप्तान का साथ निभाते हुए 22 गेंद में नाबाद 37 रन बनाये जिसमें छह चौके शामिल थे। दोनों ने 43 गेंद में 84 रन की अटूट साझेदारी करके टीम को जीत दिलाई। इससे पहले गुजरात की पारी में वेयरहैम 33 गेंद में चार चौकों और एक छक्के की मदद से 43 रन बनाकर नाबाद रही।

वहीं फुलमाली ने 15 गेंद में नाबाद 36 रन बनाए जिसमें तीन छक्के और तीन चौके शामिल थे। आयुषी सोनी के रिटायर्ड आउट होने के बाद वह बल्लेबाजी क्रम में ऊपर आई थीं। फुलमाली ने अमनजोत कौर को आखिरी ओवर में दो छक्के और एक चौका लगाकर 23 रन निकाले। गुजरात ने आखिरी तीन ओवरों में 49 रन बनाए। पहले ओवर में गुजरात की सलामी बल्लेबाज बेथ मूनी को जीवनदान मिला जब मुंबई की 17 वर्ष की विकेटकीपर गुनालन कमलिनी ने उनका कैच टपकाया। मूनी ने इसका पूरा इस्तेमाल करके हीली मैथ्यूज को दो चौके लगाकर दूसरे ओवर में 18 रन निकाले। सोफी डेवाइन (आठ) के सस्ते में आउट होने के बाद मूनी और कनिका आहूजा ने पावरप्ले में कमान संभाली । आहूजा ने 18 गेंद में चार चौकों और दो छक्कों की मदद से 35 रन बनाए । वहीं मूनी ने 26 गेंद में 33 रन का योगदान दिया। वह सातवें ओवर में एमेलिया केर को रिटर्न कैच देकर लौटी। इसके बाद आहूजा ने कप्तान एशले गार्डनर के साथ गुजरात को नौ ओवर में दो विकेट पर 96 रन तक पहुंचाया। मुंबई की गेंदबाज कैरी ने गार्डनर को और मैथ्यूज ने आहूजा को आउट कर दबाव बनाया।

प्रिया-श्रुति कड़े मुकाबले में हारीं

इंडिया ओपन

नई दिल्ली, एजेंसी

प्रिया कोंजेंगबाम (बाएं) और श्रुति मिश्रा। एजेंसी

- त्रीसा और गायत्री ने दूसरे दौर में प्रवेश किया

त्रीसा जॉली और गायत्री गोपीचंद की भारत की शीर्ष महिला युगल जोड़ी ने मंगलवार को यहां सीधे गेम में जीत के साथ इंडिया ओपन 2026 सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट के दूसरे दौर में प्रवेश किया, लेकिन प्रिया कोनजेंगबाम और श्रुति मिश्रा की जोड़ी को मैच प्वाइंट हासिल करने के बावजूद कड़े मुकाबले में हार का सामना करना पड़ा।

नवंबर में सैयद मोदी अंतरराष्ट्रीय सुपर 300 टूर्नामेंट में खिताब का सफलतापूर्वक बचाव करने वाली त्रीसा और गायत्री की जोड़ी ने ओनिंचा जोंगसथापोनपार्न और सुकिता सुवाचाई की थाईलैंड की जोड़ी को 42 मिनट में 21-15, 21-11 से हराकर बाहर का रास्ता दिखाया। प्रिया और श्रुति को हालांकि लोक लोक लुइ और ह्यु येन सेंग की हांगकांग की जोड़ी के खिलाफ एक घंटे आठ मिनट चले मुकाबले में 11-21, 22-20, 22-24 से शिकस्त झेलनी पड़ी। प्रिया और श्रुति ने चार मैच प्वाइंट बचाने के बाद एक मैच प्वाइंट भी हासिल किया लेकिन अंततः भारतीय जोड़ी को हार का सामना करना पड़ा।

त्रीसा और गायत्री ने पूरे मैच के दौरान दमदार खेल दिखाया। भारतीय जोड़ी ने नेट पर शानदार खेल दिखाने के अलावा स्मैश से भी काफी अंक जुटाए। थाईलैंड की जोड़ी ने दूसरे गेम में बेहतर शुरुआत की थी लेकिन त्रीसा और गायत्री वापसी करते हुए जीत दर्ज करने में सफल रहीं। गायत्री ने कहा कि पिछले साल के अंत में सैयद मोदी अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट का खिताब जीतकर उनका आत्मविश्वास बढ़ा है और 2026 में उनकी नजरें कुछ अच्छे नतीजे हासिल करने पर टिकी हैं। गायत्री ने कहा, ''पिछले साल चोटों ने थोड़ा परेशान किया लेकिन साल के अंत में हम सैयद मोदी अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट का खिताब जीतकर आत्मविश्वास हासिल करने में सफल रहे।

आयुष को हराकर लक्ष्य इंडिया ओपन के दूसरे दौर में

नई दिल्ली। स्टार खिलाड़ी लक्ष्य सेन ने मंगलवार को यहां हमवतन आयुष शेट्टी को सीधे गेम में हराकर योनेक्स सनराइज इंडिया ओपन 2026 सुपर 750 टूर्नामेंट के दूसरे दौर में जगह बनाई।

वर्ष 2022 के चैंपियन लक्ष्य ने आईजी स्टेडियम में खेले जा रहे इस 9,50,000 डॉलर इनामी टूर्नामेंट के पहले दौर में आयुष को सिर्फ 36 मिनट में 21-12, 21-15 से हराया। आयुष पहली बार इंडिया ओपन में खेल रहे थे। चौबीस साल के लक्ष्य अगले दौर में जापान के केंता निशिमोतो से भिड़ेंगे जिन्होंने 21-6, 7-5 के स्कोर पर अपने सातवें वरीय हमवतन प्रतिद्वंद्वी कोडाई नारोका के मुकाबले से हटने पर दूसरे दौर में प्रवेश किया। लक्ष्य ने बेहतर खेल दिखाया और परिस्थितियों से बेहतर ढंग से सामंजस्य बैठाने में सफल रहे। आयुष ने कुछ मौकों पर अच्छी टक्कर दी।

घोषणा भारत के खिलाफ घरेलू शृंखला के बाद फैसले पर करेंगी अमल

अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेंगी एलिसा हीली

सिडनी, एजेंसी

ऑस्ट्रेलिया की सर्वश्रेष्ठ महिला क्रिकेटरों में से एक एलिसा हीली मार्च में भारत के खिलाफ घरेलू शृंखला के बाद अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लेंगी।

यह 35 वर्षीय खिलाड़ी भारत के खिलाफ पर्थ में होने वाली तीन वनडे और एकमात्र महिला टेस्ट मैच की शृंखला में आखिरी बार ऑस्ट्रेलिया की कप्तानी करेंगी। हीली भारत के खिलाफ टी20 शृंखला में नहीं खेलेंगी क्योंकि वह इस साल ब्रिटेन में होने वाले टी20 विश्व कप में हिस्सा नहीं लेगी।

महिला क्रिकेट की सबसे विस्फोटक बल्लेबाजों में से एक हीली ने बयान में कहा भारत के खिलाफ आगामी सीरीज ऑस्ट्रेलिया के लिए मेरी आखिरी सीरीज होगी। ऑस्ट्रेलिया के लिए खेलने का मेरा जुनून अभी भी बरकरार है, लेकिन मेरे अंदर वह प्रतिस्पर्धात्मक भावना कुछ हद तक कम हो गई है जिसने मुझे शुरुआत से ही प्रेरित किया है, इसलिए यह संन्यास लेने का सही समय लगता है।

उन्होंने कहा यह जानते हुए कि मैं इस साल टी20 विश्व कप में नहीं खेल पाऊंगी और टीम के पास तैयारी के लिए सीमित समय है, मैं भारत के खिलाफ टी20 मैचों का हिस्सा नहीं रहूंगी। लेकिन मुझे घरेलू मैदान पर अपना करियर समाप्त करने और भारत के खिलाफ वनडे और टेस्ट टीम की कप्तानी का अवसर मिलने से बहुत खुशी है। यह हमारे लिए इस कैलेंडर वर्ष की सबसे बड़ी श्रृंखलाओं में से एक है। पिछले एक दशक में ऑस्ट्रेलिया के दबदबे में हीली ने अहम भूमिका निभाई है।

क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के सीईओ टॉड ग्रीनबर्ग ने हीली को खेल के सर्वकालिक महान खिलाड़ियों में से एक बताया। उन्होंने कहा एलिसा इस खेल की सर्वकालिक महान खिलाड़ियों में से एक हैं और उन्होंने अपने 15 साल के करियर में मैदान पर और मैदान के बाहर दोनों जगह महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हम भारत के खिलाफ श्रृंखला में उनकी उपलब्धियों का जश्न मनाने के लिए उत्सुक हैं।

उनकी मौजूदगी में ऑस्ट्रेलिया ने जीते 8 विश्व कप

एलिसा हीली की मौजूदगी में ऑस्ट्रेलिया ने आठ विश्व खिताब जीते हैं, जिनमें से छह टी20 प्रारूप में और दो एक दिवसीय क्रिकेट में हैं। इस विकेटकीपर बल्लेबाज ने ऑस्ट्रेलिया के लिए 10 टेस्ट, 123 वनडे और 162 टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैच खेले हैं। उन्होंने अब तक 30.56 के औसत से 489 टेस्ट रन, 35.98 के औसत से 3563 वनडे रन (सात शतक सहित) और 25.45 के औसत से 3054 टी20 अंतरराष्ट्रीय रन (एक शतक सहित) बनाए हैं। ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज मिशेल स्टार्क से शादी करने वाली इस क्रिकेटर ने कहा मुझे कुछ चोटों से भी जूझना पड़ा। मुझे कई बार डाइव लगानी पड़ी लेकिन अब मुझे लगता है कि हम मुश्किल होता जा रहा है।